# PREFACE

The **Qur'an** is the principal religious scripture of Islam and is regarded by Muslims as the word of God. It primarily addresses themes such as the oneness of God, moral conduct, social justice, and accountability in the hereafter. The Qur'an consists of revelations believed to have been delivered over time, often in the context of social challenges, conflicts, and historical circumstances. It also contains narratives of earlier prophets from the Abrahamic tradition, including Abraham, Moses, and Jesus. From a literary perspective, the Qur'an is well known for its eloquent, poetic, and allegorical style.

Generally, the arrangement of the Qur'anic surahs proceeds from longer chapters to shorter ones. The Qur'an is not organized in a chronological order of revelation or thematically; as a result, adjacent surahs often address entirely different subjects. Moreover, the context or occasion of revelation is not explicitly stated within the Qur'anic text itself. Merely reading a translation does not always convey the intended meaning, as each verse was revealed in response to a specific event, question, or circumstance. To understand this historical and contextual background, specialized works **of Asbab-al-Nuzool** (Reasons and occasion of revelation) and **tafsir** (Qur'anic exegesis) are essential.

# भूमिका

**क़ुरआन** इस्लाम का प्रमुख धार्मिक ग्रंथ है और मुसलमान इसे ईश्वर (अल्लाह) का वचन मानते हैं। क़ुरआन का मुख्य विषय ईश्वर की एकता, नैतिक आचरण, सामाजिक न्याय और परलोक में जवाबदेही जैसे सिद्धांतों पर केंद्रित है। इसमें वे अवतरण (वह्ी) शामिल हैं, जिनके बारे में माना जाता है कि वे विभिन्न समयों पर, सामाजिक चुनौतियों, संघर्षों और ऐतिहासिक परिस्थितियों की पृष्ठभूमि में अवतरित हुए। क़ुरआन में इब्राहीमी परंपरा के पूर्ववर्ती पैग़म्बरों की कथाएँ भी मिलती हैं, जिनमें हज़रत इब्राहीम, हज़रत मूसा और हज़रत ईसा शामिल हैं। साहित्यिक दृष्टि से क़ुरआन अपनी प्रभावशाली भाषा, काव्यात्मक शैली और रूपकात्मक अभिव्यक्ति के लिए प्रसिद्ध है।

सामान्यतः क़ुरआन की सूरहों का क्रम लंबी सूरहों से छोटी सूरहों की ओर जाता है। क़ुरआन अवतरण के कालक्रम या विषयवार क्रम में व्यवस्थित नहीं है। इसी कारण, पास-पास की सूरहें अक्सर एक-दूसरे से बिल्कुल भिन्न विषयों पर चर्चा करती हैं। इसके अलावा, क़ुरआनी पाठ के भीतर स्वयं उसके अवतरण (नाज़िल होने) का संदर्भ या कारण स्पष्ट रूप से उल्लेखित नहीं है। केवल अनुवाद पढ़ने से कई बार मूल आशय स्पष्ट नहीं हो पाता, क्योंकि प्रत्येक आयत किसी विशेष घटना, प्रश्न या परिस्थिति के उत्तर में अवतरित हुई थी। इन ऐतिहासिक और प्रसंगिक पृष्ठभूमियों को समझने के लिए **असबाब-उन-नुज़ूल** (आयतों के अवतरण के कारण और अवसर) और **तफ़्सी**र (क़ुरआनी व्याख्या) जैसे विशेष ग्रंथ अत्यंत आवश्यक माने जाते हैं।

In the modern era, more than fifty books have been published claiming the presence of numerous miracles and accurate scientific information in the Qur'an. The Qur'an makes several claims to establish its divine authenticity. For example:

**Qur'an 2:2** *"This is the Book about which there is no doubt; it is guidance for those who are mindful of God."*

In this work, we have examined the verses containing scientific facts presented by Dr. Zakir Naik in his book *The Qur'an and Modern Science: Compatible or Incompatible?* against the understanding of early Islamic scholars and sayings of Prophet Muhammad (ﷺ) (Hadiths). Islam teaches that no one knows Allah better than His servant and Messenger (ﷺ), Additionally, the Qur'anic exegesis (Tafsir) by renowned Islamic scholars such as 'Ibn Abbas' is available, for whom Prophet (ﷺ) himself prayed.

**Hadith Sahih Bukhari 3756**: Narrated Ibn Abbas: Once the Prophet (ﷺ) embraced me (pressed me to his chest) and said, "O Allah, teach him wisdom (i.e. the understanding of the knowledge of Qur'an)'. [Similar hadiths, Sahih Bukhari 143, 3756b, 7270]

आधुनिक युग में क़ुरआन में अनेक चमत्कारों और सटीक वैज्ञानिक जानकारियों की उपस्थिति का दावा करने वाली पचास से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। क़ुरआन अपनी दैवीय प्रामाणिकता स्थापित करने के लिए कई दावे भी प्रस्तुत करता है। उदाहरण के लिए:

**क़ुरआन 2:2** *"वह किताब यही हैं, जिसमें कोई सन्देह नहीं, मार्गदर्शन हैं डर रखने वालों के लिए"*

इस विश्लेषण में, डॉ. ज़ाकिर नाइक की पुस्तक "द क़ुरआन एंड मॉडर्न साइंस: कम्पैटिबल ऑर इनकम्पैटिबल?" में प्रस्तुत वैज्ञानिक तथ्यों से संबंधित आयतों की जाँच प्रारंभिक इस्लामी विद्वानों की समझ और पैग़म्बर मुहम्मद (ﷺ) के कथनों (हदीसों) से की गई है। इस्लाम यह सिखाता है कि अल्लाह को उनके बंदे और पैग़म्बर मुहम्मद (ﷺ) से बेहतर कोई और नहीं जानता। इसके अतिरिक्त, हमारे पास प्रसिद्ध इस्लामी विद्वानों जैसे 'इब्न अब्बास' की क़ुरआनी व्याख्या (तफ़सीर) भी उपलब्ध है, जिनके लिए पैग़म्बर (ﷺ) ने स्वयं दुआ की थी।

**हदीस सहीह बुख़ारी 3756:** इब्न अब्बास से वर्णित है कि एक बार पैग़म्बर मुहम्मद (ﷺ) ने मुझे गले लगाया (अपनी छाती से लगाया) और कहा: "हे अल्लाह, उसे हिकमत सिखा दे (अर्थात, क़ुरआन का ज्ञान और उसकी समझ)।" [समान हदीसें: सहीह बुख़ारी 143, 3756b, 7270]

Among the earliest and most influential Qur'anic commentators are Imam Ibn Kathir, Jalalayn and Imam al-Qurtubi. This study examines how these eminent scholars interpreted these verses that are commonly cited as evidence of miraculous content, and related verses. As the knowledge of Qur'an has always been supplemented by hadiths [sayings and deeds of prophet (ﷺ)] in all matters of Islamic faith, related authentic hadiths were also reviewed. Lastly present-day scientific knowledge was also presented at some places with the Islamic literature.

This approach is not intended to offend religious sentiments. Its sole objective is to promote intellectual inquiry and a deeper understanding of the subject. Readers are encouraged to conduct their own independent study before arriving at any final conclusions.

**— Imroz**

प्रारंभिक और प्रभावशाली क़ुरआनी व्याख्याकारों में इमाम इब्न कसीर तथा जलालैन प्रमुख माने जाते हैं। इस अध्ययन में यह देखा गया है कि इन प्रतिष्ठित विद्वानों ने उन आयतों और उनसे संबंधित अन्य आयतों की व्याख्या किस प्रकार की है, जिन्हें आमतौर पर चमत्कारिक या वैज्ञानिक प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। क़ुरआन के ज्ञान को इस्लामी आस्था के सभी विषयों में सदैव हदीसों [पैग़म्बर मुहम्मद (ﷺ) के कथन और कार्य] द्वारा पूरक किया जाता रहा है, इसलिए संबंधित प्रामाणिक हदीसों की भी समीक्षा की गई। अंत में, कुछ स्थानों पर इस्लामी साहित्य के साथ वर्तमानकालीन वैज्ञानिक ज्ञान भी प्रस्तुत किया गया है।

इस अध्ययन का उद्देश्य किसी भी धार्मिक भावना को आहत करना नहीं है। इसका एकमात्र लक्ष्य बौद्धिक जिज्ञासा को प्रोत्साहित करना और विषय की गहरी व वस्तुनिष्ठ समझ विकसित करना है। पाठकों से अनुरोध है कि वे किसी अंतिम निष्कर्ष पर पहुँचने से पहले स्वयं भी स्वतंत्र अध्ययन करें।

**— इमरोज़**

# SCHOLARS WHOSE WORKS ARE QUOTED IN THIS BOOK

The Hadith scholars occupy a central position in Islamic scholarship, as they preserved and transmitted the sayings, actions, and tacit approvals of Prophet Muhammad (ﷺ). Among the most prominent are **Imam al-Bukhari, Imam Muslim, Imam Abu Dawud, Imam al-Tirmidhi, Imam al-Nasa'i,** and **Imam Ibn Majah**.

**Imam Ibn Kathir** (1301–1373 CE) was among the most distinguished classical Islamic scholars, historians, and Qur'anic exegetes. His renowned work,*Tafsir Ibn Kathir* is one of the most widely studied and referenced commentaries on the Qur'an.

*Tafsir al-Jalalayn*, authored by **Imam Jalal al-Din al-Mahalli** (1389–1459 CE) and later completed by **Imam Jalal al-Din al-Suyuti** (1445–1505 CE), is among the most concise and widely read Qur'anic commentaries. It is especially appreciated for its clarity, brevity, and focus on linguistic and grammatical explanation of Qur'anic verses.

**Marmaduke Pickthall** (1875–1936 CE) was a British Muslim scholar and one of the earliest and most respected translators of the Qur'an into English.

# पुस्तक में उद्धृत विद्वानों का परिचय

हदीस के विद्वानों का इस्लामी विद्वत्ता में अत्यंत केंद्रीय स्थान है, क्योंकि इन्होंने पैग़म्बर मुहम्मद (ﷺ) के कथनों, कार्यों और मौन स्वीकृतियों को सुरक्षित रखा और आगे तक पहुँचाया। इनमें **इमाम अल-बुख़ारी, इमाम मुस्लिम, इमाम अबू दाऊद, इमाम अल-तिर्मिज़ी, इमाम अल-नसाई** और **इमाम इब्न माजा** विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

**इमाम इब्न कसीर** (1301–1373 ई.) शास्त्रीय इस्लामी विद्वानों, इतिहासकारों और क़ुरआन के प्रमुख व्याख्याकारों में से थे। उनकी प्रसिद्ध कृति तफ़्सीर इब्न कसीर, क़ुरआन की सबसे अधिक अध्ययन की जाने वाली और संदर्भित व्याख्याओं में से एक है।

तफ़्सीर अल-जलालैन, जिसे **इमाम जलालुद्दीन अल-महल्ली** (1389–1459 ई.) ने आरंभ किया और बाद में **इमाम जलालुद्दीन अल-सुयूती** (1445–1505 ई.) ने पूर्ण किया, क़ुरआन की सबसे संक्षिप्त और व्यापक रूप से पढ़ी जाने वाली व्याख्याओं में से एक है। यह विशेष रूप से अपनी स्पष्टता, संक्षेपता और क़ुरआनी आयतों की भाषाई एवं व्याकरणिक व्याख्या पर केंद्रित होने के लिए सराही जाती है।

**मार्माड्यूक पिकथॉल** (1875–1936 ई.) एक ब्रिटिश मुस्लिम विद्वान थे और क़ुरआन के अंग्रेज़ी अनुवादकों में अग्रणी तथा अत्यंत सम्मानित नामों में से एक थे।

His translation, *The Meaning of the Glorious Qur'an*, is widely admired for its dignified and classical English style, while remaining faithful to the linguistic structure and meaning of the original Arabic text.

**Sahih International** is a well-known English translation of the Qur'an first published in 1997, it was produced by a team of three American Muslim women, Amina Assami, Mary Kennedy, and Amatullah Bantley. It is appreciated for its clear, modern, and relatively literal language, aiming to convey the original Arabic meaning accurately.

**Suhel Farooq Khan** and **Saif Nadvi** are regarded as scholars of the contemporary Urdu–Hindi translation tradition who have made sincere efforts to present original Islamic texts in clear, fluent, and accessible language. A distinctive feature of both translators is that they do not confine themselves to literal translation alone; rather, they give equal importance to meaning, context, and underlying spirit, enabling readers to grasp the essence of the original text.

**Dr. Zakir Naik** is an India born, contemporary Islamic scholar. Originally trained as a medical doctor, he later dedicated himself full-time to Islamic propagation. He is particularly recognized for presenting Islamic teachings through logical reasoning, extensive references to the Qur'an and Hadith, and comparative analysis of other religious scriptures.

उनका अनुवाद *"द मीनिंग ऑफ़ द ग्लोरियस क़ुरआन"* अपनी गरिमापूर्ण और शास्त्रीय अंग्रेज़ी शैली के लिए प्रसिद्ध है, जो मूल अरबी पाठ की संरचना और अर्थ के प्रति निष्ठावान रहता है।

**सहीह इंटरनेशनल** क़ुरआन का एक प्रसिद्ध अंग्रेज़ी अनुवाद है, जो पहली बार 1997 में प्रकाशित हुआ। इसे तीन अमेरिकी मुस्लिम महिलाओं अमीना अस्सामी, मैरी केनेडी और अमातुल्लाह बैंटली की टीम ने तैयार किया। यह अनुवाद अपनी स्पष्ट, आधुनिक और अपेक्षाकृत शाब्दिक भाषा के लिए जाना जाता है, जिसका उद्देश्य मूल अरबी अर्थ को यथासंभव सटीक रूप में प्रस्तुत करना है।

**सुहैल फ़ारूक़ ख़ान** और **सैफ़ नदवी** समकालीन उर्दू-हिंदी अनुवाद परंपरा के ऐसे विद्वान माने जाते हैं, जिन्होंने इस्लामी मूल ग्रंथों को सरल, प्रवाहपूर्ण और सुलभ भाषा में प्रस्तुत करने का गंभीर प्रयास किया है। दोनों अनुवादकों की विशेषता यह है कि वे केवल शाब्दिक अनुवाद तक सीमित न रहकर अर्थ, संदर्भ और भाव को भी समान महत्व देते हैं, जिससे पाठक मूल पाठ की आत्मा को समझ सके।

**डॉ. ज़ाकिर नाइक** भारत में जन्मे एक समकालीन इस्लामी विद्वान हैं। उन्होंने प्रारंभिक शिक्षा चिकित्सा के क्षेत्र में प्राप्त की और चिकित्सक के रूप में प्रशिक्षण लेने के बाद स्वयं को पूर्णकालिक रूप से इस्लामी प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित कर दिया। वे विशेष रूप से तार्किक विवेचना, क़ुरआन और हदीस के व्यापक संदर्भों तथा अन्य धर्मग्रंथों के तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से इस्लामी शिक्षाओं को प्रस्तुत करने के लिए जाने जाते हैं।

# ASTRONOMY: CREATION OF THE UNIVERSE: "THE BIG BANG"

**BOOK REFERENCE (SCIENTIFIC FACT / MIRACLE)**

The Qur'an and Modern Science: Compatible or Incompatible? Page 6

**QUOTED AAYAA AND EXPLANATION OFFERED**

According to 'The Big Bang', the whole universe was initially one big mass (Primary Nebula). Then there was a 'Big Bang' (Secondary Separation) which resulted in the formation of Galaxies. These then divided to form stars, planets, the sun, the moon, etc. The Qur'an contains the following verse regarding the origin of the universe:

*"Do not the Unbelievers see that the heavens and the earth were joined together (as one unit of Creation), before We clove them asunder?"* [**Al-Qu'ran 21:30**]

The striking similarity between the Qur'anic verse and 'The Big Bang' is inescapable!

**ENGLISH TRANSLATION WILLIAM PICKTHALL**

*"Have not those who disbelieve known that the heavens and the earth were of one piece, then We parted them, and we made every living thing of water? Will they not then believe"*

# खगोलशास्त्र: ब्रह्मांड की रचना – "द बिग बैंग"

**<u>पुस्तक संदर्भ (वैज्ञानिक तथ्य / चमत्कार)</u>**

क़ुरआन और आधुनिक विज्ञान: अनुकूल या असंगत? पृष्ठ 6

**<u>उद्धृत आयत और दी गई व्याख्या</u>**

'बिग बैंग' सिद्धांत के अनुसार, प्रारंभ में पूरा ब्रह्मांड एक ही विशाल द्रव्यमान (प्राथमिक नीहारिका) के रूप में मौजूद था। इसके बाद एक महान विस्फोट हुआ, जिसे 'बिग बैंग' (द्वितीयक विभाजन) कहा जाता है। इस विस्फोट के परिणामस्वरूप आकाशगंगाओं का निर्माण हुआ। आगे चलकर इन्हीं आकाशगंगाओं से तारे, ग्रह, सूर्य, चंद्रमा आदि बने।

क़ुरआन में ब्रह्मांड की उत्पत्ति के संबंध में निम्नलिखित आयत उल्लेखित है:

*"क्या काफ़िर नहीं देखते कि आकाश और धरती एक साथ जुड़े हुए थे, फिर हमने उन्हें अलग किया?"* **[क़ुरआन21:30]**

क़ुरआनी आयत और बिग बैंग सिद्धांत के बीच की चौंकाने वाली समानता से इनकार नहीं किया जा सकता!

**<u>हिंदी अनुवाद: फ़ारूक़ ख़ान और नदवी</u>**

"क्या उन लोगों ने जिन्होंने इनकार किया, देखा नहीं कि आकाश और धरती बन्द थे। फिर हमने उन्हें खोल दिया। और हमने पानी से हर जीवित चीज़ बनाई, तो क्या वे मानते नहीं।"

**ENGLISH TRANSLATION SAHIH INTERNATIONAL**

*"Have those who disbelieved not considered that the heavens and the earth were a joined entity, and We separated them and made from water every living thing? Then will they not believe"*

**TAFSIR IBN KATHIR**

In the beginning they were all one piece, attached to one another and piled up on top of one another, then He separated them from one another, and made the heavens seven and the earth seven, placing the air between the earth and the lowest heaven. Then He caused rain to fall from the sky and vegetation to grow from the earth.

Ibn Abi Hatim recorded that Ibn Umar said that; a man came to him and questioned him about when the heavens and earth were joined together then they were parted. He said, "Go to that old man (Sheikh) and ask him, then come and tell me what he says to you." So, he went to Ibn Abbas and asked him. Ibn Abbas said: "Yes, the heavens were joined together and it did not rain, and the earth was joined together and nothing grew.

When living beings were created to populate the earth, rain came forth from the heavens and vegetation came forth from the earth."

**उर्दू अनुवाद: फ़ारूक़ ख़ान और नदवी**

"जो लोग काफ़िर हो बैठे क्या उन लोगों ने इस बात पर ग़ौर नहीं किया कि आसमान और ज़मीन दोनों बस्ता (बन्द) थे, तो हमने दोनों को शिगाफ़्ता किया (खोल दिया) और हम ही ने जानदार चीज़ को पानी से पैदा किया। इस पर भी ये लोग ईमान न लाएँगे।"

**तफ़्सीर इब्न कसीर**

शुरुआत में आकाश और धरती सब एक ही टुकड़ा थे—एक-दूसरे से जुड़े हुए और एक-दूसरे के ऊपर जमा हुए थे। फिर अल्लाह ने उन्हें एक-दूसरे से अलग कर दिया। उसने सात आकाश और सात धरतियाँ बनाईं और धरती तथा सबसे निचले आकाश के बीच हवा को स्थापित किया। फिर उसने आकाश से वर्षा उतारी और धरती से वनस्पति उगाई।

इब्न अबी हातिम ने रिवायत की है कि इब्न उमर (रज़ि.) ने बयान किया: एक व्यक्ति उनके पास आया और उनसे पूछा कि जब आकाश और धरती जुड़े हुए थे, फिर उन्हें अलग किया गया—उसका क्या अर्थ है? उन्होंने (रज़ि.) ने कहा: "उस बूढ़े शेख (विद्वान) के पास जाओ, उनसे पूछो, फिर आकर मुझे बताओ कि उन्होंने क्या कहा।"

वह व्यक्ति इब्न अब्बास (रज़ि.) के पास गया और उनसे यह प्रश्न किया। इब्न अब्बास (रज़ि.) ने कहा: "हाँ, आकाश आपस में जुड़े हुए थे और उनसे वर्षा नहीं होती थी, और धरती जुड़ी हुई थी और उससे कुछ उगता नहीं था। जब अल्लाह ने जीवों को पैदा किया ताकि वे धरती पर आबाद हों, तब आकाश से वर्षा होने लगी और धरती से वनस्पति उगने लगी।"

Sa`id bin Jubayr said: "The heavens and the earth were attached to one another, then when the heavens were raised up, the earth became separate from them, and this is their parting which was mentioned by Allah in His Book."

Al-Hasan and Qatadah said, "They were joined together, then they were separated by this air."

**TAFSIR JALALAYN**

Have they not ([one may] read a-wa-lam or a-lam) realised, [have they not] come to know, those who disbelieve, that the heavens and the earth were closed together and then We parted them, We made seven heavens and seven earths or [it is meant] that the heaven was parted and began to rain, when it did not use to do so, and that the earth was parted and began to produce plants, when it did not use to do so; and We made, of water, [the water] that falls from the heaven and that springs from the earth, every living thing?, in the way of plants and otherwise: in other words, water is the cause of such [things] having life. Will they not then believe?, by affirming My Oneness?

सईद बिन जुबैर ने कहा: "आकाश और धरती आपस में जुड़े हुए थे। फिर जब आकाश को ऊपर उठाया गया, तो धरती उनसे अलग हो गई। यही उनका अलग होना है जिसका उल्लेख अल्लाह ने अपनी किताब में किया है।"

अल-हसन और क़तादा ने कहा: "वे दोनों आपस में जुड़े हुए थे, फिर उनके बीच हवा के माध्यम से उन्हें अलग कर दिया गया।"

**<u>तफ़्सीर जलालैन</u>**

"क्या काफ़िरों ने (इसे) समझा नहीं (इसे अ-वलमया अ-लम पढ़ा जा सकता है) क्या उन्होंने यह जाना नहीं कि आकाश और धरती आपस में बंद (जुड़े) हुए थे, फिर हमने दोनों को अलग कर दिया? और हमने सात आकाश और सात धरतियाँ बनाईं।

या इसका आशय यह है कि आकाश को अलग किया गया और वह वर्षा करने लगा, जबकि पहले वह वर्षा नहीं करता था; और धरती को अलग किया गया और वह वनस्पति उत्पन्न करने लगी, जबकि पहले वह कुछ उत्पन्न नहीं करती थी।

और हमने पानी से—उस पानी से जो आकाश से उतरता है और उस पानी से जो धरती से निकलता है—हर जीवित वस्तु को बनाया, चाहे वह पौधों के रूप में हो या अन्य रूपों में। अर्थात पानी ही जीवन का कारण है। तो क्या वे विश्वास नहीं करेंगे, मेरे एकत्व (तौहीद) की पुष्टि करते हुए?"

**OTHER REFERENCES IN ISLAMIC TEXT ON RELATED TOPIC**

**Q21:*32*** *"And We have made the heaven a roof, safe and well-guarded. Yet they turn away from its signs"*

**Tafsir Q21:32 (Jalalayn)** And We made the heaven a roof, for the earth, [functioning] like the roof of a house, preserved, from collapsing; and yet of the signs thereof, namely, [the signs of this heaven such as] the sun, the moon and the stars, they are disregardful, failing to reflect on them and thus realise that the Creator of such [things] can have no partner.

**Q50:6***"Have they not looked at the heaven above them, how We have made it and adorned it, and there are no rifts in it"*

**Q67:5***"And We have certainly beautified the nearest heaven with stars and have made [from] them what is thrown at the devils and have prepared for them the punishment of the Blaze"*

**Q15:14***"And [even] if We opened to them a gate from the heaven and they continued therein to ascend"*

**Q21:104***"The Day when We will fold the heaven like the folding of a [written] sheet for the records. As We began the first creation, We will repeat it. [That is] a promise binding upon Us. Indeed, We will do it"*

**Q21:32** *"और हमने आकाश को एक सुरक्षित छत बनाया, किन्तु वे हैं कि उसकी निशानियों से कतराते हैं।"*

**तफ़्सीर क़ुरआन 21:32 (जलालैन)**

और हमने आकाश को पृथ्वी के लिए एक छत बनाया, घर की छत की तरह, जो सुरक्षित रखी गई है, ताकि वह गिर न पड़े। फिर भी वे इसकी निशानियों से—अर्थात इस आकाश की निशानियों से, जैसे सूर्य, चंद्रमा और तारे—उदासीन रहते हैं; वे उन पर विचार नहीं करते और इस प्रकार यह नहीं समझ पाते कि ऐसी चीज़ों का स्रष्टा कोई साझीदार नहीं रख सकता।

**Q50:6** *"अच्छा तो क्या उन्होंने अपने ऊपर आकाश को नहीं देखा, हमने उसे कैसा बनाया और उसे सजाया। और उसमें कोई दरार नहीं।"*

**Q67:5** *"और हमने नीचे वाले (पहले) आसमान को चिराग़ों (तारों के) से ज़ीनत दी है और हमने उनको शैतानों के मारने का आला बनाया और हमने उनके लिए दहकती हुई आग का अज़ाब तैयार कर रखा है।"*

**Q15:14** *"और अगर हम अपनी क़ुदरत से आसमान का एक दरवाज़ा भी खोल दें और ये लोग दिन-दहाड़े उस दरवाज़े से (आसमान पर) चढ़ भी जाएँ।"*

**Q21:104** "जिस दिन हम आकाश को लपेट लेंगे, जैसे पंजी में पन्ने लपेटे जाते हैं, जिस प्रकार पहले हमने सृष्टि का आरम्भ किया था उसी प्रकार हम उसकी पुनरावृत्ति करेंगे। यह हमारे ज़िम्मे एक वादा है। निश्चय ही हमें यह करना है।"

**Sahih al-Bukhari 3210:** Narrated Aisha (R.A.): I heard Allah's Messenger (ﷺ) saying, "The angels descend, the clouds and mention this or that matter decreed in the Heaven. The devils listen stealthily to such a matter, come down to inspire the soothsayers with it, and the latter would add to it one-hundred lies of their own."

The Qur'an mentions seven heavens layered one above another: "He is the One who created seven heavens in layers" (**Q67:3**), "Allah is the One who created seven heavens and of the earth, the like of them." (**Q65:12**). The existence of seven heavens is agreed upon by all

Islamic scholars. The detailed description of heavens comes from the Miraj (Night Journey) of Prophet Muhammad (ﷺ), reported in Sahih Bukhari and Sahih Muslim.

The phrase "seven earths" appears explicitly only once (**Q65:12**), but is strongly supported by authentic hadith: Prophet Muhammad (ﷺ) said: "Whoever wrongfully takes even a handspan of land, he will be sunk down through the seven earths on the Day of Resurrection." (Ṣaḥiḥ Bukhari, Sahih Muslim) So the existence of seven earths is also affirmed, but their nature is not clearly detailed.

According to Al-Ṭabari the seven earths could be: layers beneath our earth or Separate earth-like realms.

**सहीह अल-बुख़ारी 3210:** आयशा (रज़ि.) से रिवायत है, मैंने अल्लाह के रसूल (ﷺ) को यह कहते हुए सुना: *"फ़रिश्ते बादलों में उतरते हैं और स्वर्ग में तय किए गए किसी माले का उल्लेख करते हैं। शैतान चुपके से उस बात को सुन लेते हैं, फिर नीचे उतरकर उसे ज्योतिषियों/काहिनों के कान में डाल देते हैं, और वे लोग उस एक बात में अपनी ओर से सौ झूठ मिला देते हैं।"*

**क़ुरआन** सात स्वर्गों के एक-दूसरे के ऊपर परतों के रूप में होने का उल्लेख करता है: *"वही है जिसने सात आकाशों को परतों में पैदा किया"* (**Q67:3**), और *"अल्लाह वही है जिसने सात आकाश बनाए और धरती में भी उन्हीं के समान"* (**Q65:12**)। सात स्वर्गों के अस्तित्व पर सभी इस्लामी विद्वानों की सहमति है।

स्वर्गों का विस्तृत वर्णन पैग़म्बर मुहम्मद (ﷺ) की मेराज (रात्रि यात्रा) से प्राप्त होता है, जिसका वर्णन सहीह अल-बुख़ारी और सहीह मुस्लिम में मिलता है।

*"सात धरतियों"* का उल्लेख क़ुरआन में स्पष्ट रूप से केवल एक बार (**Q65:12**) आया है, लेकिन इसकी पुष्टि प्रमाणिक हदीसों से मजबूती से होती है। पैग़म्बर मुहम्मद (ﷺ) ने फरमाया: *"जिसने ज़ुल्म के तौर पर ज़मीन का एक बालिश्त भी हड़प लिया, क़यामत के दिन उसे सात धरतियों तक धँसा दिया जाएगा।"* (सहीह बुख़ारी, सहीह मुस्लिम)

इस प्रकार सात धरतियों के अस्तित्व की भी पुष्टि होती है, हालाँकि उनकी प्रकृति का स्पष्ट विवरण नहीं मिलता।

इमाम तबरी के अनुसार, सात धरतियाँ या तो हमारी धरती के नीचे स्थित विभिन्न परतें हो सकती हैं, या फिर पृथ्वी जैसी अलग-अलग दुनिया/लोक हो सकते हैं।

**Geocentric theory:** It was an ancient Greek belief that the Earth remains stationary at the centre of the universe, and the Sun, Moon, planets, and stars revolve around the Earth.

## PRESENT SCIENTIFIC UNDERSTANDING

Big Bang (~13.8 billion years ago) → Earth formed (~4.54 billion years ago) → First modern humans appeared (~300,000 years ago).

**भू-केंद्रीय सिद्धांत:**

वह प्राचीन धारणा है जिसके अनुसार पृथ्वी ब्रह्मांड के केंद्र में स्थिर है, और सूर्य, चंद्रमा, ग्रह तथा तारे पृथ्वी के चारों ओर घूमते हैं। यह विचार प्राचीन यूनानी दर्शन और खगोलशास्त्र में प्रमुख था।

**<u>वर्तमान वैज्ञानिक समझ:</u>**

बिगबैंग (~13.8 अरब साल पहले) → पृथ्वी का निर्माण (~4.54 अरब साल पहले) → पहले आधुनिक मनुष्य प्रकट हुए (~3 लाख साल पहले)।

# ASTRONOMY: INITIAL GASEOUS MASS BEFORE CREATION OF GALAXIES

**BOOK REFERENCE (SCIENTIFIC FACT / MIRACLE)**

The Qur'an and Modern Science: Compatible or Incompatible? Page 7

**QUOTED AAYAA AND EXPLANATION OFFERED**

Scientists agree that before the galaxies in the universe were formed, celestial matter was initially in the form of gaseous matter.

*"Moreover, He Comprehended in His design the sky, and it had been (as) smoke: He said to it and to the earth: 'Come ye together, willingly or unwillingly.' They said: 'We do come (together), in willing obedience.'"* **[Al-Qur'an 41:11]**

This fact is a corollary to the 'Big Bang'.

**ENGLISH TRANSLATION WILLIAM PICKTHALL**

Then turned He to the heaven when it was smoke, and said unto it and unto the earth: Come both of you, willingly or loth. They said: We come, obedient.

# खगोलशास्त्र: आकाशगंगाओं के निर्माण से पहले प्रारंभिक गैसीय द्रव्यमान

**<u>पुस्तक संदर्भ (वैज्ञानिक तथ्य / चमत्कार)</u>**

क़ुरआन और आधुनिक विज्ञान अनुकूल या असंगत? पृष्ठ 7

**<u>उद्धृत आयत और दी गई व्याख्या</u>**

वैज्ञानिक इस बात पर सहमत हैं कि ब्रह्मांड में आकाशगंगाओं के बनने से पहले, खगोलीय पदार्थ प्रारंभ में गैसीय अवस्था में था।

*"फिर उसने आकाश की ओर ध्यान दिया, जब वह धुएँ के रूप में था। तब उसने आकाश और पृथ्वी से कहा: 'तुम दोनों आओ, चाहे स्वेच्छा से या अनिच्छा से।' उन्होंने कहा: 'हम स्वेच्छा से आते हैं।'"* **[क़ुरआन41:11]**
यह तथ्य बिगबैंग सिद्धांत का एक निष्कर्ष है।

**<u>हिंदी अनुवाद फ़ारूक़ ख़ान और नदवी</u>**

*"फिर उसने आकाश की ओर रुख़ किया, जब कि वह मात्र धुआँ था— और उसने उससे और धरती से कहा, 'आओ, स्वेच्छा के साथ या अनिच्छा के साथ।' उन्होंने कहा, 'हम स्वेच्छा के साथ आए।'"*

**ENGLISH TRANSLATION SAHIH INTERNATIONAL**

Then He directed Himself to the heaven while it was smoke and said to it and to the earth, "Come [into being], willingly or by compulsion." They said, "We have come willingly."

**TAFSIR IBN KATHIR**

Allah says that He created the earth first, because it is the foundation, and the foundation should be built first, then the roof.Then He rose over (Istawaila) towards the heaven when it was smoke, i.e., steam which arose from it when the earth was created.

**TAFSIR JALALAYN**

Then He turned to the heaven when it was smoke, [consisting of] rising vapours, and He said to it and to the earth, “Come both of you, to what I desire from you, willingly, or unwillingly!” (taw‘an aw karhan, their [syntactical] locus is that of a circumstantial qualifier, in other words, ‘[Come] being obedient or coerced’). They said, “We come, together with all those inhabiting us, willingly!”

**OTHER REFERENCES IN ISLAMIC TEXT ON RELATED TOPIC**

**Q41:9** *Say, "Do you indeed disbelieve in He who created the earth in two days and attribute to Him equals? That is the Lord of the worlds."*

**<u>उर्दू अनुवाद फ़ारूक़ ख़ान और नदवी</u>**

फिर आसमान की तरफ मुतावज्जेह हुआ और (उस वक़्त) धुएँ (कासा) था। उसने उससे और ज़मीन से फ़रमाया: "कितुम दोनों आओ ख़ुशी से ख्वाह कर राहत से।" दोनों ने अर्ज़ की: "हम ख़ुशी ख़ुशी हाज़िर हैं।"

**<u>तफ़्सीर इब्न कसीर</u>**

अल्लाह कहते हैं कि उसने पहले पृथ्वी का निर्माण किया, क्योंकि यह आधार है, और आधार पहले बनाया जाना चाहिए, फिर छत। फिर वह आकाश की ओर मुड़ा (इस्तावाइला) जब वह धुएँ के रूप में था, अर्थात वह भाप जो पृथ्वी के बनने के समय उससे उठी थी।

**<u>तफ़्सीर जलालैन</u>**

फिर उसने आकाश की ओर रुख़ किया, जब वह धुएँ के रूप में था, [उठते हुए वाष्पों से बना], और उसने उसे और पृथ्वी को कहा: "दोनों उस रूप में आओ, जैसा मैं तुमसे चाहता हूँ, चाहे स्वेच्छा से हो या ज़बरदस्ती से!" (तौ 'आनयाकरहान, इस का व्याकरणिक स्थान परिस्थिति जन्य विशेषण जैसा है, अर्थात् '[आओ] आज्ञाकारी या विवश होकर') । उन्होंने कहा: "हम आते हैं, अपने सभी निवासियों सहित, स्वेच्छा से!"

**<u>इस्लामी धर्मग्रंथों में संबंधित विषय पर अन्य संदर्भ</u>**

**Q41:9** *कहो, "क्या तुम उसका इनकार करते हो, जिसने धरती को दो दिनों (काल) में पैदा किया और तुम उसके समकक्ष ठहराते हो? वह तो सारे संसार का रब है"*

**Q41:10***"And He placed on the earth firmly set mountains over its surface, and He blessed it and determined therein its [creatures'] sustenance in four days without distinction - for [the information] of those who ask"*

**Q41:11***"Then He directed Himself to the heaven while it was smoke and said to it and to the earth, "Come [into being], willingly or by compulsion." They said, "We have come willingly."*

**Q41:12***"And He completed them as seven heavens within two days and inspired in each heaven its command. And We adorned the nearest heaven with lamps and as protection ....."*

**PRESENT SCIENTIFIC KNOWLEDGE**

Sunlight and rainfall are essential for life on Earth. Sunlight forms the basis of food through the process of photosynthesis, while rainfall provides water and sustains life. Humans, along with all other living beings, survive either directly or indirectly by depending on sunlight and rainfall.

**Q41:10** *"और उसने उस (धरती) में उसके ऊपर से पहाड़ जमाए और उसमें बरकत रखी और उसमें उसकी ख़ुराकों को ठीक अंदाज़े से रखा। माँगकरने वालों के लिए समान रूप से यह सब चार दिन में हुआ"*

**Q41:11** *"फिर उसने आकाश की ओर रुख़ किया, जब कि वह मात्र धुआँ था और उसने उससे और धरती से कहा, 'आओ, स्वेच्छा के साथ या अनिच्छा के साथ।' उन्होंने कहा, 'हम स्वेच्छा के साथ आए।'"*

**Q41:12** *"फिर दो दिनों में उनको अर्थात सात आकाशों को बनाकर पूरा किया और प्रत्येक आकाश में उससे सम्बन्धित आदेश की प्रकाशना कर दी और दुनियाके (निकटवर्ती) आकाश को हमने दीपों से सजाया (रात के यात्रियों के दिशा-निर्देश आदि के लिए) और सुरक्षित करने के उद्देश्य से ...."*

## <u>वर्तमान वैज्ञानिक समझ</u>

पृथ्वी पर सूर्य का प्रकाश और वर्षा जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। सूर्य का प्रकाश प्रकाश-संश्लेषण की प्रक्रिया के माध्यम से भोजन और ऊर्जा का आधार बनता है, जबकि वर्षा जल उपलब्ध कराकर जीवन को बनाए रखती है। मनुष्य सहित सभी अन्य जीव-जंतु प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सूर्य के प्रकाश और वर्षा पर ही निर्भर होकर जीवित रहते हैं।

# ASTRONOMY: SHAPE OF THE EARTH IS SPHERICAL

**BOOK REFERENCE (SCIENTIFIC FACT / MIRACLE)**

The Qur'an and Modern Science: Compatible or Incompatible? Page 8

**QUOTED AAYAA AND EXPLANATION GIVEN**

In early times, people believed that the earth was flat. For centuries, men were afraid to venture out too far, for fear of falling off the edge! Sir Francis Drake was the first person who proved that the earth is spherical when he sailed around it in 1597.

*"Seest thou not that Allah merges Night into Day and He merges Day into Night?"* **[Al-Qur'an 31:29]**

Merging here means that the night slowly and gradually changes to day and vice versa. This phenomenon can only take place if the earth is spherical. If the earth was flat, there would have been a sudden change from night to day and from day to night.

*"He created the heavens and the earth in true (proportions): He makes the Night overlap the Day and the Day overlap the Night."* **[Al-Qur'an 39:5]**

# खगोलशास्त्र: पृथ्वी का आकार गोलाकार है

**<u>पुस्तक संदर्भ (वैज्ञानिक तथ्य / चमत्कार)</u>**

क़ुरआन और आधुनिक विज्ञान अनुकूल या असंगत? पृष्ठ 8

**<u>उद्धृत आयत और दी गई व्याख्या</u>**

प्राचीन काल में लोग यह मानते थे कि पृथ्वी चपटी है। सदियों तक लोग बहुत दूर तक यात्रा करने से डरते थे, क्योंकि उन्हें डर था कि कहीं वे पृथ्वी के किनारे से गिर न जाएँ। सर फ्रांसिस ड्रेक पहले व्यक्ति माने जाते हैं जिन्होंने सन् 1597 में पृथ्वी की परिक्रमा कर के यह सिद्ध किया कि पृथ्वी गोल (गोलाकार) है।

*"क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह रात को दिन में प्रवेश करा आता है और दिन को रात में प्रवेश करा देता है?"* **[क़ुरआन31:29]**

यहाँ "प्रवेश कराना" का अर्थ है कि रात धीरे-धीरे दिन में बदलती है और दिन धीरे-धीरे रात में। यह प्रक्रिया केवल तभी संभव है जब पृथ्वी गोल हो। यदि पृथ्वी चपटी होती, तो रात से दिन और दिन से रात में परिवर्तन अचानक होता, न कि क्रमिक रूप से।

*"उसने आकाशों और पृथ्वी को सत्य के साथ पैदाकिया। वह रात को दिन पर लपेट देता है और दिन को रात पर लपेट देता है।"* **[क़ुरआन 39:5]**

The Arabic word used here is Kawwara meaning 'to overlap' or 'to coil'– the way a turban is wound around the head. The overlapping or coiling of the day and night can only take place if the earth is spherical.

*"And the earth, moreover, hath He made egg shaped"* **[Al-Qur'an 79:30]**

The Arabic word for egg here is dahaahaa which means an ostrich-egg. The shape of an ostrich-egg resembles the geo-spherical shape of the earth. Thus, the Qur'an correctly describes the shape of the earth, though the prevalent notion when the Qur'an was revealed was that the earth was flat.

**ENGLISH TRANSLATION WILLIAM PICKTHALL**

**Q31:29***"Hast thou not seen how Allah causeth the night to pass into the day and causeth the day to pass into the night, and hath subdued the sun and the moon (to do their work), each running unto an appointed term; and that Allah is Informed of what ye do"*

**Q39:5***"He hath created the heavens and the earth with truth. He maketh night to succeed day, and He maketh day to succeed night, and He constraineth the sun and the moon to give service, each running on for an appointed term. Is not He the Mighty, the Forgiver"*

**Q79:30***"And after that He spread the earth"*

इस आयत में प्रयुक्त अरबी शब्द "कव्वरा" है, जिसका अर्थ है लपेटना या घुमाकर बाँधना, जैसे पगड़ी सिर के चारों ओर लपेटी जाती है। दिन और रात का इस प्रकार एक-दूसरे पर लिपटना केवल तभी संभव है जब पृथ्वी गोलाकार हो।

*"और पृथ्वी को, इसके बाद, उसने अंडाकार बनाया।"* **[क़ुरआन 79:30]**

यहाँ "अंडा" के लिए प्रयुक्त अरबी शब्द "दहाहा" है, जिसका अर्थ शुतुरमुर्ग के अंडे से लिया जाता है। शुतुरमुर्ग के अंडे का आकार पृथ्वी के भू-गोलाकार स्वरूप से मिलता-जुलता है। इस प्रकार, क़ुरआन पृथ्वी के आकार का सही वर्णन करता है, जबकि क़ुरआन के अवतरण के समय प्रचलित धारणा यह थी कि पृथ्वी चपटी है।

## हिंदी अनुवाद फ़ारूक़ ख़ान और नदवी

**Q31:29** *"क्या तुम ने देखा नहीं कि अल्लाह रात को दिन में प्रविष्ट करता है और दिन को रात में प्रविष्ट करता है। उसने सूर्य और चन्द्रमा को काम में लगा रखा है? प्रत्येक एक नियत समय तक चला जा रहा है और इसके साथ यह कि जो कुछ भी तुम करते हो, अल्लाह उसकी पूरी ख़बर रखता है।"*

**Q39:5** *"उसने आकाशों और धरती को सत्य के साथ पैदाकिया। रात को दिन पर लपेटता है और दिन को रात पर लपेटता है। और उसने सूर्य और चन्द्रमा को वशीभूत कर रखा है। प्रत्येक एक नियत समय को पूरा करने के लिए चल रहा है। जान रखो, वही प्रभुत्वशाली, बड़ा क्षमाशील है।"*

**Q79:30** *"और धरती को देखो! इसके पश्चात उसे फैलाया।"*

**ENGLISH TRANSLATION SAHIH INTERNATIONAL**

**Q31:29***"Do you not see that Allah causes the night to enter the day and causes the day to enter the night and has subjected the sun and the moon, each running [its course] for a specified term, and that Allah, with whatever you do, is Acquainted?"*

**Q39:5***"He created the heavens and earth in truth. He wraps the night over the day and wraps the day over the night and has subjected the sun and the moon, each running [its course] for a specified term. Unquestionably, He is the Exalted in Might, the Perpetual Forgiver"*

**Q79:30***"And after that He spread the earth"*

**TAFSIR IBN KATHIR**

**Q39:5** He makes the night to go in the day and makes the day to go in the night. means, He has subjugated them and He causes them to alternate without ceasing, each seeking the other rapidly, as He says: He brings the night as a cover over the day, seeking it rapidly. (7:54)

**Q79:30** And after that He spread the earth

## उर्दू अनुवाद फ़ारूक़ ख़ान और नदवी

**Q31:29** *"क्या तूने ये भी ख़्याल न किया कि ख़ुदा ही रात को (बढ़ाके) दिन में दाखिल कर देता है (तो रात बढ़ जाती है) और दिन को (बढ़ाके) रात में दाखिल कर देता है (तो दिन बढ़ जाता है)? उसी ने आफ़ताब व माहताब को (गोया) तुम्हारा बेअ बनादिया है कि एक मुक़र्रर मीयाद तक (यूँ ही) चलता रहेगा और (क्या तूने ये भी ख़्याल न किया कि) जो कुछ तुम करते हो, ख़ुदा उस से ख़ूब वाकिफ़ कार है।"*

**Q39:5** *"उसी ने सारे आसमान और ज़मीन को बजा (दुरुस्त) पैदाकिया। वही रात को दिन पर ऊपर तले लपेटता है और वही दिन को रात पर तहब तह लपेटता है और उसी ने आफ़ताब और माहताब को अपने बस में कर लिया है कि ये सब के सब अपने (अपने) मुक़र्रर वक्त चलते रहें। आगा रहो कि वही ग़ालिब बड़ा बख़्शने वाला है।"*

**Q79:30** *"और उसके बाद ज़मीन को फैलाया।"*

## तफ़्सीर इब्न कसीर

**Q39:5** वह रात को दिन में और दिन को रात में चला देता है। अर्थात, उसने उन्हें वश में कर लिया है और वह लगातार इनके आदान-प्रदान का कारण बनता है, हर एक दूसरे का शीघ्र अनुसरण करता है, जैसे कि वह कहता है: "वह रात को दिन पर एक आवरण के रूप में लाता है, और उसे शीघ्रता से खोजा जाता है।" (7:54)

**Q79:30** और इसके बाद उसने पृथ्वी को फैला दिया।

## TAFSIR JALALAYN

**Q39:5** He created the heavens and the earth with the truth (bi'l-haqqi is semantically connected to khalaqa, 'He created'). He turns the night into day, so that it grows, and turns the day into night, so that it grows, and He has disposed the sun and the moon, each running, in its course, for an appointed term, until the Day of Resurrection. Verily it is He Who is the Mighty, Whose way [always] prevails, Requiter of His enemies, the [ever] Forgiving, of His friends.

**Q79:30** and after that He spread out the earth: He made it flat, for it had been created before the heaven, but without having been spread out

## OTHER REFERENCES IN ISLAMIC TEXT ON RELATED TOPIC

**Tafsir Jalalayn Q88:20** And the earth, how it was laid out flat?, and thus infer from this the power of God, exalted be He, and His Oneness? The commencing with the [mention of] camels is because they are closer in contact with it [the earth] than any other [animal]. As for His words sutihat, 'laid out flat', this on a literal reading suggests that the earth is flat, which is the opinion of most of the scholars of the [revealed] Law, and not a sphere as astronomers (ahl al-hay'a) have it, even if this [latter] does not contradict any of the pillars of the Law.

## तफ़्सीर जलालैन

**Q39:5** उसने आकाश और पृथ्वी को सच्चाई के साथ बनाया ("बि-ल-हक्क़ी" का अर्थ 'सत्य के अनुसार' है, और यह खलाका 'उसने बनाया' से जुड़ा है)। वह रात को दिन में बदल देता है ताकि यह बढ़ सके, और दिन को रात में बदल देता है ताकि यह बढ़ सके। उसने सूरज और चंद्रमा को भी निश्चित मार्ग और अवधि के अनुसार चलने के लिए व्यवस्था दी है, जब तक कि पुनरुत्थान का दिन न आ जाए। निश्चय ही वही शक्तिशाली है, जिसकी राह हमेशा चलती है, अपने दुश्मनों का प्रतिफल देने वाला, अपने दोस्तों के प्रति दयालु और क्षमाशील है।

**Q79:30** और इसके बाद उसने पृथ्वी को फैला दिया: उसे समतल बनाया, क्योंकि यह पहले आकाश की तरह ही बनाई गई थी, लेकिन अभी तक फैली नहीं गई थी।

## इस्लामी धर्मग्रंथों में संबंधित विषय पर अन्य संदर्भ

**तफ़सीर क़ुरआन 88:20 (जलालैन):** "और पृथ्वी को कैसे फैलाया गया, और इससे अल्लाह की शक्ति, उसकी महानता और उसकी एकता का पता कैसे लगाया जाए? ऊंटों का उल्लेख इसलिये किया गया है क्योंकि वे अन्य किसी भी जीव की तुलना में पृथ्वी के अधिक निकट संपर्क में रहते हैं। जहाँ तक उसके शब्द 'सुतिहत' (सपाट किया गया) का सवाल है, इसका शाब्दिक अर्थ यह दर्शाता है कि पृथ्वी समतल है, जो कि अधिकांश [प्रकटित] कानून (शरीअत) के विद्वानों की राय है, और इसे खगोलशास्त्रियों (अहल-अल-हय'अ) की तरह गोलाकार नहीं माना गया है, हालाँकि यह (गोलाकार होने की धारणा) शरीअत के किसी भी मुख्य सिद्धांत का उल्लंघन नहीं करती।"

**Pickthall Q18:86** "Till, when he reached the setting-place of the sun, he found it setting in a muddy spring, and found a people thereabout. We said: O Dhu'l-Qarneyn! Either punish or show them kindness"

**Hadith Sunan Abi Dawud 4002:** Narrated Abu Dharr: I was sitting behind the Messenger of Allah (ﷺ) who was riding a donkey while the sun was setting. He asked: Do you know where this sets? I replied: Allah and his Apostle know best. He said: It sets in a spring of warm water (Hamiyah). [Sahih]

## PRESENT SCIENTIFIC KNOWLEDGE

Night occurs because the Earth rotates on its axis. When a part of the Earth turns away from the Sun, it no longer receives sunlight, and that region experiences night.

**क़ुरआन 18:86** "यहाँ तक कि जब वह सूरजास्त-स्थल तक पहुँचता तो उसे मटमैले काले पानी के एक स्रोत में डूबते हुए पाया और उसके निकट उसे एक क़ौम मिली। हमने कहा, "ऐ ज़ुलक़रनैन! तुझे अधिकार है कि चाहे तकलीफ़ पहुँचे और चाहे उनके साथ अच्छा व्यवहार करे।"

**हदीस सुनन अबू दाऊद 4002:** अबू ज़र्र (रज़ि.) से रिवायत है: मैं अल्लाह के रसूल पैग़म्बर मुहम्मद (ﷺ) के पीछे बैठा था, जब कि आप एक गधे पर सवार थे और सूरज अस्त हो रहा था। आपने फ़रमाया: "क्या तुम जानते हो कि यह (सूरज) कहाँ अस्त होता है?" मैंने अर्ज़ किया: "अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) ही बेहतर जानते हैं।" तो आपने फ़रमाया: "यह गर्म पानी के एक चश्मे (हामियाह) में जाकर अस्त होता है।" (सहीह)

## वर्तमान वैज्ञानिक समझ

रात पृथ्वी के अपनी धुरी पर घूमने के कारण होती है। जब पृथ्वी का कोई भाग सूर्य की ओर नहीं होता और उस पर सूर्य का प्रकाश नहीं पड़ता, तो वहाँ रात हो जाती है।

# ASTRONOMY: MOONLIGHT IS REFLECTED LIGHT

**BOOK REFERENCE (SCIENTIFIC FACT / MIRACLE)**

The Qur'an and Modern Science: Compatible or Incompatible? Page 9

**QUOTED AAYAA AND EXPLANATION OFFERED**

It was believed by earlier civilizations that the moon emanates its own light. Science now tells us that the light of the moon is reflected light. However, this fact was mentioned in the Qur'an in the following verse:

*"Blessed is He Who made Constellations in the skies, and placed therein a Lamp and a Moon giving light."***[Al-Qur'an 25:61]**

The Arabic word for the moon is qamar and it is described in the Qur'an as muneer which is a body that gives noor i.e. reflected light. Similarly, in another place Quran says:

*"See ye not how Allah has created the seven heavens one above another, "And made the moon a light in their midst, and made the sun as a (Glorious) Lamp?"***[Al-Qur'an 71:15-16]**

# खगोलशास्त्र: चंद्रमा का प्रकाश परावर्तित प्रकाश है

**<u>पुस्तक संदर्भ (वैज्ञानिक तथ्य / चमत्कार)</u>**

क़ुरआन और आधुनिक विज्ञान अनुकूल या असंगत? पृष्ठ 9

**<u>उद्धृत आयत और दी गई व्याख्या</u>**

प्राचीन सभ्यताओं में यह माना जाता था कि चंद्रमा अपना स्वयं का प्रकाश उत्पन्न करता है। लेकिन आधुनिक विज्ञान बताता है कि चंद्रमा का प्रकाश वास्तव में सूर्य के प्रकाश का परावर्तित रूप है।

हालाँकि, इस तथ्य का उल्लेख **क़ुरआन** में पहले ही किया गया है, जैसा कि निम्नलिखित आयत में आता है:

*"बड़ा ही बरकत वाला अल्लाह है वह, जिसने आकाश में नक्षत्र बनाए, और उसमें एक दीपक (सूर्य) और प्रकाश देने वाला चंद्रमा रखा।"* **[अल-क़ुरआन 25:61]**

अरबी भाषा में चंद्रमा के लिए शब्द **"क़मर"** प्रयोग किया गया है, और क़ुरआन में इसे *"मुनीर"* कहा गया है, जिसका अर्थ है ऐसा पिंड जो 'नूर' देता है, अर्थात परावर्तित प्रकाश, न कि स्वयं उत्पन्न किया हुआ प्रकाश।

इसी प्रकार क़ुरआन में एक अन्य स्थान पर कहा गया है:

*"क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह ने सात आकाशों को एक के ऊपर एक कैसे बनाया, और उनके बीच चंद्रमा को प्रकाश बनाया, और सूर्य को एक (तेज़ चमकदार) दीपक बनाया?"* **[अल-क़ुरआन 71:15–16]**

**ENGLISH TRANSLATION WILLIAM PICKTHALL**

**Q25:61***"Blessed be He Who hath placed in the heaven mansions of the stars, and hath placed therein a great lamp and a moon giving light!"*

**Q71:16***"And hath made the moon a light therein, and made the sun a lamp?"*

**ENGLISH TRANSLATION SAHIH INTERNATIONAL**

**Q25:61***"Blessed is He who has placed in the sky great stars and placed therein a [burning] lamp and luminous moon"*

**Q71:16***"And made the moon therein a [reflected] light and made the sun a burning lamp"*

**TAFSIR IBN KATHIR**

**Q25:61** … and a moon giving light. means, shining and illuminated by the light of something else, different from the light of the sun, as Allah says: It is He Who made the sun a shining thing and the moon as a light. (Q10:5) And Allah tells us that Nuh, peace be upon him, said to his people: See you not how Allah has created the seven heavens one above another. And has made the moon a light therein, and made the sun a lamp. (Q71:15-16)

**TAFSIR JALALAYN**

**Q25:61** …. and has, also, placed in it a lamp, namely, the sun, and a shining moon (a variant reading [for sirājan, 'sun'] has the plural surujan, which would mean 'luminous stars').

## हिंदी अनुवाद फ़ारूक़ ख़ान और नदवी

**Q25:61** *"बड़ी बरकत वाला अल्लाह है वह, जिसने आकाश में बुर्ज (नक्षत्र) बनाए और उसमें एक चिराग़ और एक चमकता चाँद बनाया"*

**Q71:16** *"और उनमें चंद्रमा को प्रकाश और सूर्य का प्रदीप बनाया?"*

## उर्दू अनुवाद फ़ारूक़ ख़ान और नदवी

**Q25:61** *"बहुत बा बरकत है वह खुदा जिसने आसमान में बुर्ज बनाए और उन बुर्जों में (आफ़ताब का) चिराग़ और जगमगाता चाँद बनाया"*

**Q71:16** *"और उसी ने उसमें चाँद को नूर बनाया और सूरज को रोशन चिराग़ बना दिया"*

## तफ़सीर इब्न कसीर

**Q25:61** ...और एक प्रकाश देने वाला चंद्रमा।" इसका अर्थ है कि चंद्रमा चमकने वाला है और किसी अन्य स्रोत के प्रकाश से प्रकाशित होता है, जो सूर्य के प्रकाश से भिन्न है। जैसा कि अल्लाह फ़रमाता है: "वही है जिसने सूरज को तेज चमकने वाला बनाया और चंद्रमा को प्रकाश बनाया।" [Q10:5] और अल्लाह हमें बताता है कि नूह (अलै.) ने अपनी क़ौम से कहा: *"क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह ने सात आकाशों को एक के ऊपर एक कैसे बनाया, और उनके बीच चंद्रमा को एक प्रकाश बनाया, और सूरज को एक दीपक बनाया?"* [Q71:15–16]

## तफ़्सीर जलालैन

**Q25:61** ... और उसने उसमें एक दीपक रखा, अर्थात सूर्य और एक प्रकाशमान चंद्रमा रखा। ('सिराजन्' के स्थान पर एक अन्य क़िराअत में 'सुरुजन्' आया है, जिसका अर्थ होगा 'चमकते हुए तारे')।

The moon is singled out for mention because of its particular merit.

**Q71:16** and made the moon therein that is to say, within their totality, [but] which is [effectively] true in the case of the heaven of this world as a light and made the sun as a lamp?, as an illuminating lantern, more powerful than the light of the moon.

**OTHER REFERENCES IN ISLAMIC TEXT ON RELATED TOPIC**

**Q75:6***"He asks, "When is the Day of Resurrection?"***Q75:9***"And the sun and the moon are joined"*

**Tafsir Jalalayn [Q75:9]** and the sun and the moon are brought together, so that both of them will rise from the west; or [it means when] the light of both of them disappears, and this will be on the Day of Resurrection.

**PRESENT SCIENTIFIC KNOWLEDGE**

Moon receives light from sun. The Sun's diameter is about 400 times larger than that of the Moon.

"चंद्रमा का विशेष रूप से उल्लेख उसकी विशिष्ट महत्ता के कारण किया गया है।"

**Q71:16** और उसने उसमें अर्थात समस्त आकाशों के भीतर, हालाँकि यह बात विशेष रूप से इस संसार के आकाश के संदर्भ में सही है—चंद्रमा को एक प्रकाश बनाया, और सूर्य को एक दीपक बनाया," अर्थात, एक तेज़ प्रकाश देने वाली ज्योति, जो चंद्रमा के प्रकाश से अधिक शक्तिशाली और प्रबल है।

## इस्लामी धर्मग्रंथों में संबंधित विषय पर अन्य संदर्भ

**Q75:6** *पूछता है, "आख़िर क़ियामत का दिन कब आएगा?"*

**Q75:9** *"और सूर्य और चंद्रमा इकट्ठे कर दिए जाएँगे"*

**तफ़्सीर जलालैन Q75:9** औरसूर्य और चंद्रमा को एक साथ कर दिया जाएगा, अर्थात दोनों पश्चिम से उदय होंगे; यानि इसका अर्थ यह है कि दोनों का प्रकाश समाप्त हो जाएगा—और यह सब क़ियामत के दिन होगा।

## वर्तमान वैज्ञानिक समझ

चंद्रमा का प्रकाश सूर्य से आता है। सूर्य का व्यास चंद्रमा से लगभग 400 गुना बड़ा है।

# ASTRONOMY: THE SUN ROTATES

**BOOK REFERENCE (SCIENTIFIC FACT / MIRACLE)**

The Qur'an and Modern Science: Compatible or Incompatible? Page 11

**QUOTED AAYAA AND EXPLANATION OFFERED**

For a long time, European philosophers and scientists believed that the earth stood still in the centre of the universe and every other body including the sun moved around it.

*"It is He Who created the Night and the Day, and the sun and the moon: All (the celestial bodies) swim along, each in its rounded course."* **[Al-Qur'an 21:33]**

*"It is not permitted to the Sun to catch up the Moon, nor can the Night outstrip the Day: Each (just) swims along in (its own) orbit (according to Law)."***[Al-Qur'an 36:40]**

This verse mentions a fact discovered recently by modern astronomy, i.e. the existence of the individual orbits of Sun and Moon, and their journey through space with their own motion.

**ENGLISH TRANSLATION WILLIAM PICKTHALL**

**Q21:33***"And He it is Who created the night and the day, and the sun and the moon. They float, each in an orbit"*

# खगोलविज्ञान: सूर्य घूमता है

**<u>पुस्तक संदर्भ (चमत्कार / वैज्ञानिक तथ्य)</u>**

क़ुरआन और आधुनिक विज्ञान अनुकूल या असंगत? पृष्ठ 11

**<u>उद्धृत आयत और दी गई व्याख्या</u>**

काफी लंबे समय तक, यूरोपीय दार्शनिक और वैज्ञानिक यह मानते थे कि पृथ्वी ब्रह्मांड के केंद्र में स्थिर है और अन्य सभी खगोलीय पिंड, जिसमें सूर्य भी शामिल है, उसके चारों ओर घूमते हैं।

*"वही है जिसने रात और दिन, और सूर्य और चाँद को बनाया: सभी (खगोलीय पिंड) तैरते रहते हैं, प्रत्येक अपनी गोलाकार गति में।"* [**अल-क़ुरआन 21:33**]

*"सूर्य को चाँद को पकड़ना मनाहै, और न ही रात दिन से आगे निकल सकती है: प्रत्येक (सिर्फ) अपनी कक्षा में तैरता रहता है (कानून के अनुसार)।"* [**अल-क़ुरआन 36:40**]

यह आयत आधुनिक खगोल विज्ञान द्वारा हाल ही में खोजे गए तथ्य का उल्लेख करती है, अर्थात सूर्य और चाँद की व्यक्तिगत कक्षाओं का अस्तित्व, और उनके अपने गति के साथ अंतरिक्ष में यात्रा।

**<u>हिंदी अनुवाद फ़ारूक़ ख़ान और नदवी</u>**

**Q21:33** *"वही है जिसने रात और दिन बनाए और सूर्य और चन्द्र भी। प्रत्येक अपने-अपने कक्ष में तैर रहा है"*

**Q36:40***"It is not for the sun to overtake the moon, nor doth the night outstrip the day. They float each in an orbit*"

**ENGLISH TRANSLATION SAHIH INTERNATIONAL**

**Q21:33***"And it is He who created the night and the day and the sun and the moon; all [heavenly bodies] in an orbit are swimming"*

**Q36:40***"It is not allowable for the sun to reach the moon, nor does the night overtake the day, but each, in an orbit, is swimming"*

**TAFSIR IBN KATHIR**

**Q21:33** and the sun and the moon,

the sun with its own light and its own path and orbit and allotted time, and the moon which shines with a different light and travels on a different path and has its own allotted time. each in an orbit floating. Means, revolving. Ibn Abbas said, "They revolve like a spinning wheel, in a circle."

**Q36:40** Qatadah said: (on its fixed course for a term (appointed)) means, "It has an appointed time and it will not go beyond that." It was also said that; this means, it keeps moving in its summer orbit for a certain time, and it does not exceed that, then it moves to its winter orbit for a certain time, and it does not exceed that.

**Q36:40** *"न सूर्य ही से हो सकता है कि चाँद को पकड़ ले और न रात दिन से आगे बढ़ सकती है। सब एक-एक कक्षा में तैर रहे हैं"*

## उर्दू अनुवाद फ़ारूक़ ख़ान और नदवी

**Q21:33** *"और वही वह (क़ादिरे मुत्तलिक़) है जिसने रात और दिन और आफ़ताब और माहताब को पैदाकिया कि सबके सब एक (एक) आसमान में पैर कर चक्कर लगारहे हैं"*

**Q36:40** *"न तो आफताब ही से ये बन पड़ता है कि वह माहताब को जाले और न रात ही दिन से आगे बढ़ सकती है (चाँद, सूरज, सितारे) हर एक अपने-अपने आसमान (मदार) में चक्कर लगारहें हैं"*

## तफ़्सीर इब्न कसीर

**Q21:33** औऱ सूर्य और चाँद, सूर्य अपनी खुद की रोशनी, अपनी कक्षा और निर्धारित समय के साथ चलता है, और चाँद अलग रोशनी के साथ चलता है, अपनी अलग कक्षा में और अपने निर्धारित समय के अनुसार। प्रत्येक अपनी कक्षा में तैरते हुए है, अर्थात घूमते हुए। इब्न अब्बास ने कहा, "वे घूमते हैं जैसे घूमती हुई चक्की, गोलाकार में।"

**Q36:40** कतादाह ने कहा: (अपनी निर्धारित कक्षा में, एक निश्चित समय तक) का अर्थ है, "इसका एक निर्धारित समय है और यह उसके पार नहीं जाएगा।" यह भी कहा गया कि इसका अर्थ यह है कि यह अपने ग्रीष्मकालीन मार्ग में एक निश्चित समय तक चलता है और उस समय से आगे नहीं बढ़ता, फिर यह अपने शीतकालीन मार्ग में एक निश्चित समय तक चलता है और उस समय से आगे नहीं बढ़ता।

## TAFSIR JALALAYN

**Q21:33** And He it is Who created the night and the day, and the sun and the moon, each in an orbit, a circular [one] like a mill in the sky, swimming, moving with speed, like a swimmer in water.

**Q36:40** It does not behove - it is [neither] facilitated nor is it right for - the sun to catch up with the moon, and so appear together with it at night, nor may the night outrun the day, and thus it [the night] never arrives before the latter ends and each [of these] is in an orbit, swimming, moving — these [celestial bodies] are being treated as [though they were] rational beings.

## OTHER REFERENCES IN ISLAMIC TEXT ON RELATED TOPIC

**Sahih al-Bukhari 3199:** The Prophet (ﷺ) asked me at sunset, "Do you know where the sun goes (at the time of sunset)?" I replied, "Allah and His Apostle know better." He said, "It goes (i.e. travels) till it prostrates Itself underneath the Throne and takes the permission to rise again, and it is permitted and then (a time will come when) it will be about to prostrate itself but its prostration will not be accepted, and it will ask permission to go on its course but it will not be permitted, but it will be ordered to return whence it has come and so it will rise in the west.

## तफ़्सीर जलालैन

**Q21:33** और वही है जिसने रात और दिन, और सूर्य और चाँद को बनाया; प्रत्येक अपनी कक्षा में है, एक गोलाकार मार्ग में, जैसे आकाश में घूमते हुए चक्की का पहिया, तैरते हुए, गति के साथ चलते हुए, जैसे पानी में तैरने वाला।

**Q36:40** सूर्य का चाँद को पकड़ना उचित नहीं है; न यह संभव है और न ही सही कि सूर्य रात में चाँद के साथ दिखाई दे। न ही रात दिन से आगे निकल सकती है; इसलिए रात कभी दिन से पहले नहीं आती। और प्रत्येक अपनी कक्षा में है, तैरते हुए, चलते हुए – इन्हें जैसे तर्कशील प्राणी माना गया है।

## इस्लामी धर्मग्रंथों में संबंधित विषय पर अन्य संदर्भ

**हदीस सहीह बुखारी 3199:** "पैग़म्बर मुहम्मद (ﷺ) ने मुझसे सूर्यास्त के समय पूछा, 'क्यातुम जानते हो कि सूर्य (सूर्यास्त के समय) कहाँ जाता है?' मैंने उत्तर दिया, 'अल्लाह और उनके रसूल बेहतर जानते हैं।' उन्होंने कहा, 'यह (यानी सूर्य) तब तक चलता है जब तक कि यह अरश (सिंहासन) के नीचे सिज्दा नहीं करता और फिर उगने की अनुमति नहीं लेता। और इसे अनुमति दी जाती है, फिर (एक समय आएगा जब) यह सिज्दा करने वाला होगा लेकिन उसकी सिज्दा स्वीकार नहीं की जाएगी। यह अनुमति मांगेगा कि अपनी कक्षा में चले, लेकिन उसे अनुमति नहीं दी जाएगी। फिर इसे आदेश दिया जाएगा कि जहाँ से आया है वहाँ लौट जाए और फिर पश्चिम से उगेगा।

And that is the interpretation of the Statement of Allah: "And the sun Runs its fixed course For a term (decreed). that is The Decree of (Allah) The Exalted in Might, The All- Knowing." (Q36:38)

**Hadith concerning changes in weather is as following:**

**Sahih al-Bukhari 3260:** Allah's Apostle (ﷺ) said, "The (Hell) Fire complained to its Lord saying, 'O my Lord! My different parts eat up each other.' So, He allowed it to take two breaths, one in the winter and the other in summer, and this is the reason for the severe heat and the bitter cold you find (in weather). [Similar hadiths: Sahih Bukhari 536, 537, Sahih Muslim 617a, Sunan Ibn Majah 4319, Jami` at-Tirmidhi 2592]

**PRESENT SCIENTIFIC KNOWLEDGE**

The Sun, a member of the Milky Way galaxy, revolves around the centre of its galaxy in a roughly elliptical orbit. It takes approximately 225–250 million years to complete one full orbit, a period known as a galactic year.

और यही अल्लाह के इस कथन की व्याख्या है: "और सूर्य अपनी निर्धारित कक्षा में चलता है, एक निश्चित अवधि तक। यही है अल्लाह, महाशक्तिशाली और सर्वज्ञानी का विधान।'" [Q36:38]

**मौसम में होने वाले परिवर्तनों से संबंधित हदीस:**

**सहीह अल-बुख़ारी 3260:** पैग़म्बर मुहम्मद (ﷺ) ने फ़रमाया: "जहन्नम ने अपने रब से शिकायत की और कहा: 'ऐ मेरे रब! मेरे कुछ हिस्से कुछ हिस्सों को खा रहे हैं।' तो अल्लाह ने उसे दो साँसें लेने की अनुमति दी—एक सर्दी में और एक गर्मी में। इसी कारण तुम (मौसम में) तीव्र गर्मी और कड़ाके की ठंड महसूस करते हो।" [इसी अर्थ की हदीसें: सहीह अल-बुख़ारी 536, 537; सहीह मुस्लिम 617a; सुनन इब्न माजह 4319; जामे-अत-तिर्मिज़ी 2592]

## वर्तमान वैज्ञानिक समझ

सूर्य, जो कि मिल्की वे आकाशगंगा का सदस्य है, अपनी आकाशगंगा के केंद्र के चारों ओर लगभग अण्डाकार कक्षा में परिक्रमाकरता है। इसे पूरी कक्षा पूरी करने में लगभग 225–250 मिलियन वर्ष लगते हैं, जिसे आकाशगंगा वर्ष कहा जाता है।

# THE SUN WILL EXTINGUISH

**BOOK REFERENCE (SCIENTIFIC FACT / MIRACLE)**

The Qur'an and Modern Science: Compatible or Incompatible? Page 14-15

**QUOTED AAYAA AND EXPLANATION OFFERED**

The light of the sun is due to a chemical process on its surface that has been taking place continuously. It will come to an end at some point of time in the future, when the sun will be totally extinguished.

*"And the Sun runs its course for a period determined for it; that is the decree of (Him) the exalted in Might, the All-Knowing."***[Al-Qur'an 36:38]**

The Qur'an says that the sun runs towards a determined place, and will do so only up to a pre-determined period of time meaning that it will end or extinguish.

**ENGLISH TRANSLATION WILLIAM PICKTHALL**

**Q36:38***"And the sun runneth on unto a resting-place for him. That is the measuring of the Mighty, the Wise"*

**ENGLISH TRANSLATION SAHIH INTERNATIONAL**

**Q36:38***"And the sun runs [on course] toward its stopping point. That is the determination of the Exalted in Might, the Knowing"*

# सूर्य बुझ जाएगा

**<u>पुस्तक संदर्भ (वैज्ञानिक तथ्य / चमत्कार)</u>**

क़ुरआन और आधुनिक विज्ञान अनुकूल या असंगत? पृष्ठ 14-15

**<u>उद्धृत आयत और दी गई व्याख्या</u>**

सूर्य का प्रकाश उसकी सतह पर निरंतर चल रही एक रासायनिक प्रक्रिया के कारण उत्पन्न हो रहा है। यह प्रक्रिया भविष्य में किसी समय समाप्त हो जाएगी, और तब सूर्य पूरी तरह बुझ जाएगा।

*"औरसूर्य अपने लिए निर्धारित मार्ग पर चल रहा है; यही उस सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ (अल्लाह) का आदेश है।"* **[क़ुरआन 36:38]**

क़ुरआन यह बताता है कि सूर्य एक निश्चित गंतव्य की ओर अग्रसर है और वह केवल एक निर्धारित अवधि तक ही ऐसा करेगा, जिसका अर्थ यह है कि एक समय आएगा जब सूर्य समाप्त हो जाएगा या बुझ जाएगा।

**<u>हिंदी अनुवाद फ़ारूक़ ख़ान और नदवी</u>**

**Q36:38** *"और सूर्य अपने नियत ठिकाने के लिए चल जा रहा है। यह बाँधा हुआ हिसाब है प्रभुत्वशाली, ज्ञानवान का।"*

**<u>उर्दू अनुवाद फ़ारूक़ ख़ान और नदवी</u>**

**Q36:38** *"और (एक निशानी) आफ़ताब है जो अपने एक ठिकाने पर चल रहा है। यह (सबसे) ग़ालिब वाक़िफ (ख़ुदा) का (बाँधा हुआ) अंदाज़ है।"*

**TAFSIR IBN KATHIR**

And the sun runs on its fixed course for a term (appointed). That is the decree of the Almighty, the All Knowing. There are two views over the meaning of the phrase (on its fixed course for a term (appointed)).

- The first view is that it refers to its fixed course of location, which is beneath the Throne, beyond the earth in that direction.

- The second view is that this refers to when the sun's appointed time comes to an end, which will be on the Day of Resurrection, when its fixed course will be abolished, it will come to a halt and it will be rolled up.

This world will come to an end, and that will be the end of its appointed time. This is the fixed course of its time.

**TAFSIR JALALAYN**

And the sun [which] runs (from wa'l-shamsutajrī to the end [of the statement] is subsumed by [the introductory] wa-āyatunlahum, 'and a sign for them'; alternatively, it constitutes another sign [for them]; similar is the case with wa'l-qamara, 'and the moon' [further below]) to its resting-place, in other words, it does not overstep it. That, namely, its running, is the ordaining of the Mighty, in His kingdom, the Knower, of His creation.

## तफ़्सीर इब्न कसीर

औरसूर्य अपनी निर्धारित कक्षा में, एक निश्चित समय तक चलता है। यही है सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञानी अल्लाह का विधान। "अपनी निर्धारित कक्षा में, एक निश्चित समय तक" के अर्थ को लेकर दो मत हैं:

- पहला मत यह है कि इसका तात्पर्य सूर्य की स्थितिगत कक्षा से है, जो कि अरश (सिंहासन) के नीचे, पृथ्वी से उस दिशा में है।
- दूसरा मत यह है कि इसका तात्पर्य उस समय से है जब सूर्य का निर्धारित समय समाप्त हो जाएगा, जो क़ियामत के दिन होगा। उस समय इसकी निर्धारित कक्षा समाप्त कर दी जाएगी, यह रुक जाएगा और साँप की तरह लपेट दिया जाएगा (रोल अप किया जाएगा)। इस संसार का अंत हो जाएगा, और यही इसके निर्धारित समय का अंत होगा। यही इसकी समय की निश्चित कक्षा है।

## तफ़्सीर जलालैन

औरसूर्य, जो चलता है (वल-शम्सुतग्री ... से लेकर बयान के अंत तक), उनके लिए एक निशानी के रूप में है; वैकल्पिक रूप से, यह उनके लिए एक और निशानी है। इसी तरह चाँद (वल-क़मर) का भी मामला है।

सूर्य अपनी विश्राम-स्थान तक चलता है, अर्थात् यह इसे पार नहीं करता। यही, अर्थात् इसका चलना, सर्वशक्तिमान, अपने राज्य में, सर्वज्ञानी द्वारा निर्धारित किया गया है, उनके सृष्टि के ज्ञान के अनुसार।

**According to Islamic texts, the Day of Resurrection (Qiyamat) is imminent.**

**Sahih Muslim 2950:** Sahl bin Sa'd that he heard Allah's Messenger (ﷺ) as saying: I and the Last Hour are (close to each other) like this (and he, in order to explain it) pointed (by joining his) forefinger, (one) next to the thumb and the middle finger (together).

**Sahih Muslim 2952:** A'isha (R.A.) reported that when the desert Arabs came to Allah's Messenger (ﷺ) they asked about the Last Hour as to when that would come. And he looked towards the youngest amongst them and said: If he lives, he would not grow very old that he would find your Last Hour coming to you (he would see you dying).

## PRESENT DAY SCIENTIFIC KNOWLEDGE

The Sun, currently 4.6 billion years old, has about 5 billion years left as a main-sequence star. Then it will expand into a red giant, shed its outer layers, and its core will become a white dwarf. Over trillions of years, it will cool and eventually extinguish.

**इस्लामी ग्रंथों के अनुसार क़ियामत बहुत शीघ्र आने वाली है।**

**सहीह मुस्लिम 2950:** सहल बिन साद ने वर्णित किया कि उन्होंने अल्लाह के पैग़म्बर (ﷺ) को कहते सुना:"मैं और आख़िरी घड़ी (क़ियामत) एक-दूसरे के बहुत नज़दीक हैं," और उन्होंने इसे समझाने के लिए अपनी अंगूठे, तर्जनी और मध्यमा अंगुली को जोड़कर दिखाया।

**सहीह मुस्लिम 2952:** आइशा (रज़ि) ने बताया कि जब बरे गिस्तानी अरब पैग़म्बर (ﷺ) के पास आए, तो उन्होंने उनसे पूछा कि आख़िरी घड़ी (क़ियामत) कब आएगी। पैग़म्बर (ﷺ) ने उनके सबसे छोटे सदस्य की ओर देखकर कहा: "अगर वह जीवित रहेगा, तो वह इतना बूढ़ा नहीं होगा कि तुम्हारी आख़िरी घड़ी (क़ियामत) आने को देख सके।" (मतलब, वह तुम्हें मरते हुए नहीं देख पाएगा।)

## वर्तमान वैज्ञानिक समझ

सूर्य, जो वर्तमान में लगभग 4.6 अरब वर्ष का है, के पास मुख्य श्रेणी का जीवन लगभग 5 अरब वर्ष और बचा है। इसके बाद यह लाल दानव में परिवर्तित होगा, अपनी बाहरी परतें छोड़ देगा, और इसका केंद्र श्वेत बौना बन जाएगा। खरबों वर्षों में यह ठंडा होकर अंततः बुझ जाएगा।

# INTER-STELLAR MATTER

**BOOK REFERENCE (SCIENTIFIC FACT / MIRACLE)**

The Qur'an and Modern Science: Compatible or Incompatible? Page 15

**QUOTED AAYAA AND EXPLANATION OFFERED**

Space outside organized astronomical systems was earlier assumed to be a vacuum. Astrophysicists later discovered the presence of bridges of matter in this interstellar space.

*"He Who created the heavens and the earth and all that is between."***[Al-Qur'an 25:59]**

This verse suggests that the presence of interstellar galactic material was known 1400 years ago.

**ENGLISH TRANSLATION WILLIAM PICKTHALL**

**Q25:59***"Who created the heavens and the earth and all that is between them in six Days, then He mounted the Throne. The Beneficent! Ask anyone informed concerning Him"*

**ENGLISH TRANSLATION SAHIH INTERNATIONAL**

**Q25:59***"He who created the heavens and the earth and what is between them in six days and then established Himself above the Throne - the Most Merciful, so ask about Him one well informed"*

# अंतर-तारकीय पदार्थ

**<u>पुस्तक संदर्भ (वैज्ञानिक तथ्य / चमत्कार)</u>**

क़ुरआन और आधुनिक विज्ञान अनुकूल या असंगत? पृष्ठ 15

**<u>उद्धृत आयत और दी गई व्याख्या</u>**

पहले यह माना जाता था कि संगठित खगोलीय प्रणालियों (जैसे तारे और आकाशगंगाएँ) के बाहर का अंतरिक्ष पूर्णतः निर्वात है। बाद में खगोल-भौतिकविदों ने यह खोज की कि अंतरतारकीय अंतरिक्ष में पदार्थ की सेतुएँ विद्यमान हैं।

*"वही है जिसने आकाशों और पृथ्वी को तथा जो कुछ उनके बीच है, सब को पैदा किया।"* **[क़ुरआन 25:59]**

यह आयत इस बात का संकेत देती है कि अंतरतारकीय पदार्थ की मौजूदगी का ज्ञान आज से लगभग 1400 वर्ष पहले भी था।

**<u>हिंदी अनुवाद फ़ारूक़ ख़ान और नदवी</u>**

**Q25:59** *"जिसने आकाशों और धरती को और जो कुछ उन दोनों के बीच है छह दिनों में पैदाकिया, फिर सिंहासन पर विराजमान हुआ। रहमान है वह! अतः पूछो उससे जो उसकी ख़बर रखता है"*

**<u>उर्दू अनुवाद फ़ारूक़ ख़ान और नदवी</u>**

**Q25:59** *"जिसने सारे आसमान व ज़मीन और जो कुछ उन दोनों में है छह: दिन में पैदाकिया फिर अर्श (के बनाने) पर आमादा हुआ और वह बड़ा मेहरबान है तो तुम उसका हाल किसी बाख़बर ही से पूछना"*

**TAFSIR IBN KATHIR**

Who created the heavens and the earth... means, He is the Ever-Living Who never dies, He is the Creator, Sustainer and Sovereign of all things, Who by His might and power created the seven heavens with their vast height and width, and the seven earths with their great depths and density. And all that is between them, in six Days.

**TAFSIR JALALAYN**

He it is, Who created the heavens and the earth and all that is between them in six days, of the [length of the] days of this world, since there was no sun at that point — had He willed He could have created them in an instant, but His not having done so is because He will to teach His creatures to be circumspect — then presided upon the Throne (al-'arsh in the [classical] language is the seat on which a king sits) the Compassionate One (al-rahmānu substitutes for the subject of [the verb] istawā, 'presided') a presiding befitting of Him; so ask, O man, about Him, about the Compassionate One, anyone who is well aware, to inform you about His attributes!

## तफ़्सीर इब्न कसीर

"जिसने आकाशों और पृथ्वी को पैदाकिया..." इसका अर्थ यह है कि वही सदैव जीवित है, जो कभी मृत्यु को प्राप्त नहीं होता। वही सृष्टिकर्ता, पालनहार और संपूर्ण सृष्टि का अधिपति है। उसी ने अपनी शक्ति और सामर्थ्य से सात आकाशों को उनकी महान ऊँचाई और विस्तार के साथ, तथा सात पृथ्वियों को उनकी गहन गहराई और सघनता के साथ पैदाकिया। और जो कुछ उनके बीच है, उसे भी उसने छः दिनों में रचा।

## तफ़्सीर जलालैन

वही है जिसने आकाशों और पृथ्वी को तथा जो कुछ उनके बीच है, सब को छः दिनों में पैदाकिया — ये दिन इस संसार के दिनों की अवधि के अनुसार थे, क्योंकि उस समय सूर्य मौजूद नहीं था। यदि वह चाहता तो उन्हें एक ही क्षण में पैदाकर सकता था, लेकिन ऐसा न करने का उद्देश्य यह था कि वह अपनी सृष्टि को धैर्य और क्रमबद्धता का पाठ पढ़ाना चाहता था। फिर वह अर्श पर प्रतिष्ठित हुआ। (शास्त्रीय भाषा में अर्श उस आसन को कहा जाता है जिस पर राजा बैठता है।) वह है अत्यंत कृपालु (अर-रहमान) — यह शब्द इस्त्वा (प्रतिष्ठित होना) की क्रिया के कर्ता के रूप में आया है — और उसकी यह प्रतिष्ठा उसी के शान के अनुरूप है। अतः, हे मनुष्य! उसके बारे में, उस कृपालु के बारे में, किसी ऐसे जानकार से पूछो जो उसके गुणों और विशेषताओं से भली-भांति परिचित हो, ताकि वह तुम्हें उसकी विशेषताओं की जानकारी दे सके।

## OTHER REFERENCES IN ISLAMIC TEXT ON RELATED TOPIC

**Tafsir Quran Jalalayn [Q50:38]** And verily We created the heavens and the earth, and all that is between them, in six days, the first of which was Sunday and the last of which was Friday, and no weariness, no fatigue, touched Us: this was revealed as a refutation of the Jews' claim that God rested on the Saturday and lay down upon the Throne.

**We get the following information regarding what is between heaven and earth in Hadiths.**

**Sahih Muslim 223:** The Messenger of Allah (ﷺ) said: Cleanliness is half of faith and al-Hamdu Lillah (all praise and gratitude is for Allah alone) fills the scale, and Subhan Allah (Glory be to Allah) and al-Hamdu Lillah fill up what is between the heavens and the earth, and prayer is a light, and charity is proof (of one's faith) and endurance is a brightness and the Holy Qur'an is a proof on your behalf or against you. All men go out early in the morning and sell themselves, thereby setting themselves free or destroying themselves.

**Jami at-Tirmidhi 2531:** The Messenger of Allah (ﷺ) said: "In Paradise, there are a hundred levels, what is between every two levels is like what is between the heavens and the earth. Al-Firdaus is its highest level, and from it the four rivers of Paradise are made to flow forth. So when you ask Allah, ask Him for Al-Firdaus." (Sahih)

**<u>इस्लामी धर्मग्रंथों में संबंधित विषय पर अन्य संदर्भ</u>**

**तफ़्सीर क़ुरआन जलालैन (Q50:38):** और निश्चय ही हमने आकाशों और पृथ्वी को तथा जो कुछ उनके बीच है, छः दिनों में पैदाकिया — जिनमें पहला दिन रविवार था और अंतिम दिन शुक्रवार — और हमें किसी प्रकार की थकान या श्रम ने स्पर्शन नहीं किया। यह आयत यहूदियों के उस दावे के खंडन में उतारी गई कि अल्लाह ने रविवार के दिन विश्राम किया और अर्श पर लेट गया।

**हदीसों में आकाश (स्वर्ग) और पृथ्वी के बीच जो कुछ है, उसके बारे में जानकारी:**

**सहीह मुस्लिम 223:** पैग़म्बर मुहम्मद (ﷺ) ने फ़रमाया: "पवित्रता (सफ़ाई) ईमान का आधा हिस्सा है। अल-हम्दुलिल्लाह (सारी प्रशंसा केवल अल्लाह के लिए है) तराज़ू को भर देती है। और सुब्हान अल्लाह (अल्लाह पाक है) तथा अल-हम्दुलिल्लाह आकाशों और पृथ्वी के बीच की सारी जगह को भर देते हैं। नमाज़ नूर (प्रकाश) है, सदक़ा ईमान की दलील है, और सब्र रोशन चमक है। और पवित्र क़ुरआन यातो तुम्हारे पक्ष में दलील बनेगा, तुमारे विरुद्ध। हर इंसान सुबह निकलता है और अपने आप को बेचता है — या तो वह अपने आप को आज़ाद कर लेता है या स्वयं को विनाश में डाल देता है।"

**जामे़ तिर्मिज़ी 2531:** पैग़म्बर मुहम्मद (ﷺ) ने फ़रमाया: "जन्नत में सौ दर्जे हैं। हर दो दर्जों के बीच वही सब मौजूद है, जैसा कि आकाशों और पृथ्वी के बीच मौजूद है। अल-फ़िरदौस जन्नत का सबसे ऊँचा दर्जा है, और उसी से जन्नत की चार नहरें निकलती हैं। अतः जब तुम अल्लाह से माँगो, तो उससे अल-फ़िरदौस माँगो।" (सहीह)

# THE EXPANDING UNIVERSE

**BOOK REFERENCE (SCIENTIFIC FACT / MIRACLE)**

The Qur'an and Modern Science: Compatible or Incompatible? Page 16

**QUOTED AAYAA AND EXPLANATION OFFERED**

In 1925, American astronomer Edwin Hubble, provided observational evidence that all galaxies are moving away from one another, which implies that the universe is expanding. This is what the Qur'an says:

*"With power and skill did We construct the Firmament: For it is We Who create the vastness of Space."***[Al-Qur'an 51:47]**

The Arabic word musioon is correctly translated as 'expanding it', and it refers to the creation of the expanding vastness of the universe.

**ENGLISH TRANSLATION WILLIAM PICKTHALL**

**Q51:47***"We have built the heaven with might, and We it is Who make the vast extent (thereof)"*

**ENGLISH TRANSLATION SAHIH INTERNATIONAL**

**Q51:47***"And the heaven We constructed with strength, and indeed, We are [its] expander"*

# निरंतर विस्तारित होता ब्रह्मांड

**<u>पुस्तक संदर्भ (वैज्ञानिक तथ्य / चमत्कार)</u>**

क़ुरआन और आधुनिक विज्ञान अनुकूल या असंगत? पृष्ठ 16

**<u>उद्धृत आयत और दी गई व्याख्या</u>**

1925 में अमेरिकी खगोलशास्त्री एडविन हबल ने प्रेक्षणात्मक प्रमाण प्रस्तुत किया कि सभी आकाशगंगाएँ एक-दूसरे से दूर जा रही हैं, जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि ब्रह्मांड का विस्तार हो रहा है। यही बात क़ुरआन में भी कही गई है:

*"और हमने आकाश को शक्ति और कौशल के साथ बनाया, और निश्चय ही हम ही उसका विस्तार करने वाले हैं।"* **[क़ुरआन 51:47]**

अरबी शब्द **"**मूसीऊन**"** का सही अर्थ "विस्तार करने वाले" है, और यह ब्रह्मांड की निरंतर विस्तृत होती हुई विशालता और रचना की ओर संकेत करता है।

**<u>हिंदी अनुवाद फ़ारूक़ ख़ान और नदवी</u>**

**Q51:47** *"आकाश को हमने अपने हाथ के बल से बनाया और हम बड़ी समाई रखने वाले हैं"*

**<u>उर्दू अनुवाद फ़ारूक़ ख़ान और नदवी</u>**

**Q51:47** *"और हमने आसमानों को अपने बल बूते से बनाया और बेशक हम में सब क़ुदरत है"*

**TAFSIR IBN KATHIR**

Allah reminds us of the creating of the higher and lower worlds, We constructed the heaven. meaning, `We made it as a high roof, protected from falling,'

with Hands, meaning, with strength, according to Abdullah bin Abbas, Mujahid, Qatadah, Ath-Thawri and several others, Verily, We are able to extend the vastness of space thereof means, `We made it vast and We brought its roof higher without pillars to support it, and thus it is hanging independently.'

**TAFSIR JALALAYN**

And the heaven, We built it with might, and indeed We are powerful (one says āda'l-rajulu or ya'īdu, to mean, 'he is strong'; and awsa'a'l-rajulu, to mean, 'he has become capable [dhūsa'a] and strong').

**OTHER REFERENCES IN ISLAMIC TEXT ON RELATED TOPIC**

Distance between various heaven, between earth and heaven has been mentioned in various hadith.

**Hadith at-Tirmidhi 2588:** The Messenger of Allah (ﷺ) said "If a pellet like this one, and he pointed to one like Al-jumjumah were to be dropped from the heavens to the earth – and it is the distance of traveling five hundred years it would reach the earth before the night-fall. But if it were dropped from the top of the chain it would travel for forty years, day and night, before it would reach its foundation or bottom." (Hasan)

## तफ़्सीर इब्न कसीर

अल्लाह हमें ऊपरी और निचली दुनियाओं की सृष्टि की याद दिलाता है। "हमने आकाश को बनाया" – अर्थात हमने उसे एक ऊँची छत के रूप में बनाया, जो गिरने से सुरक्षित है। "हाथों से" का अर्थ है शक्तिके साथ, जैसा कि अब्दुल्लाह बिन अब्बास, मुजाहिद, क़तादा, अथ-थौरी और अन्य कई विद्वानों ने बताया है। "निश्चय ही हम इसे विस्तृत करने वाले हैं" – अर्थात हमने इसे विशाल बनाया और उसकी छत को बिना किसी स्तंभ के सहारे ऊँचा किया, और इस प्रकार वह स्वतंत्र रूप से स्थिर (लटकी हुई) है।

## तफ़्सीर जलालैन

"और आकाश को हमने शक्ति के साथ बनाया, और निश्चय ही हम समर्थ और शक्तिशाली हैं।" (कहा जाता है: आदा अल-रजुलु यायाईद अर्थात 'वह शक्तिशाली है'; और अव्सा' अल-रजुलु — अर्थात 'वह सामर्थ्यवान और सक्समहोगया', यानी धूसा' और शक्तिशाली।)

## इस्लामी धर्मग्रंथों में संबंधित विषय पर अन्य संदर्भ

विभिन्न हदीसों में पृथ्वी और आकाश (स्वर्ग) के बीच की दूरी तथा एक आकाश से दूसरे आकाश के बीच की दूरी का उल्लेख मिलता है।

**हदीस (जामे़ तिर्मिज़ी 2588):** पैग़म्बर मुहम्मद (ﷺ) ने फ़रमाया: "यदि इस तरह का एक छोटा सांक (और आपने जुमजुम के आकार की ओर इशारा किया) आकाश से पृथ्वी की ओर गिराया जाए तो यह दूरी पाँच सौ वर्षों की यात्रा के बराबर है और वह रात होने से पहले ही पृथ्वी तक पहुँच जाएगा। लेकिन यदि इसे उस श्रृंखला के ऊपरी सिरे से गिराया जाए, तो वह दिन-रात चलते हुए चालीस वर्षों तक यात्रा करता रहेगा, तब जाकर उसकी जड़ यानि निचले सिरे तक पहुँचेगा।" (हसन)

# PHYSICS: ATOMS CAN BE DIVIDED

**BOOK REFERENCE (SCIENTIFIC FACT / MIRACLE)**

The Qur'an and Modern Science: Compatible or Incompatible? Page 18

**QUOTED AAYAA AND EXPLANATION OFFERED**

In recent times modern science has discovered that it is possible to split even an atom.

*"The Unbelievers say, 'Never to us will come The Hour': say, 'Nay! but most surely, by my Lord, it will come upon you by Him Who knows the unseen from Whom is not hidden the least little atom in the Heavens or on earth: nor is there anything less than that, or greater, but is in the Record Perspicuous.'"* **[Al-Qur'an 34:3]**

Thus, the verse clearly shows that it is possible for something smaller than the atom to exist.

**ENGLISH TRANSLATION WILLIAM PICKTHALL**

Q34:3 *"Those who disbelieve say: The Hour will never come unto us. Say: Nay, by my Lord, but it is coming unto you surely. (He is) the Knower of the Unseen. Not an atom's weight, or less than that or greater, escapeth Him in the heavens or in the earth, but it is in a clear Record"*

# भौतिकी: परमाणुओं को विभाजित किया जा सकता है

**<u>पुस्तक संदर्भ (वैज्ञानिक तथ्य / चमत्कार)</u>**

क़ुरआन और आधुनिक विज्ञान अनुकूल या असंगत? पृष्ठ 18

**<u>उद्धृत आयत और दी गई व्याख्या</u>**

आधुनिक समय में विज्ञान ने यह खोज कर लिया है कि यहाँ तक कि परमाणु (एटम) को भी विभाजित किया जा सकता है।

*"और काफ़िर कहते हैं: 'हमपर क़ियामत तक नहीं आएगी।' कह दीजिए: 'क्यों नहीं! मेरे रब की क़सम, वह अवश्य तुम पर आएगी, वह जो प्रोषक जानने वाला है। आकाशों और धरती में उससे परमाणु के बराबर भी कोई चीज़ उससे छिपी नहीं है, और न ही उससे छोटी कोई चीज़ और न ही उससे बड़ी, मगर यह कि वह एक स्पष्ट किताब में दर्ज है।'"* **[अल-क़ुरआन 34:3]**

इस प्रकार यह आयत स्पष्ट रूप से संकेत करती है कि परमाणु से भी छोटी किसी वस्तु का अस्तित्व संभव है।

**<u>हिंदी अनुवाद (फ़ारूक़ ख़ान और नदवी(</u>**

**Q34:3** *"जिन लोगों ने इनकार किया उनका कहना है कि 'हम पर क़ियामत की घड़ी नहीं आएगी।' कह दो, 'क्यों नहीं, मेरे परोक्ष ज्ञाता रब की क़सम! वह तो तुम पर आकर रहेगी – उससे कण भर भी कोई चीज़ न तो आकाशों में ओझल है और न धरती में, और न इससे छोटी कोई चीज़ और न बड़ी। किन्तु वह एक स्पष्ट किताब में अंकित है।'"*

**ENGLISH TRANSLATION SAHIH INTERNATIONAL**

**Q34:3***"But those who disbelieve say, "The Hour will not come to us." Say, "Yes, by my Lord, it will surely come to you. [Allah is] the Knower of the unseen." Not absent from Him is an atom's weight within the heavens or within the earth or [what is] smaller than that or greater, except that it is in a clear register"*

**TAFSIR IBN KATHIR**

**Q34:3** Then Allah is described in a manner that affirms that: the All-Knower of the Unseen, not even the weight of a speck of dust or less than that or greater escapes His knowledge in the heavens or in the earth but it is in a Clear Book.

**TAFSIR JALALAYN**

**Q34:3** And those who disbelieve say, 'The Hour, the Resurrection, will never come to us'. Say, to them: 'Yes indeed, by my Lord, it shall come to you — [by] the Knower of the Unseen (read 'ālimi'l-ghaybi as an adjectival qualification [of wa-rabbī, 'by my Lord'], or read 'ālimu'l-ghaybi, as the predicate of a [missing] subject [such as huwa, 'He is']; or read 'allāmi'l-ghaybi). Not [even] the weight of an atom escapes, is hidden [from], Him in the heavens or in the earth, nor [is there] anything smaller than that or greater, but it is in a Manifest Book, namely, the Preserved Tablet (al-lawh al-mahfūz)

## उर्दू अनुवाद फ़ारूक़ ख़ान और नदवी

**Q34:3** *"और कुफ़्फ़ार कहने लगे कि हम पर तो क़ियामत आएगी ही नहीं (ऐ रसूल) तुम कह दो हाँ (हाँ) मुझको अपने उस आलिमुल-ग़ैब पर वरदिगार की क़सम है जिससे ज़र्रा बराबर (कोई चीज़) न आसमान में छिपी हुई है और न ज़मीन में कि क़ियामत ज़रूर आएगी और ज़र्रे से छोटी चीज़ और ज़र्रे से बड़ी (ग़रज़ जितनी चीज़ें हैं सब) वाज़े ए व रोशन किताब लौह-ए महफ़ूज़ में महफ़ूज़ हैं"*

## तफ़्सीर इब्न कसीर

**Q34:3** अल्लाह का परिचय इस प्रकार कराया गया है कि वह परोक्ष (ग़ैब) का सम्पूर्ण ज्ञान रखने वाला है। आकाशों और धरती में रत्ती भर (धूल के एक कण के बराबर) कोई चीज़, न उससे छोटी और न उससे बड़ी, उसके ज्ञान से छिपी नहीं है, बल्कि वह सब कुछ एक स्पष्ट किताब में दर्ज है।

## तफ़्सीर जलालैन

**Q34:3** और जिन लोगों ने इनकार किया वे कहते हैं, "हम पर क़ियामत कभी नहीं आएगी।" उनसे कह दीजिए, "क्यों नहीं! मेरे रब की क़सम, वह अवश्य तुम पर आएगी। वह ग़ैब (परोक्ष) का जानने वाला है।" ('आलिमुल-ग़ैब' को "मेरे रब" की विशेषता के रूप में भी पढ़ा गया है; यानि इसे एक निहितकर्ता—"वह है"— का विधेय माना गया है; और 'अल्लामुल-ग़ैब' भी पढ़ा गया है।) आकाशों और धरती में परमाणु के बराबर भी कोई चीज़ उससे छिपी नहीं है, और न ही उससे छोटी कोई चीज़ है और न ही उससे बड़ी, मगर यह कि वह सब कुछ एक स्पष्ट किताब में दर्ज है, अर्थात् लौह-ए महफ़ूज़ (सुरक्षित पट्टिका) में।

## OTHER REFERENCES IN ISLAMIC TEXT ON RELATED TOPIC

Classically "dharra" referred to the smallest imaginable particle (like a speck of dust), and in modern usage it is commonly understood as atom.

**Q99:7***"So whoever does an atom's weight of good will see it"*

## □□□□□□□□ □□□□□□□□□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□

पारंपरिकदृष्टिकोण में, "ज़र्रा" सबसे छोटे कल्पनीय कण को कहा जाता था, जैसे कि धूल का एक सूक्ष्म कण। आधुनिक समय में, इस शब्द को आम तौर पर "परमाणु" के अर्थ में समझा जाता है।

**Q99:7** *"तो जिस शख्स ने ज़र्रा बराबर ने की, वह उसे देख लेगा"*

# HYDROLOGY: THE WATER CYCLE

**BOOK REFERENCE (SCIENTIFIC FACT / MIRACLE)**

The Qur'an and Modern Science: Compatible or Incompatible? Page 20

**QUOTED AAYAA AND EXPLANATION OFFERED**

In 1580, Bernard Palissy was the first person to describe the present-day concept of 'water cycle'. Quran gives such an accurate description of the water cycle.

EVAPORATION

*"By the Firmament which returns (in its round),"* **[Al-Qur'an 86:11]**

WINDS IMPREGNATE CLOUDS

*"And We send the fecundating winds, then cause the rain to descend from the sky, therewith providing you with water (in abundance)."* **[Al-Qur'an 15:22]**

In this context, impregnate means that the wind pushes the clouds together increasing the condensation that causes lightning and thus rain.

# जलविज्ञान: जलचक्र

**<u>पुस्तकसंदर्भ (वैज्ञानिक तथ्य / चमत्कार)</u>**

क़ुरआन और आधुनिक विज्ञान अनुकूल या असंगत? पृष्ठ 20

**<u>उद्धृत आयत और दी गई व्याख्या</u>**

1580 ईस्वी में बर्नार्ड पालिसी पहले व्यक्ति थे जिन्होंने आधुनिक अर्थों में जलचक्र की अवधारणा का वर्णन किया। जबकि क़ुरआन में जलचक्र का अत्यंत सटीक और क्रमबद्ध उल्लेख इससे बहुत पहले मिलता है।

**वाष्पीकरण**

"और क़सम है उस आकाश की, जो बार-बार लौटाने वाला है।" [क़ुरआन 86:11]

**हवा द्वारा बादलों का संघनन**

*"और हमने गर्भधारण कराने वाली हवाएँ भेजीं, फिर आकाश से पानी बरसाया और उससे तुम्हें भरपूर पानी पिलाया।"* **[क़ुरआन 15:22]**

यहाँ गर्भधारण कराने का अर्थ यह है कि हवाएँ बादलों को एक-दूसरे की ओर धकेलती हैं, जिससे संघनन बढ़ती है, बिजली उत्पन्न होती है और फिर वर्षा होती है।

*"It is Allah Who sends the Winds, and they raise the Clouds: then does He spread them in the sky as He wills, and break them into fragments, until thou seest raindrops issue from the midst thereof: then when He has made them reach such of His servants as He wills, behold, they do rejoice!"* **[Al-Qur'an 30:48]**

RAIN & COLLECTION

**[Al-Qur'an 23:18, 30:24]**

**ENGLISH TRANSLATION WILLIAM PICKTHALL**

**Q86:11** *"By the heaven which giveth the returning rain"*

**Q15:22** *"And We send the winds fertilising, and cause water to descend from the sky, and give it you to drink. It is not ye who are the holders of the store thereof"*

**Q30:48** *"Allah is He Who sendeth the winds so that they raise clouds, and spreadeth them along the sky as pleaseth Him, and causeth them to break and thou seest the rain downpouring from within them. And when He maketh it to fall on whom He will of His bondmen, lo! they rejoice"*

**ENGLISH TRANSLATION SAHIH INTERNATIONAL**

**Q86:11** *"By the sky which returns [rain]"*

**Q15:22** *"And We have sent the fertilizing winds and sent down water from the sky and given you drink from it. And you are not its retainers"*

*"अल्लाह ही है जो हवाओं को भेजता है, वे बादलों को उठाती हैं; फिर वह उन्हें आकाश में जैसे चाहता है फैला देता है और उन्हें टुकड़ों में बाँट देता है, यहाँ तक कि तुम देखते हो कि उनके बीच से वर्षा की बूंदें निकलती हैं। फिर जब वह उसे अपने जिन बंदों पर चाहता है पहुँचादेताहै, तो वे आनंदित हो उठते हैं।"* **[क़ुरआन 30:48]**

**वर्षा और जल का संचयन [क़ुरआन 23:18, 30:24]**

## हिंदी अनुवाद फ़ारूक़ ख़ान और नदवी

**Q86:11** *"साक्षी है आवर्तन (उलट-फेर) वाला आकाश"*

**Q15:22** *"हम ही वर्षा लाने वाली हवाओं को भेजते हैं। फिर आकाश से पानी बरसाते हैं और उससे तुम्हें सिंचित करते हैं। उसके ख़ज़ानादार तुम नहीं हो"*

**Q30:48** *"अल्लाह ही है जो हवाओं को भेजता है। फिर वे बादलों को उठाती हैं; फिर जिस तरह चाहता है उन्हें आकाश में फैला देता है और उन्हें परतों और टुकड़ियों का रूप दे देता है। फिर तुम देखते हो कि उनके बीच से वर्षा की बूंदें टपकी चली आती हैं। फिर जब वह अपने बन्दों में से जिन पर चाहता है, उसे बरसाता है। तो क्या देखते हैं कि वे हर्षित हो उठे"*

## उर्दू अनुवाद फ़ारूक़ ख़ान और नदवी

**Q86:11** *"चक्कर (खाने) वाले आसमान की क़सम"*

**Q15:22** *"और हम ही ने वह हवाएँ भेजीं जो बादलों को पानी से (भरे हुए) हैं। फिर हम ही ने आसमान से पानी बरसाया। फिर हम ही ने तुम लोगों को वह पानी पिलाया और तुम लोगों ने तो कुछ उसको जमा करके नहीं रखा"*

**Q30:48***"It is Allah who sends the winds, and they stir the clouds and spread them in the sky however He wills, and He makes them fragments so you see the rain emerge from within them. And when He causes it to fall upon whom He wills of His servants, immediately they rejoice"*

**TAFSIR IBN KATHIR**

**Q86:11** By the sky (having rain clouds) which gives rain, again and again.

Ibn Abbas said, "Ar-raj` means rain."

It has also been narrated from him that he said, "It means the clouds that contain rain." He also said, (By the sky (having rain clouds) which gives rain, again and again. "This means that it rains and then it rains (again)."

Qatadah said, "It returns the sustenance of the servants (creatures) every year. Were it not for this, they would all be destroyed and so would their cattle."

**Q15:22** And We send the winds fertilizing. i.e., fertilizing the clouds so that they give rain, and fertilizing the trees so that they open their leaves and blossoms. These winds are mentioned here in the plural form because they give results, unlike the barren wind (Ar-Rih Al-'Aqim, see Adh-Dhariyat 51:41), which is mentioned in the singular and described as barren since it does not produce anything; because results can only be produced when there are two or more things.

**Q30:48** "ख़ुदा ही (क़ादिर, तवाना) है जो हवाओं को भेजता है तो वह बादलों को उड़ाए उड़ाए। फिर वही ख़ुदा बादल को जिस तरह चाहता है आसमान में फैला देता है और (कभी) उसको टुकड़े (टुकड़े) कर देता है। फिर तुम देखते हो कि बूंदियां उसके दरमियान से निकल पड़ती हैं। फिर जब ख़ुदा उन्हें अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है बरसादेता है तो वे लोग खुशियाँ मानने लगते हैं"

**<u>तफ़्सीर इब्न कसीर</u>**

**Q86:11** क़सम है उस आकाश की, जो बार-बार (वर्षा को) लौटाता है।
इब्न 'अब्बास (रज़ि.) ने कहा: 'अर-रज्' से अभिप्राय वर्षा है। उनसे यह भी वर्णित है कि इसका अर्थ वर्षा-युक्त बादल है। उन्होंने यह भी कहा: "इसका मतलब है कि बारिश होती है, फिर दोबारा होती है।"
क़तादा ने कहा: "यह हर वर्ष बंदों (सृष्टि) के लिए रिज़्क़ लौटाता है। यदि ऐसा न होता, तो लोग और उनके पशु नष्ट हो जाते।"

**Q15:22** और हमने गर्भाधान करने वाली हवाएँ भेजीं। अर्थात वे हवाएँ जो बादलों को गर्भित करती हैं, ताकि वे वर्षा करें, और वृक्षों को गर्भित करती हैं, जिससे उनमें पत्तियाँ और फूल निकलें। यहाँ हवाओं का उल्लेख बहुवचन में है, क्योंकि परिणाम तभी उत्पन्न होते हैं जब एक से अधिक तत्व हों। इसके विपरीत बाँझ हवा (अर-रीह अल-अक़ीम; Q51:41) एकवचन में आई है, क्योंकि वह कोई परिणाम नहीं देती।

Abdullah bin Mas`ud said, "The wind is sent bearing water from the sky, then it fertilizes the clouds until rain begins to generously fall, just as the milk of the pregnant camel flows generously."

This was also the opinion of Ibn Abbas, Ibrahim An-Nakha`i and Qatadah.

Ad-Dahhak said: "Allah sends it to the clouds and it gets fertilized and becomes full of water."

Ubayd bin Umayr Al-Laythi said: "Allah sends the wind which stirs up the earth, then Allah sends the wind which raises clouds, then Allah sends the wind which forms clouds, then Allah sends the fertilizing wind which pollinates the trees." Then he recited, (And We sent the winds fertilizing).

**Q30:48** Here Allah explains how He creates the clouds that rain the water. Allah is He Who sends the winds, so that they raise clouds, either from the sea, as was mentioned by more than one (of the scholars), or from whatever Allah wills.

And spread them along the sky as He wills, means, He spreads them and causes them to increase and grow. From a little He makes a lot, and creates the clouds that look like shields. Then He spreads them out until they fill the horizon. Sometimes the clouds come from the sea, heavy and full, as Allah says: And it is He Who sends the winds as heralds of glad tidings, going before His mercy.

अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने कहा: हवाएँ आकाश से पानी लेकर आती हैं, फिर बादलों को गर्भित करती हैं, यहाँ तक कि वर्षा उदारतापूर्वक बरसने लगती है—जैसे गर्भवती ऊँटनी का दूध बह निकलता है।
यही मत इब्न 'अब्बास, इब्राहीम अन-नख़ई और क़तादा का भी था।
अद-दह्हाक ने कहा: "अल्लाह हवा को बादलों की ओर भेजता है, वे गर्भित होकर पानी से भर जाते हैं।"
उबैद बिन 'उमैयर अल-लैथी ने कहा: "अल्लाह पहले वह हवा भेजता है जो धरती को हिलाती है, फिर वह हवा जो बादलों को उठाती है, फिर वह जो बादलों का गठन करती है, और फिर गर्भाधान करने वाली हवा जो पेड़ों में परागण करती है।" इसके बाद उन्होंने यह आयत पढ़ी: "और हमने गर्भाधान करने वाली हवाएँ भेजीं।"

**Q30:48** यहाँ अल्लाह स्पष्ट करता है कि वर्षा करने वाले बादल कैसे बनाए जाते हैं। अल्लाह ही हवाएँ भेजता है, जो बादलों को उठाती हैं चाहे समुद्र से हों (जैसे कि कई विद्वानों ने कहा) या जहाँ से अल्लाह चाहे।

और वह उन्हें आकाश में जैसे चाहताहै फैला देता है"— अर्थात वह उन्हें फैलाता है, बढ़ाता है; थोड़े से बहुत बना देता है, यहाँ तक कि वे ढालों जैसे बादल बन जाते हैं और क्षितिज भर देते हैं। कभी बादल समुद्र से आते हैं, भारी और पूर्ण, जैसा कि अल्लाह कहते हैं: "और वही है जो हवाओं को सुखद समाचार लाने वाले के रूप में भेजता है, अपनी रहमत से पहले चलता है।"

Till when they have carried a heavy-laden cloud, We drive it to a land that is dead until: Similarly, We shall raise up the dead, so that you may remember or take heed. (7:57) Allah says here: Allah is He Who sends the winds, so that they raise clouds and spread them along the sky as He wills, and then break them into fragments, Mujahid, Abu Amr bin Al-Ala', Matar Al-Warraq and Qatadah said, “This means pieces." Others said that it means `piled up,' as Ad-Dahhak said. Others said that it means black, because they contained so much water, and sometimes they are heavy and close to the earth.

**TAFSIR JALALAYN**

**Q86:11** By the heaven of returns, [of] the rain that returns time and again,

**Q15:22** And We send the winds as fertilisers, to fertilise the clouds, whereupon they fill up with water, and send down out of the heaven, [out of] the clouds, water, rain, so that We give it to you to drink, for you are not the storers thereof, that is, the stores thereof are not in your control.

"जब तक उन्होंने भारी-भरकम बादल ढोया, हम उसे एक मृत भूमि की ओर ले जाते हैं, ताकि... इसी प्रकार, हम मृतकों को भी उठाएँगे, ताकि तुम स्मरण कर सको या ध्यान दो।" (7:57) अल्लाह यहाँ कहते हैं: "अल्लाह वही है जो हवाओं को भेजता है, ताकि वे बादलों को उठाएँ और उन्हें आकाश में अपनी इच्छा अनुसार फैलाएँ, और फिर उन्हें टुकड़ों में तोड़ दें।"
मुझाहिद, अबू 'अम्र बिन अल-आला', मतर अल-वराक़ और क़तादा ने कहा, "इसका अर्थ है टुकड़े-टुकड़े।" कुछ अन्य ने कहा कि इसका अर्थ 'परत-दर-परत जमाना' है, जैसा कि अद-दह्हाक ने कहा। और कुछ ने कहा कि इसका अर्थ काला है, क्योंकि इनमें बहुत पानी होता है, और कभी-कभी ये भारी होकर पृथ्वी के करीब आ जाते हैं।

**<u>तफ़्सीर जलालैन</u>**

**Q86:11** क़सम है उस आकाश की, जो बार-बार लौटाने वाला है" अर्थात वह वर्षा, जो बार-बार लौटकर आती है।

**Q15:22** और हमने हवाओं को गर्भाधान करने वाला बनाकर भेजा, ताकि वे बादलों को गर्भित करें। फिर हमने आकाश से अर्थात बादलों से पानी, यानी वर्षा उतारी, और उसी से तुम्हें पीने के लिए दिया। और तुम उसके भंडारकर्ता नहीं हो अर्थात उसके भंडार तुम्हारे अधिकार में नहीं हैं।

**Q30:48** God is the One Who unleashes the winds which then raise, stir up, clouds, and He then spreads them across the heaven as He will, in small or large quantities, and He forms them into fragments (read kisafan or kisfan: 'scattered pieces') then you see the rain issuing out of them, that is, out of the midst of them. Then when He drops it, the rain, upon whomever of His servants He will, lo! they rejoice, they are happy because of the rain.

**REMARKS**

Although wind and rain are obvious natural phenomena, the evaporation process leading to cloud formation is relatively invisible. In early concepts, it was believed that clouds bring water from the sea.

However, Aristotle (384–323 BC) postulated that rainwater results from the evaporation of seawater. He suggested that as seawater evaporates into the air, it becomes "sweet," and when the vapor condenses, it does not return to its salty state.

Reference: *Aristotle & Barnes, J. (2014). Complete Works of Aristotle, Volume 1: The Revised Oxford Translation. Princeton University Press.*

**Q30:48** अल्लाह ही वह है जो हवाओं को भेजता है; वे बादलों को उठाती और हिलाती हैं। फिर वह उन्हें आकाश में जैसे चाहताहै, कम या अधिक फैलादेताहै, और उन्हें टुकड़ों में बाँट देता है (अर्थात बिखरे हुए खंड बना देता है)। तब तुम देखते हो कि उनके बीच से वर्षा की बूँदें निकलती हैं। फिर जब वह उस वर्षा को अपने जिन बंदों पर चाहताहै बरसादेताहै, तो वे प्रसन्न हो उठते हैं।

□□□□□□□

हालाँकि हवा और बारिश स्पष्ट प्राकृतिक घटनाएँ हैं, बादलों के निर्माण तक पहुँचने वाली वाष्पीकरण की प्रक्रिया अपेक्षाकृत अदृश्य है। प्रारम्भिक अवधारणाओं में यह माना जाता था कि बादल समुद्र से पानी लाते हैं।

हालांकि, अरस्तू (384–323 ई.पू.) ने यह प्रतिपादित किया कि वर्षा का पानी समुद्र के जल के वाष्पीकरण का परिणाम है। उन्होंने कहा कि जब समुद्र का पानी वायुमें वाष्प बनकर उठताहै, तो यह "मधुर" हो जाता है, और जब यह वाष्प संघनित होकर वर्षा बनताहै, तो यह फिर से नमकीन नहीं लौटता।

**संदर्भ:** अरिस्टॉटल एंड बार्न्स, जे. (2014). *कम्प्लीट वर्क्स ऑफ़ अरिस्टॉटल, वॉल्यूम 1: द रिवाइज्ड ऑक्सफ़ोर्ड ट्रांसलेशन.* प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस.

# GEOLOGY: MOUNTAINS ARE LIKE TENT PEGS

**BOOK REFERENCE (SCIENTIFIC FACT / MIRACLE)**

The Qur'an and Modern Science: Compatible or Incompatible? Page 24

**QUOTED AAYAA AND EXPLANATION OFFERED**

In geology, the phenomenon of 'folding', is a recently discovered fact. Folding is responsible for the formation of mountain ranges. It is also known that the stability of the mountains is linked to the phenomenon of folding.

*"Have We not made the earth as a wide expanse, and the mountains as pegs?"***[Al-Qur'an 78:6-7]**

The word awtaad means stakes or pegs (like those used to anchor a tent); they are the deep foundations of geological folds. Qur'an clearly mentions the function of the mountains in preventing the earth from shaking:

*"And We have set on the earth mountains standing firm, lest it should shake with them."***[Al-Qur'an 21:31]**

**ENGLISH TRANSLATION WILLIAM PICKTHALL**

**Q78:6-7***"Have We not made the earth an expanse, And the high hills bulwarks?"*

**Q21:31***"And We have placed in the earth firm hills lest it quake with them, and We have placed therein ravines as roads that haply they may find their way"*

# भूविज्ञान: पहाड़ तम्बू के खूँटे जैसे हैं

**पुस्तक संदर्भ (वैज्ञानिक तथ्य / चमत्कार)**

कुरआन और आधुनिक विज्ञान अनुकूल या असंगत? पृष्ठ 24

**उद्धृत आयत और दी गई व्याख्या**

भूविज्ञान में 'फोल्डिंग' की घटना हाल ही में खोजी गई तथ्य है। फोल्डिंग पहाड़ों की श्रृंखलाओं के निर्माण के लिए जिम्मेदार है। यह भी ज्ञात है कि पहाड़ों की स्थिरता फोल्डिंग की प्रक्रिया से जुड़ी है।

*"क्या हमने पृथ्वी को एक विस्तृत विस्तार नहीं बनाया, और पहाड़ों को खूँटे नहीं बनाया?"* **[अल-क़ुरआन 78:6-7]**

यहाँ 'अव्वाद' का अर्थ है खूँटे, जैसे कि तम्बू को मजबूती से बांधने के लिए लगाए जाते हैं; ये भूवैज्ञानिक फोल्डों की गहरी नींव के समान हैं। क़ुरआन स्पष्ट रूप से पहाड़ों के उस कार्य का उल्लेख करता है, जो पृथ्वी को हिलने से रोकता है:

*"और हमने पृथ्वी पर ऐसे पहाड़ खड़े कर दिए कि वह उनके साथ हिल न जाए।"* **[अल-क़ुरआन 21:31]**

**हिंदी अनुवाद फ़ारूक़ ख़ान और नदवी**

**Q78:6-7** *"क्या ऐसा नहीं है कि हमने धरती को बिछौना बनाया और पहाड़ों को मेख़े?"*

**Q21:31** *"और हमने धरती में अटल पहाड़ रख दिए, ताकि कोई ऐसा न हो कि वह उन्हें लेकर ढुलक जाए और हमने उसमें ऐसे दर्रे बनाए कि रास्तों का काम देते हैं, ताकि वे मार्ग पाएँ।"*

**ENGLISH TRANSLATION SAHIH INTERNATIONAL**

**Q78:6-7***"Have We not made the earth a resting place? And the mountains as stakes?"*

**Q21:31***"And We placed within the earth firmly set mountains, lest it should shift with them, and We made therein [mountain] passes [as] roads that they might be guided"*

**TAFSIR IBN KATHIR**

**Q78:6-7** And the mountains as pegs,

Meaning, He made them as pegs for the earth to hold it in place, make it stable and firm. This is so that it may be suitable for dwelling and not quake with those who are in it.

**Q21:31** And We have placed on the earth firm mountains, means, mountains which stabilize the earth and keep it steady and lend it weight, lest it should shake with the people, i.e., move and tremble so that they would not be able to stand firm on it -- because it is covered with water, apart from one quarter of its surface. So, the land is exposed to the air and sun, so that its people may see the sky with its dazzling signs and evidence. So, Allah says, lest it should shake with them, meaning, so that it will not shake with them.

## उर्दू अनुवाद फ़ारूक़ ख़ान और नदवी

**Q78:6-7** *"क्या हमने ज़मीन को बिछौना और पहाड़ों को (ज़मीन) की मेख़े नहीं बनाया"*

**Q21:31** *"और हम ही ने ज़मीन पर भारी बोझल पहाड़ बनाए ताकि ज़मीन उन लोगों को लेकर किसी तरफ़ झुक न पड़े और हमने ही उसमें लंबे-चौड़े रास्ते बनाए ताकि लोग अपने-अपने मंज़िलें मकसूद को जा पहुँचे"*

## तफ़्सीर इब्न कसीर

**Q78:6–7** और पहाड़ों को खूंटे बनाया" अर्थ: अल्लाह ने पहाड़ों को धरती के लिए खूंटों की तरह बनाया, ताकि वे उसे थामे रहें, स्थिर और मज़बूत बनाएँ। यह इसलिए है कि धरती रहने योग्य हो और उसमें रहने वालों के साथ काँपे या डगमगाए नहीं।

**Q21:31** और हमने धरती पर मज़बूत पहाड़ रख दिए" अर्थ: यानी ऐसे पहाड़ जो धरती को स्थिर करते हैं, उसे संतुलन और वज़न प्रदान करते हैं, ताकि वह लोगों के साथ हिलने-डुलने न लगे—अर्थात न हिले और न काँपे—क्योंकि धरती का अधिकांश भाग पानी से ढका हुआ है, केवल लगभग एक चौथाई भाग ही खुला है। यही खुली ज़मीन हवा और सूरज के संपर्क में रहती है, ताकि लोग आकाश को उसकी चकाचौंध भरी निशानियों और प्रमाणों के साथ देख सकें। इसलिए अल्लाह फ़रमाताहै: "ताकि वह उनके साथ न हिले," यानी ताकि धरती उनके साथ न डगमगाए।

## TAFSIR JALALAYN

**Q78:6-7** Have We not made the earth a cradle, a bed, like a cradle, and the mountains pegs?, with which the earth is tied down like tents are tied down with pegs (the interrogative is meant as an affirmative).

**Q21:31** And We set in the earth firm mountains lest it should shake with them, and We set in them, [in] the firm mountains, ravines, as roads (subulan substitutes [for fijājan, 'ravines', which are wide through-routes]), that perhaps they may be guided, to their destinations during travel.

## PRESENT SCIENTIFIC KNOWLEDGE

Mountain folding occurs when tectonic plates of earth slowly move toward each other. This collision creates compressional stress in the Earth's crust, causing rock layers to bend and form mountain ranges. As tectonic movement continues, stress gradually builds up in the rocks, and when it exceeds their strength, it is released abruptly through breaking or slipping, this sudden release of energy is called an earthquake. That's why zones of seismic activity are often located near mountains.

## तफ़्सीर जलालैन

**Q78:6–7** क़्या हमने धरती को पालना नहीं बनाया—एक बिछौना, पालने की तरह और पहाड़ों को खूंटे (मेखें)?" अर्थ: जिनके द्वारा धरती को वैसे ही जकड़कर थाम दिया गया है जैसे तम्बुओं को खूंटों से बाँधा जाता है। (यहाँ प्रश्नवाचक शैली का उद्देश्य पुष्टि करना है।)

**Q21:31** और हमने धरती में मज़बूत पहाड़ स्थापित किए, ताकि वह उनके साथ न डगमगाए। और हमने उन्हीं मज़बूत पहाड़ों में दर्रे और रास्ते बनाए, यात्रा के मार्ग, ताकि वे (लोग) अपने गंतव्यों की ओर मार्गदर्शन पा सकें।

## वर्तमान वैज्ञानिक समझ

पर्वत वलन (फोल्डिंग) तब होता है जब पृथ्वी की टेक्टॉनिक प्लेटें धीरे-धीरे एक-दूसरे की ओर बढ़ती हैं। इस टकराव से पृथ्वी की भू-पर्पटी में संपीड़न का तनाव उत्पन्न होता है, जिसके कारण चट्टानों की परतें मुड़ जाती हैं और पर्वत-श्रंखलाओं का निर्माण होता है। जैसे-जैसे टेक्टॉनिक गतियाँ जारी रहती हैं, चट्टानों में तनाव धीरे-धीरे जमा होता रहताहै। जब यह तनाव उनकी सहन-क्षमता से अधिक हो जाता है, तो वह अचानक टूटने या खिसकने के रूप में मुक्त हो जाता है। ऊर्जा के इस अचानक मुक्त होने को ही भूकंप कहा जाता है। इसी कारण भूकंपीय गतिविधि के क्षेत्र अक्सर पर्वतीय क्षेत्रों के निकट पाए जाते हैं।

# OCEANOLOGY BARRIER BETWEEN SWEET AND SALT WATERS

**BOOK REFERENCE (SCIENTIFIC FACT / MIRACLE)**

The Qur'an and Modern Science: Compatible or Incompatible? Page 27

**QUOTED AAYAA AND EXPLANATION OFFERED**

Modern Science has discovered that in the places where two different seas meet, there is a barrier between them. This barrier divides the two seas so that each sea has its own temperature, salinity and density.

*"And made a separating bar between the two bodies of flowing water?"* **[Al-Qur'an 27:61]**

This phenomenon occurs in several places, including the divider between the Mediterranean and the Atlantic Ocean at Gibralter.

But when the Qur'an speaks about the divider between fresh and salt water, it mentions the existence of "a forbidding partition" with the barrier.

*"It is He Who has let free the two bodies of flowing water: one palatable and sweet, and the other salty and bitter; yet has He made a barrier between them, and a partition that is forbidden to be passed."* **[Al-Qur'an 25:53]**

# सागर विज्ञान: मीठे और खारे पानी के बीच अवरोध

**<u>पुस्तक संदर्भ (वैज्ञानिक तथ्य / चमत्कार)</u>**

क़ुरआन और आधुनिक विज्ञान अनुकूल या असंगत? पृष्ठ 27

**<u>उद्धृत आयत और दी गई व्याख्या</u>**

आधुनिक विज्ञान ने यह खोजा है कि जहाँ दो अलग-अलग समुद्र मिलते हैं, वहाँ उनके बीच एक बाधा होती है। यह बाधा दोनों समुद्रों को अलग करती है ताकि हर समुद्र की अपनी तापमान, खारापन और घनत्व बनी रहे।

*"और दो धाराओं वाले पानी के बीच एक अलग करने वाली बाधा बनाई?"*

**[अल-क़ुरआन 27:61]**

यह घटना कई स्थानों पर देखी जाती है, जैसे कि जिब्राल्टर में भूमध्यसागर और अटलांटिक महासागर के बीच।

लेकिन जब क़ुरआन मीठे और खारे पानी के बीच के विभाजन के बारे में बताता है, तो यह उल्लेख करता है कि वहाँ "एक निषिद्ध विभाजन" वाली बाधा मौजूद है।

*"वह वही है जिसने दो धाराओं वाले पानी को छोड़ दिया: एक स्वादिष्ट और मीठा, और दूसरा खारा और कड़वा; फिर भी उसने उनके बीच एक बाधा बनाई, और एक ऐसा विभाजन, जिसे पार कर नाम नाहै।"* **[अल-क़ुरआन 25:53]**

Modern science has discovered that in estuaries, where fresh (sweet) and salt water meet, the situation is somewhat different from that found in places where two salt water seas meet. It has been discovered that what distinguishes fresh water from salt water in estuaries is a "pycnocline zone with a marked density discontinuity separating the two layers." This partition (zone of separation) has a salinity different from both the fresh water and the salt water. This phenomenon occurs in several places, including Egypt, where the river Nile flows into the Mediterranean Sea.

**ENGLISH TRANSLATION WILLIAM PICKTHALL**

**Q27:61***"Is not He (best) Who made the earth a fixed abode, and placed rivers in the folds thereof, and placed firm hills therein, and hath set a barrier between the two seas? Is there any Allah beside Allah? Nay, but most of them know not"*

**Q25:53***"And He it is Who hath given independence to the two seas (though they meet); one palatable, sweet, and the other saltish, bitter; and hath set a bar and a forbidding ban between them"*

**ENGLISH TRANSLATION SAHIH INTERNATIONAL**

**Q27:61***"Is He [not best] who made the earth a stable ground and placed within it rivers and made for it firmly set mountains and placed between the two seas a barrier? Is there a deity with Allah? [No], but most of them do not know"*

आधुनिक विज्ञान ने यह खोजा है कि नदी के मुहानों में, जहाँ मीठा (स्वादिष्ट) और खारा पानी मिलते हैं, वहाँ की स्थिति उन स्थानों से कुछ अलग होती है जहाँ दो खारे पानी वाले समुद्र मिलते हैं। शोध से पता चला है कि नदी के मुहानों में मीठे और खारे पानी के बीच का अंतर एक "पाइकनोलाइन क्षेत्र" के कारण होता है, जिसमें दोनों परतों के बीच घनत्व का स्पष्ट अंतर होता है। यह विभाजन (अलग करने वाली परत) मीठे और खारे पानी दोनों से अलग खारापन रखता है। यह घटना कई स्थानों पर देखी जाती है, जैसे मिस्र में, जहाँ नदी नील भूमध्यसागर में मिलती है।

**<u>हिंदी अनुवाद फ़ारूक़ ख़ान और नदवी</u>**

**Q27:61** *"या वह जिसने धरती को ठहरने का स्थान बनाया और उसके बीच-बीच में नदियाँ बहाई और उसके लिए मजबूत पहाड़ बनाए और दो समुद्रों के बीच एक रोक लगा दी। क्या अल्लाह के साथ कोई और प्रभु पूज्य है? नहीं, उनमें से अधिकांश लोग जानते ही नहीं।"*

**Q25:53** *"वही है जिसने दो समुद्रों को मिलाया। यह स्वादिष्ट और मीठा है और यह खारी और कड़ुआ। और दोनों के बीच उसने एक पर्दा डाल दिया है और एक पृथक करने वाली रोक खड़ी है।"*

**<u>उर्दू अनुवाद फ़ारूक़ ख़ान और नदवी</u>**

**Q27:61** *"भला वह कौन है जिसने ज़मीन को (लोगों के) ठहरने की जगह बनाया और उसके दरमियान ज़ाब-ज़ाब नहरें दौड़ाईं और उसकी मज़बूती के वास्ते पहाड़ बनाए और (मीठे-खारी) दरियाओं के दरमियान हदे-फासिल बनायीा तो क्या ख़ुदा के साथ कोई और माबूद भी है (हरगिज़ नहीं)? लेकिन उनमें के अकसर कुछ जानते ही नहीं।"*

**Q25:53** *"And it is He who has released [simultaneously] the two seas, one fresh and sweet and one salty and bitter, and He placed between them a barrier and prohibiting partition"*

**TAFSIR IBN KATHIR**

**Q27:61** and has set a barrier between the two seas, means, He has placed a barrier between the fresh water and the salt water, to prevent them from mixing lest they corrupt one another. Divine wisdom dictates that each of them should stay as it is meant to be. The sweet water is that which flows in rivers among mankind, and it is meant to be fresh and palatable so that it may be used to water animals and plants and fruits. The salt water is that which surrounds the continents on all sides, and its water is meant to be salty and undrinkable lest the air be corrupted by its smell, as Allah says: And it is He Who has let free the two seas, this is palatable and sweet, and that is salty and bitter; and He has set a barrier and a complete partition between them. (25:53)

**Q25:53** Allah says: And it is He Who has let free the two seas, this is palatable and sweet, and that is salty and bitter; means, He has created the two kinds of water, sweet and salty. The sweet water is like that in rivers, springs and wells, which is fresh, sweet, palatable water.

This was the view of Ibn Jurayj and of Ibn Jarir, and this is the meaning without a doubt, for nowhere in creation is there a sea which is fresh and sweet.

**Q25:53** *"और वही तो वह (ख़ुदा) है जिसने दरयाओं को आपस में मिला दिया (और बावजूद कि) ये खालिस मज़ेदार मीठा है और ये बिल्कुल खारी कड़वा (मगर दोनों को मिला लिया) और दोनों के दरमियान एक आड़ और मज़बूत ओट बना दी है (कि गड़बड़ न हो)"*

**<u>तफ़्सीर इब्न कसीर</u>**

**Q27:61** "और किसने पृथ्वी को ठहरने योग्य बनाया, उसके बीच नदियाँ बहाईं, उसके लिए पर्वत स्थापित किए, और दो समुद्रों के बीच एक आड़ (बाधा) रखी?" इसका अर्थ यह है कि अल्लाह ने मीठे पानी और खारे पानी के बीच एक अवरोध स्थापित किया है, ताकि वे आपस में पूरी तरह मिल न जाएँ और एक-दूसरे को नष्ट न कर दें। ईश्वरीय बुद्धि की यही माँग है कि हर चीज़ अपनी निर्धारित प्रकृति में बनी रहे। मीठा पानी वह है जो नदियों के रूप में मनुष्यों के बीच बहता है। इसे ताज़ा और स्वादिष्ट बनाया गया है ताकि इससे मनुष्यों, पशुओं, पौधों और फलों को सींचा जा सके। खारा पानी वह है जो चारों ओर से महाद्वीपों को घेरे हुए है। उसे न पीने योग्य और खारा बनाया गया है, ताकि उसके सड़ने से वायु दूषित न हो। अल्लाह फ़रमाते हैं: "और वही है जिसने दो समुद्रों को खुला छोड़ा—यह मीठा और स्वादिष्ट है, और वह खारा और कड़वा; और उसने दोनों के बीच एक आड़ और मज़बूत पर्दा बना दिया।" (25:53)

**Q25:53** अल्लाह कहता है कि उसी ने दो प्रकार के पानी बनाए हैं—मीठा और खारा। मीठा पानी वह है जो नदियों, झरनों और कुओँ में पाया जाता है, जो ताज़ा, मधुर और पीने योग्य होता है। खारा पानी वह है जो समुद्रों में है, जो स्वभावतः कड़वा और पीने योग्य नहीं है।

यह इब्न जुरैज और इब्न जरीर की दृष्टि थी, और निस्संदेह इसका यही अर्थ है, क्योंकि सृष्टि में कहीं भी ऐसा समुद्र नहीं है जो मीठा और ताज़ा हो।

This was recorded by Malik, Ash-Shafi`i and Ahmad, and by the scholars of Sunan with a good (Jayyid) chain of narration. and He has set a barrier and a complete partition between them. meaning, between the sweet water and the saltwater. (a barrier), means a partition, which is dry land. (and a complete partition), means, a barrier, to prevent one of them from reaching the other.

**TAFSIR JALALAYN**

**Q27:61** Or He Who made the earth an abode [of stability], that does not [constantly] shake beneath [the feet of] its inhabitants, and made rivers [to flow] throughout it and set firm mountains for it, with which He fixed the earth [in place], and set an isthmus between the two seas, between the sweet one and the salty one, the one not mixing with the other. Is there a god with God? Nay, but most of them have no knowledge, of His Oneness.

**Q25:53** And He it is Who merged the two seas: letting them [flow] one adjacent to the other: this one palatable, sweet, and the other saltish, bitter; and He set between the two an isthmus, so that the one does not mix with the other, and a forbidding ban, a shield that prevents the two from becoming mixed.

यह मलिक, अश-शाफ़ई और अहमद और सुन्नी विद्वानों ने अच्छी श्रेणी की सुन्नत के साथ रिकॉर्ड किया। और उसने उनके बीच एक अवरोध और पूर्ण विभाजन स्थापित किया, अर्थात्मीठे पानी और खारे पानी के बीच। अवरोध का अर्थ है विभाजन, जो सूखी भूमि के रूप में है। और पूर्ण विभाजन का अर्थ है, ऐसा अवरोध जो एक को दूसरे तक पहुँचने से रोकता है।

## तफ़्सीर जलालैन

**Q27:61** और जिसने पृथ्वी को एक निवास स्थान बनाया, जो उसके निवासियों के पैरों के नीचे लगातार हिलती न रहे, और उसमें नदियाँ बहाईं और उसमें स्थिर पहाड़ बनाए, जिनके द्वार उस ने पृथ्वी को स्थिर किया, और दो समुद्रों के बीच एक पतला मार्ग रखा, मीठे और खारे पानी के बीच, जो एक-दूसरे में न मिलें। क्या ईश्वर के साथ कोई दूसरा ईश्वर है? नहीं, लेकिन उनमें से अधिकांश उसके एकत्व का ज्ञान नहीं रखते।

**Q25:53** और वही है जिसने दोनों समुद्रों को मिलाया: उन्हें एक-दूसरे के पास बहने दिया, यह मीठा और स्वादिष्ट, और वह खारा और कड़वा; और उसने उनके बीच एक पतला मार्ग रखा, ताकि वे एक-दूसरे में न मिलें, और एक निषेध, एक ढाल रखी, जो दोनों के मिल जाने से रोकती है।

## PRESENT SCIENTIFIC KNOWLEDGE

Wherever two bodies of water meet, whether both are seas, both are freshwater, or one is seawater and the other freshwater; different colour waters are observed separated by a visible boundary. This temporary boundary is commonly associated with a pycnocline, a layer in which water density changes rapidly. Less dense, sediment-rich or fresher water can temporarily float above denser, saltier water, slowing immediate mixing. Although waves, currents, and turbulence eventually cause the two waters to mix.

## वर्तमान वैज्ञानिक समझ

जहाँ भी दो जल-निकाय आपस में मिलते हैं, चाहे दोनो समुद्र हों, दोनों मीठे पानी के हों, या एक समुद्री जल और दूसरा मीठा जल; वहाँ अक्सर भिन्न रंगों वाला जल एक स्पष्ट दिखाई देने वाली सीमा द्वारा अलग-अलग देखा जाता है। यह अस्थायी सीमा प्रायः पाइक्नोक्लाइन से जुड़ी होती है, जो वह परत है जहाँ जल का घनत्व तेजी से बदलता है। कम घनत्व वाला, तलछट-युक्त या अपेक्षाकृत मीठा जल कुछ समय के लिए अधिक घनत्व वाले, खारे समुद्री जल के ऊपर तैरता रहता है, जिससे तुरंत मिश्रण नहीं हो पाता। यद्यपि अंततः लहरें, धाराएँ और अशांति दोनों प्रकार के जल को आपस में मिला देती हैं।

# DARKNESS IN DEPTHS OF OCEAN

**BOOK REFERENCE (SCIENTIFIC FACT / MIRACLE)**

The Qur'an and Modern Science: Compatible or Incompatible? Page 29-30

**QUOTED AAYAA AND EXPLANATION OFFERED**

*"Or (the Unbelievers' state) is like the depths of darkness in a vast deep ocean, overwhelmed with billow topped by billow, topped by (dark) clouds: depths of darkness, one above another: if a man stretches out his hand, he can hardly see it! For any to whom Allah giveth not light, there is no light!"* **[Al-Qur'an 24:40]**

Due to successive disappearance of colour, one layer after another, the ocean progressively becomes darker, i.e. darkness takes place in layers of light. Below a depth of 1000 meters there is complete darkness. The darkness begins below the internal waves.

**ENGLISH TRANSLATION WILLIAM PICKTHALL**

**Q24:40***"Or as darkness on a vast, abysmal sea. There covereth him a wave, above which is a wave, above which is a cloud. Layer upon layer of darkness. When he holdeth out his hand he scarce can see it. And he for whom Allah hath not appointed light, for him there is no light"*

# समुद्र की गहराइयों में अंधकार

## पुस्तक संदर्भ (वैज्ञानिक तथ्य / चमत्कार)

क़ुरआन और आधुनिक विज्ञान अनुकूल या असंगत? पृष्ठ 29-30

## उद्धृत आयत और दी गई व्याख्या

*"या (अविश्वासियों की अवस्था) उस गहन अंधकार के समान है जो एक अथाह, गहरे समुद्र की गहराइयों में होता है—जिस पर एक के ऊपर एक लहरें छाई हों, और उन पर (घने) बादल हों। अंधकार पर अंधकार, परत दर परत। यदि कोई व्यक्ति अपना हाथ भी फैलाए तो उसे उसे देखने की शक्ति न हो। और जिसे अल्लाह प्रकाश न दे, उसके लिए कोई प्रकाश नहीं।"* **[अल-क़ुरआन 24:40]**

समुद्र की गहराइयों में रंगों का क्रमिक रूप से लुप्त होना होता है। एक के बाद एक प्रकाश की परतें समाप्त हो जाती हैं, जिसके परिणाम स्वरूप समुद्र क्रमशः अधिक अंधकारमय हो चला जाता है। इस प्रकार अंधकार भी परतों के रूप में विद्यमान होता है। लगभग 1000 मीटर की गहराई के नीचे पूर्ण अंधकार छा जाता है। यह अंधकार आंतरिक तरंगों के नीचे आरंभ हो जाता है।

## हिंदी अनुवाद फ़ारूक़ ख़ान और नदवी

**Q24:40** *"या फिर जैसे एक गहरे समुद्र में अँधेरे, लहर के ऊपर लहर छाई ही हैं; उसके ऊपर बादल हैं, अँधेरे हैं एक पर एक। जब वह अपना हाथ निकाले तो उसे वह सुझाई देता प्रतीत न हो। जिसे अल्लाह ही प्रकाश न दे फिर उसके लिए कोई प्रकाश नहीं"*

**ENGLISH TRANSLATION SAHIH INTERNATIONAL**

**Q24:40***"Or [they are] like darknesses within an unfathomable sea which is covered by waves, upon which are waves, over which are clouds - darknesses, some of them upon others. When one puts out his hand [therein], he can hardly see it. And he to whom Allah has not granted light - for him there is no light"*

**TAFSIR IBN KATHIR**

As for those whose ignorance is simple, those who are uneducated and foolish and blindly follow the leaders of disbelief, knowing and understanding nothing, their parable is as Allah says:

Or like the darkness in a vast deep sea……..so intensely dark. This is the parable of the heart of the disbeliever whose ignorance is simple, who merely follows and does not know the true nature of the one whom he follows or where he is going.

"darkness upon darkness", Ubayy bin Ka`b said: He is enveloped in five types of darkness: his speech is darkness, his deeds are darkness, his coming in is darkness, his going out is darkness and his destiny on the Day of Resurrection will be darkness in the fire of Hell.'

## उर्दू अनुवाद फ़ारूक़ ख़ान और नदवी

**Q24:40** *"(या काफ़िरों के आमाल की मिसाल) उस बड़े गहरे दरिया की तारिकियों की सीहै - जैसे एक लहर उसके ऊपर दूसरी लहर उसके ऊपर अब्र (तह-ब-तह) ढॉके हुए हो (ग़रज़) तारिकियाँ हैं कि एक से ऊपर एक (उमड़ी) चली आती हैं (इसी तरह से) कि अगर कोई शख्स अपना हाथ निकाले तो (शिद्दत ता रीकी से) उसे देख न सके और जिसे खुद ख़ुदा ही ने (हिदायत की) रौशनी न दी हो तो (समझ लो कि) उसके लिए कहीं कोई रौशनी नहीं है"*

## तफ़्सीर इब्न कसीर

जहाँ तक उन लोगों का संबंध है जिनकी अज्ञानता साधारण (सरल) है, जो अशिक्षित, नासमझ हैं और बिना सोचे-समझे कुफ़्र के नेताओं का अनुसरण करते हैं, न तो कुछ जानते हैं और न ही कुछ समझते हैं, उनकी उपमा वही है जो अल्लाह ने बयान की है:

"या वे एक अथाह, गहरे समुद्र के अंधकार की तरह हैं... जो अत्यंत गहन अंधकार" यह उनके काफ़िर के दिल की मिसाल है जिसकी अज्ञानता सरल है जो केवल अनुसरण करता है, लेकिन यह नहीं जानता कि वह किस का अनुसरण कर रहा है और वह किस दिशा में जा रहा है।

"अंधकार पर अंधकार" के बारे में उबै बिन क़ाब (रज़ि.) ने कहा: वह पाँच प्रकार के अंधकारों में घिरा हुआ होता है—उसकी वाणी अंधकार है, उसके कर्म अंधकार हैं, उसका आना अंधकार है, उसका जाना अंधकार है, और क़ियामत के दिन उसका अंजाम जहन्नम की आग में अंधकार ही होगा।

**TAFSIR JALALAYN**

Or, [it is that] those who disbelieve, their evil deeds are, as the manifold darkness on a deep sea, covered by a billow, above which, that is, [above which] billow, there is [another] billow, above which, second billow, there are clouds, these being the, manifold [layers of] darkness, one on top of another, the darkness of the sea, the darkness of the first billow, the darkness of the second together with the darkness of the clouds. When he, an observer, holds out his hand, in such layers of darkness, he can scarcely see it, in other words, he would not [even] come close to seeing it. And he whom God has not granted any light has no light, that is to say, he whom God does not guide cannot be guided.

या (अविश्वासियों की अवस्थाएँ ऐसी हैं कि) उनके बुरे कर्म उस गहरे समुद्र के अनेक अंधकारों के समान हैं, जिसे एक लहर ने ढक रखा हो, और उस लहर के ऊपर एक और लहर हो, और उस दूसरी लहर के ऊपर घने बादल हों। ये सब मिलकर अंधकार के अनेक स्तर बन जाते हैं—एक के ऊपर एक। समुद्र का अंधकार, पहली लहर का अंधकार, दूसरी लहर का अंधकार और उसके साथ बादलों का अंधकार। ऐसी परतदार अंधकार की स्थिति में यदि कोई देखने वाला व्यक्ति अपना हाथ भी आगे बढ़ाए, तो वह उसे मुश्किल से देख पाएगा; बल्कि यूँ कहें कि वह उसे देखने के करीब भी नहीं पहुँच सकेगा। और जिसे अल्लाह ने कोई प्रकाश नहीं दिया, उसके लिए कोई प्रकाश नहीं है। अर्थात् जिसे अल्लाह हिदायत नहीं देता, वह कभी मार्गदर्शन प्राप्त नहीं कर सकता।

# BOTANY: PLANTS HAVE MALE AND FEMALE

**BOOK REFERENCE (SCIENTIFIC FACT / MIRACLE)**

The Qur'an and Modern Science: Compatible or Incompatible? Page 34

**QUOTED AAYAA AND EXPLANATION OFFERED**

Previously, humans did not know that plants too have male and female gender distinctions.

*"'And has sent down water from the sky.' With it have We produced diverse pairs of plants each separate from the others."* **[Al-Qur'an 20:53]**

**ENGLISH TRANSLATION WILLIAM PICKTHALL**

**Q20:53***"Who hath appointed the earth as a bed and hath threaded roads for you therein and hath sent down water from the sky and thereby We have brought forth divers kinds of vegetation"*

**ENGLISH TRANSLATION SAHIH INTERNATIONAL**

**Q20:53***"[It is He] who has made for you the earth as a bed [spread out] and inserted therein for you roadways and sent down from the sky, rain and produced thereby categories of various plants"*

# वनस्पति विज्ञान: पौधों में नर और मादा होते हैं

## पुस्तक संदर्भ (वैज्ञानिक तथ्य / चमत्कार)

क़ुरआन और आधुनिक विज्ञान अनुकूल या असंगत? पृष्ठ 34

## उद्धृत आयत और दी गई व्याख्या

पहले मनुष्यों को यह ज्ञान नहीं था कि पौधों में भी नर और मादा का भेद होता है।

*"और उसी ने आकाश से पानी उतारा। फिर उसके द्वारा हमने हर प्रकार के पौधों को जोड़े-जोड़े के रूप में उत्पन्न किया, जो एक-दूसरे से भिन्न हैं।"*
**[अल-क़ुरआन 20:53]**

## हिंदी अनुवाद फ़ारूक़ ख़ान और नदवी

**Q20:53** *"वही है जिसने तुम्हारे लिए धरती को पालना (बिछौना) बनाया और उसने तुम्हारे लिए रास्ते निकाले और आकाश से पानी उतारा। फिर हमने उसके द्वारा विभिन्न प्रकार के पेड़-पौधे निकाले"*

## उर्दू अनुवाद फ़ारूक़ ख़ान और नदवी

**Q20:53** *"वह वही है जिसने तुम्हारे (फ़ायदे के) वास्ते ज़मीन को बिछौना बनाया और तुम्हारे लिए उसमें राहें निकाली और उसी ने आसमान से पानी बरसाया फिर (खुदा फरमाता है कि) हम ही ने उस पानी के ज़रिए से मुख्तलिफ़ क़िस्मों की घास निकाली"*

**TAFSIR IBN KATHIR**

…. and has sent down water from the sky. And We have brought forth with it various kinds of vegetation. referring to the various species of plants, such as vegetation and fruits. Some are sour, some are sweet, some are bitter and there are other kinds as well.

**TAFSIR JALALAYN**

He is, the One Who made for you, as well as [for] all creatures, the earth a cradle, a bed, and threaded, facilitated, for you therein ways, roads, and sent down from the heaven water, rain. God, exalted be He, says, as a complement to Moses's description of Him and as an address to the people of Mecca: and therewith We brought forth various kinds, species, of plants (shattā, 'various', adjectivally qualifies azwājan, 'kinds'), in other words, [plants] of different colours, flavours and [different] in other ways.

## तफ़्सीर इब्न कसीर

.... और उसने आकाश से पानी उतारा। और उसी के द्वारा हमने विभिन्न प्रकार की वनस्पतियाँ उत्पन्न कीं, अर्थात पौधों की अलग-अलग जातियाँ, जैसे हरियाली और फल। इनमें कुछ खट्टे हैं, कुछ मीठे हैं, कुछ कड़वे हैं और इनके अतिरिक्त भी अनेक प्रकार हैं।

## तफ़्सीर जलालैन

वही है जिसने तुम्हारे लिए, और समस्त प्राणियों के लिए, धरती को पालने और बिछौने के समान बनाया, और उसमें तुम्हारे लिए रास्ते और मार्ग सुगम किए, तथा आकाश से पानी, अर्थात वर्षा, उतारी। अल्लाह, महान और उच्च, मूसा (अलै.) द्वारा किए गए उसके वर्णन की पूरकता के रूप में और मक्का के लोगों को संबोधित करते हुए फ़रमाता है: और उसी के द्वारा हमने पौधों की विभिन्न किस्में और प्रकार उत्पन्न किए—अर्थात अनेक प्रकार के पौधे।

यहाँ "शत्ता" (विविध) शब्द "अज़वाजन" (प्रकार/क़िस्में) का विशेषण है, यानी ऐसे पौधे जो रंगों में भिन्न हों, स्वादों में अलग हों, और अन्य गुणों में भी एक-दूसरे से भिन्न हों।

# FRUITS HAVE MALE AND FEMALE

**BOOK REFERENCE (SCIENTIFIC FACT / MIRACLE)**

The Qur'an and Modern Science: Compatible or Incompatible? Page 34

**QUOTED AAYAA AND EXPLANATION OFFERED**

*"And fruit of every kind He made in pairs, two and two."***[Al-Qur'an 13:3]**

Fruit is the end product of reproduction of the superior plants. The stage preceding fruit is the flower, which has male and female organs (stamens and ovules). All fruits therefore imply the existence of male and female organs; a fact that is mentioned in the Qur'an.

**ENGLISH TRANSLATION WILLIAM PICKTHALL**

**Q13:3***"And He it is Who spread out the earth and placed therein firm hills and flowing streams, and of all fruits He placed therein two spouses (male and female). He covereth the night with the day. Lo! herein verily are portents for people who take thought"*

# फलों में नर और मादा होते हैं

**<u>पुस्तक संदर्भ (वैज्ञानिक तथ्य / चमत्कार)</u>**

क़ुरआन और आधुनिक विज्ञान अनुकूल या असंगत? पृष्ठ 34

**<u>उद्धृत आयत और दी गई व्याख्या</u>**

*"और उसने हर प्रकार के फलों को जोड़े-जोड़े बनाया, दो-दो।"* **[अल-क़ुरआन 13:3]**

फल, उच्च कोटि के पौधों में प्रजनन की अंतिम उपज होता है। फल से पहले की अवस्था फूल होती है, जिसमें नर और मादा जनन अंग (पुंकेसर और बीजांड) होते हैं। इसलिए प्रत्येक फल का अस्तित्व नर और मादा जनन अंगों की उपस्थिति को दर्शाता है, एक तथ्य जिसका उल्लेख क़ुरआन में किया गया है।

**<u>हिंदी अनुवाद फ़ारूक़ ख़ान और नदवी</u>**

**Q13:3** *"और वही है जिसने धरती को फैलाया और उसमें जमे हुए पर्वत और नदियाँ बनाई और हरेक पैदावार की दो-दो किस्में बनाई। वही रात से दिन को छिपा देता है। निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो सोच-विचार से काम लेते हैं।"*

**ENGLISH TRANSLATION SAHIH INTERNATIONAL**

**Q13:3***"And it is He who spread the earth and placed therein firmly set mountains and rivers; and from all of the fruits He made therein two mates; He causes the night to cover the day. Indeed in that are signs for a people who give thought"*

**TAFSIR IBN KATHIR**

….and of every kind of fruit He made Zawjayn Ithnayn, two types from every kind of fruit…..

**TAFSIR JALALAYN**

And He it is Who spread out, extended [flat], the earth and set, created, therein firm mountains and rivers, and of every fruit He has made in it two kinds, of every species. He covers, He cloaks, the night, and its darkness, with the day. Surely in that, which is mentioned, are signs, indications of His Oneness, exalted be He, for a people who reflect, upon God's handiwork.

**OTHER REFERENCES IN ISLAMIC TEXT ON RELATED TOPIC**

**Q13:3 (Translation Muhsin Khan):** And it is He Who spread out the earth, and placed therein firm mountains and rivers and of every kind of fruits He made ZawjainIthnain (two in pairs – may mean two kinds or it may mean: of two sorts, e.g. black and white, sweet and sour, small and big, etc.)

**<u>उर्दू अनुवाद फ़ारूक़ ख़ान और नदवी</u>**

**Q13:3** *"(अपनी) आयतें तफसीलदार बयान करता है और वह वही है जिसने ज़मीन को बिछाया और उसमें (बड़े-बड़े) अटल पहाड़ और दरिया बनाए और उसने हर तरह के मेवों की दो-दो किस्में पैदा की (जैसे खट्टे मीठे) वही रात (के परदे) से दिन को ढाक देता है इसमें शक़नहीं कि जो लोग और ग़ौर व फिक्र करते हैं उनके लिए इसमें (कुदरत खुदा की) बहुतेरीन निशानियाँ हैं।"*

**<u>तफ़्सीर इब्न कसीर</u>**

... और उसने हर प्रकारके फलों को जोड़े-जोड़े (ज़ौजैन इथनैन) बनाया—हर प्रकारके फल से दो-दो प्रकार...

**<u>तफ़्सीर जलालैन</u>**

वही है जिसने धरती को फैलाया, उसे समतल बनाया, और उसमें मज़बूत पर्वत तथा नदियाँ स्थापित कीं। और उसमें उसने हर प्रकार के फलों को बनाया—हर जाति के दो-दो प्रकार। व हरात और उसके अंधकार को दिन से ढक देता है। निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ और संकेत हैं जो अल्लाह की कारीगरी पर चिंतन करते हैं और विचार करते हैं।

**<u>इस्लामी धर्मग्रंथों में संबंधित विषय पर अन्य संदर्भ</u>**

**क़ुरआन 13:3 अनुवाद (मुहसिन ख़ान):** *"और वही है जिसने धरती को फैलाया, उसमें मज़बूत पर्वत और नदियाँ स्थापित कीं, और हर प्रकार के फलों को उसने जोड़े-जोड़े (ज़ौजैन इथनैन) बनाया। (दो-दो प्रकार—इसका अर्थ दो किस्में हो सकती हैं, या दो प्रकार, जैसे काले और सफेद, मीठे और खट्टे, छोटे और बड़े आदि....."*

**Tanwir al-Miqbas min Tafsir Ibn Abbas (Q13:3):** (And He it is who spread out the earth) He spread out the earth on water (and placed therein firm hills) He created in the earth firm mountains as pillars (and flowing streams) and placed therein flowing rivers, (and of all fruits) and of all the different kinds of fruit (He placed therein two spouses) sweet and sour are one pair, the white and the red are another pair.

## PRESENT SCIENTIFIC KNOWLEDGE

Most fruits develop from flowers, and the flowers contain male and female organs. However, the fruits themselves do not have male or female organs. In some plants, fruits can form without the union of male and female parts; for example, bananas, seedless citrus fruits, etc.

**तफ़्सीर तन्वीर अल-मिक़्बास मिन तफ़सीर इब्न अब्बास (Q13:3):**
और वही है जिसने धरती को फैलाया" – उसने धरती को पानी के ऊपर फैलाया। और उसमें मज़बूत पहाड़ बनाए" – उसने धरती में मज़बूत पर्वत स्तंभों की तरह बनाए। और प्रवाही नदियाँ बनाई" – उसने वहाँ बहती हुई नदियाँ स्थापित की। और हर प्रकार के फलों में" – उसने धरती में हर प्रकार के फलों को रखा। दो जोड़े (ज़ौज)" – मीठा और खट्टा एक जोड़ा है, सफेद और लाल दूसरा जोड़ा है।

इइइइइइइ इइइइइइइइइ इइइ

अधिकांश फलों का फूल से विकास होता है, और फूल में नर और मादा अंग होते हैं। लेकिन फलों में खुद कोई नर या मादा अंग नहीं होता। कई पौधों में फल बिना नर-मादा मिलन के भी बनते हैं, उदाहरण: केले, सिट्रस के बीजरहित फल आदि।

118

# EVERYTHING MADE IN PAIRS

**BOOK REFERENCE (SCIENTIFIC FACT / MIRACLE)**

The Qur'an and Modern Science: Compatible or Incompatible? Page 35

**QUOTED AAYAA AND EXPLANATION OFFERED**

*"And of everything We have created pairs."***[Al-Qur'an 51:49]**

*"Glory to Allah, Who created in pairs all things that the earth produces, as well as their own (human) kind and (other) things of which they have no knowledge."***[Al-Qur'an 36:36]**

This verse lays emphasis on everything. Besides humans, animals, plants and fruits, it may also be referring to electricity in which the atoms consist of negatively – and positively – charged electrons and protons. And many more things!

**ENGLISH TRANSLATION WILLIAM PICKTHALL**

**Q51:49***"And all things We have created by pairs, that haply ye may reflect"*

**Q36:36***"Glory be to Him Who created all the sexual pairs, of that which the earth groweth, and of themselves, and of that which they know not!"*

# हर चीज़ को जोड़ों में बनाया

**<u>पुस्तकसंदर्भ (वैज्ञानिक तथ्य / चमत्कार)</u>**

क़ुरआन और आधुनिक विज्ञान अनुकूल या असंगत? पृष्ठ 35

**<u>उद्धृत आयत और दी गई व्याख्या</u>**

*" और हमने हर चीज़ को जोड़ों में बनाया।"* **[<u>अल-क़ुरआन 51:49</u>]**

*"तारीफ़ है अल्लाह की, जिसने धरती पर उत्पन्न होने वाली सभी चीज़ों को जोड़ों में बनाया, और स्वयं उनकी (मनुष्यों) जाति को भी, और उन चीज़ों को भी जिनका उन्हें कोई ज्ञान नहीं।"* **[अल-क़ुरआन 36:36]**

यह आयत हर चीज़ पर जोर देती है। केवल मनुष्य, जानवर, पौधे और फल ही नहीं, बल्कि यह विद्युत की ओर भी संकेत कर सकती है, जिसमें परमाणु में ऋणात्मक और धनात्मक आवेशित इलेक्ट्रॉन्स और प्रोटॉन्स होते हैं। और भी कई ऐसी चीज़ें हैं जो इस सृष्टि में दो-जोड़े में मौजूद हैं।

**<u>हिंदी अनुवाद फ़ारूक़ ख़ान और नदवी</u>**

**Q51:49 "** *और हमने हर चीज़ के जोड़े बनाए, ताकि तुम ध्यान दो"*

**Q36:36** *"महिमावान है वह जिसने सबके जोड़े पैदाकिए – धरती जो चीजें उगाती है उनमें से भी, और स्वयं उनकी अपनी जाति में से भी, और उन चीज़ों में से भी जिनको वे नहीं जानते"*

**ENGLISH TRANSLATION SAHIH INTERNATIONAL**

**Q51:49***"And of all things We created two mates; perhaps you will remember"*

**Q36:36***"Exalted is He who created all pairs - from what the earth grows and from themselves and from that which they do not know"*

**TAFSIR IBN KATHIR**

**Q51:49** And of everything We have created pairs, meaning, all the created are in pairs, the heaven and earth, night and day, sun and moon, land and sea, light and darkness, faith and disbelief, death and life, misery and happiness, Paradise and Fire, in addition to the animals and plants.

**Q36:36** Then Allah says: Glory be to Him Who has created all the pairs of that

which the earth produces, meaning, of crops and fruits and plants. as well as of their own (human) kind, means, He made them into male and female. and of that which they know not. means, different kinds of creatures of which they know nothing.

## उर्दू अनुवाद फ़ारूक़ ख़ान और नदवी

**Q51:49** *"और हमने हर चीज़ के जोड़े बनाए, ताकि तुम ध्यान दो"*

**Q36:36** *"वह (हर ऐब से) पाक साफ है जिसने ज़मीन से उगने वाली चीज़ों और खुद उन लोगों के और उन चीज़ों के जिनकी उन्हें ख़बर नहीं, सब के जोड़े पैदा किए"*

## तफ़्सीर इब्न कसीर

**Q51:49** और हमने हर चीज़ को जोड़ों में बनाया — अर्थात, सृष्टि की सभी चीज़ें जोड़ों में हैं: आकाश और पृथ्वी, रात और दिन, सूरज और चंद्रमा, भूमि और सागर, रोशनी और अंधकार, ईमान और कुफ़्र, मृत्यु और जीवन, दुख और सुख, जन्नत और जहन्नम, इसके अलावा जानवर और पौधे।

**Q36:36** फिर अल्लाह फ़रमाता है: "तारीफ़ उसी अल्लाह की है जिसने धरती पर उत्पन्न होने वाली सभी चीज़ों को जोड़ों में बनाया" — अर्थात, फ़सलें, फल और पौधों की सभी किस्में। "और स्वयं उनकी (मनुष्यों) जाति को" — अर्थात, उन्हें नर और मादा के रूप में बनाया। "और उन चीज़ों को जिनका उन्हें ज्ञान नहीं है" — अर्थात, ऐसे विभिन्न प्रकार के जीव-जंतु और प्राणी, जिनके बारे में मनुष्य कुछ नहीं जानता।

## TAFSIR JALALAYN

**Q51:49** And of all things (wa-min kullishay'in is semantically connected to His [following] words khalaqnā) We created pairs, two kinds, such as male and female, heaven and earth, sun and moon, plain and mountain, summer and winter, sweet and bitter, light and darkness, that perhaps you might remember (tadhakkarūna: one of the two original tā' letters [of tatadhakkarūna] has been omitted), and hence realise that the Creator of pairs is [Himself] Singular, that you might then worship him.

**Q36:36** Glory be to Him Who created all the pairs, the specimens, of what the earth produces, of seeds and other things, and of themselves, of males and females, and of what they do not know, of marvellous and strange creatures.

## PRESENT SCIENTIFIC KNOWLEDGE

From a scientific perspective, some things are singular, mixed, or multidimensional. Some examples include time, certain unicellular organisms, hydra, some lizards, earthworm, and some fruits or plants.In atom while electron and proton are opposite charge, neutron also exists.

## तफ़्सीर जलालैन

**Q51:49** और प्रत्येक वस्तु में से (वा-मिन कुल्लि शैइन् — जो अर्थ की दृष्टि से इसके बाद आने वाले शब्द ख़लक़्ना से संबद्ध है) हमने जोड़े बनाए — दो प्रकार — जैसे नर और नारी, आकाश और पृथ्वी, सूर्य और चंद्रमा, समतल और पर्वत, ग्रीष्म और शीत, मीठा और कड़वा, प्रकाश और अंधकार — ताकि तुम स्मरण करो (तज़क्क़रून; ततज़क्क़रून के दो मूल 'ता' में से एक को हटा दिया गया है), और इस प्रकार यह समझ सको कि जोड़ों का स्रष्टा स्वयं एकमात्र (एक) है, ताकि फिर तुम उसी की उपासना करो।

**Q36:36** तारीफ़ है उसी अल्लाह की जिसने धरती पर उत्पन्न होने वाली सभी चीज़ों को जोड़ों में बनाया — बीजों और अन्य वस्तुओं के प्रकारों को, स्वयं उनकी (मनुष्यों) जाति को नर और मादा के रूप में, और उन चीज़ों को भी जिनका उन्हें कोई ज्ञान नहीं, जैसे अद्भुत और अजीब प्राणी।

## वर्तमान वैज्ञानिक समझ

वैज्ञानिक दृष्टि से देखें तो कुछ चीज़ें एकल, मिश्रित, या बहुआयामी होती हैं। कुछ उदाहरण, समय, कुछ एककोशिकीय जीव, हाइड्रा, अर्थवर्म, कुछ फल या पौधे। परमाणु में जहाँ इलेक्ट्रॉन और प्रोटॉन विपरीत आवेश रखते हैं, वहीं न्यूट्रॉन भी मौजूद होता है।

# ZOOLOGY ANIMALS AND BIRDS LIVE IN COMMUNITIES

**BOOK REFERENCE (SCIENTIFIC FACT / MIRACLE)**

The Qur'an and Modern Science: Compatible or Incompatible? Page 36

**QUOTED AAYAA AND EXPLANATION OFFERED**

*"There is not an animal (that lives) on the earth, nor a being thatflies on its wings, but (forms part of) communities like you."* **[Al-Qur'an 6:38]**

Research has shown that animals and birds live in communities, i.e. they organize, and live and work together.

**ENGLISH TRANSLATION WILLIAM PICKTHALL**

**Q6:38** *"There is not an animal in the earth, nor a flying creature flying on two wings, but they are peoples like unto you. We have neglected nothing in the Book (of Our decrees). Then unto their Lord they will be gathered"*

**ENGLISH TRANSLATION SAHIH INTERNATIONAL**

**Q6:38** *"And there is no creature on [or within] the earth or bird that flies with its wings except [that they are] communities like you. We have not neglected in the Register a thing. Then unto their Lord they will be gathered"*

# प्राणीशास्त्र: जानवर और पक्षी समुदायों में रहते हैं

**पुस्तक संदर्भ (वैज्ञानिक तथ्य / चमत्कार)**

कुरआन और आधुनिक विज्ञान अनुकूल या असंगत? पृष्ठ 36

**उद्धृत आयत और दी गई व्याख्या**

*"धरती पर ऐसा कोई जानवर नहीं है, और न ही ऐसा कोई जीव है जो अपने पंखों पर उड़ता हो, जो तुम्हारे जैसे समुदायों में न रहता हो।"* **[अल-क़ुरआन 6:38]**

अनुसंधान से पता चला है कि जानवर और पक्षी समुदायों में रहते हैं, अर्थात् वे संगठित होते हैं, एक साथ रहते हैं और मिलकर कार्य करते हैं।

**हिंदी अनुवाद फ़ारूक़ ख़ान और नदवी**

**Q6:38**

*"धरती में चलने-फिरने वाला कोई भी प्राणी हो या अपने दोनों पंखों से उड़न वाला कोई पक्षी, ये सब तुम्हारी ही तरह के गिरोह हैं। हमने किताब में कोई भी चीज़ नहीं छोड़ी है। फिर वे अपने रब की ओर इकट्ठे किए जाएँगे।"*

**उर्दू अनुवाद फ़ारूक़ ख़ान और नदवी**

**Q6:38** *"ज़मीन में जो चलने-फिरने वाला (हैवान) या अपने दोनों परों से उड़ने वाला परिंदा है उनकी भी तुम्हारी तरह जमाअतें हैं और सबके सब लौह महफ़ूज़ में मौजूद (हैं)। हमने किताब (क़ुरान) में कोई बात नहीं छोड़ी है। फिर सबके सब (चरिन्द हों या परिन्द) अपने परवरदिगार के हुज़ूर में लाए जाएँगे।"*

**TAFSIR IBN KATHIR**

There is not a moving (living) creature on earth, nor a bird that flies with its two wings, but are Umam like you.

Mujahid commented, “Meaning, various species that have distinct names."

Qatadah said, “Birds are an Ummah, humans are an Ummah and the Jinns are an Ummah."

As-Suddi said that, (but are Umam like you) means, creations (or species).

**TAFSIR JALALAYN**

There is no (mā min: min is extra) animal, that crawls, on the earth and no bird that flies, through the air, with its wings, but they are communities like to you, in the way that its creation has been ordained, together with its sustenance and affairs. We have neglected nothing (min shay’: min is extra) in the Book, in the Preserved Tablet (al-lawh al-mahfūz), [nothing] that We have not written; then to their Lord they shall be gathered, and judgement shall be passed upon them, and the hornless sheep shall retaliate against the horned ram, and then it will be said to them [the animals], ‘Be dust’.

**PRESENT DAY SCIENTIFIC KNOWLEDGE**

There are few creatures on Earth that do not live in social communities, meaning they lead a solitary life. For example, leopard, octopus, python, and most snakes.

**तफ़्सीर इब्न कसीर**

"धरती पर ऐसा कोई चलने-फिरने वाला जीवित प्राणी नहीं है, और न ही ऐसा कोई पक्षी है जो अपने दोनों पंखों से उड़ताहो, लेकिन ये तुम्हारे जैसे उम्मतें (समुदाय) हैं।"

मुजाहिद ने कहा: इसका अर्थ है, विभिन्न प्रजातियाँ जिनके अलग-अलग नाम हैं। कतादा ने कहा: पक्षी एक उम्मत हैं, मनुष्य एक उम्मत हैं, और जिन्न भी एक उम्मत हैं। अस-सद्दी ने कहा: "लेकिन ये भी उम्मतें हैं" का अर्थ है, सृष्टियाँ या प्रजातियाँ।

**तफ़्सीर जलालैन**

धरती पर ऐसा कोई जीवित प्राणी नहीं है जो रेंगताहो, और न ही ऐसा कोई पक्षी है जो अपने पंखों से हवामें उड़ताहो, लेकिन ये तुम्हारे जैसे समुदाय हैं, जिस प्रकार उनकी सृष्टि और उनका जीविकोपार्जन और उनके कामकाज तय किए गए हैं। हमने किताब (अल-किताब) में कुछ भी छोड़कर नहीं रखा, अर्थात् अल-लौह अल-महफूज़ (संग्रहित तालिका) में कुछ भी ऐसा नहीं है जिसे हमने न लिखा हो; फिर उन्हें उनके रब के पास एकत्र किया जाएगा, और उन पर न्याय किया जाएगा। और बिना सींग वाली भेड़ सींग वाली सींग से बदल लेगी, और फिर उन "फिर उनसे कहा जाएगा [जानवरों से], 'धूल बन जाओ।'"

**वर्तमान वैज्ञानिक समझ**

धरती पर कुछ जीव ऐसे हैं जो सामाजिक समुदाय में नहीं रहते, यानी वे अकेले जीवन जीते हैं। जैसे: तेंदुआ, ऑक्टोपस, पायथन, अधिकांश साँप।

# THE FLIGHT OF BIRDS

**BOOK REFERENCE (SCIENTIFIC FACT / MIRACLE)**

The Qur'an and Modern Science: Compatible or Incompatible? Page 36-37

**QUOTED AAYAA AND EXPLANATION OFFERED**

*"Do they not look at the birds, held poised in the midst of (the air and) the sky? Nothing holds them up but (the power of) Allah. Verily in this are Signs for those who believe."* **[Al-Qur'an 16:79]**

*"Do they not observe the birds above them, spreading their wings and folding them in? None can uphold them except (Allah) Most Gracious: truly it is He that watches over all things."* **[Al-Qur'an 67:19]**

The Arabic word amsaka literally means, 'to put one's hand on, seize, hold, hold someone back,' which expresses the idea that Allah holds the bird up in His power.

These verses stress the extremely close dependence of the birds' behaviour on Divine law. Modern scientific data has shown the degree of perfection attained by certain species of birds with regard to the programming of their movements. It is only the existence of a migratory programme in the genetic code of the birds that can explain the long and complicated journey.

# पक्षियों की उड़ान

**<u>पुस्तक संदर्भ (वैज्ञानिक तथ्य / चमत्कार)</u>**

क़ुरआन और आधुनिक विज्ञान अनुकूल या असंगत? पृष्ठ 36-37

**<u>उद्धृत आयत और दी गई व्याख्या</u>**

*"क्या उन्होंने पक्षियों को नहीं देखा जो आकाश में (हवा और आसमान के बीच) थमे हुए हैं? उन्हें अल्लाह के सिवा कोई थामे नहीं रखता। निस्संदेह इसमें ईमान लाने वालों के लिए निशानियाँ हैं।"* **[अल-क़ुरआन 16:79]**

*"क्या वे अपने ऊपर उड़ते हुए पक्षियों को नहीं देखते, जो कभी अपने पंख फैलाते हैं और कभी समेट लेते हैं? उन्हें रहमान (अत्यंत कृपालु अल्लाह) के सिवा कोई थामे नहीं रखता। निश्चय ही वही हर चीज़ पर निगरानी रखने वाला है।"* **[अल-क़ुरआन 67:19]**

अरबी शब्द "अम्सका" का शाब्दिक अर्थ है — "हाथ से पकड़ना, थाम लेना, क़ाबू में रखना या किसी को गिरने से रोकना।"

यह शब्द इस भाव को व्यक्त करता है कि अल्लाह अपनी शक्ति द्वारा पक्षियों को थामे हुए हैं।

ये आयतें इस बात पर ज़ोर देती हैं कि पक्षियों का व्यवहार ईश्वरीय क़ानून पर अत्यंत निकटता से निर्भर है। आधुनिक वैज्ञानिक शोधों से यह स्पष्ट हुआ है कि कुछ पक्षी प्रजातियों में उनके गतियों की योजना अत्यंत पूर्णता के साथ प्रोग्राम की गई है। पक्षियों की आनुवंशिक संरचना (जेनेटिक कोड) में मौजूद प्रवासीय कार्यक्रम ही उनकी लंबी और जटिल यात्राओं की व्याख्या कर सकता है।

**ENGLISH TRANSLATION WILLIAM PICKTHALL**

**Q16:79***"Have they not seen the birds obedient in mid-air? None holdeth them save Allah. Lo! herein, verily, are portents for a people who believe"*

**Q67:19***"Have they not seen the birds above them spreading out their wings and closing them? Naught upholdeth them save the Beneficent. Lo! He is Seer of all things"*

**ENGLISH TRANSLATION SAHIH INTERNATIONAL**

**Q16:79** *"Do they not see the birds controlled in the atmosphere of the sky? None holds them up except Allah. Indeed in that are signs for a people who believe"*

**Q67:19***"Do they not see the birds above them with wings outspread and [sometimes] folded in? None holds them [aloft] except the Most Merciful. Indeed He is, of all things, Seeing"*

**TAFSIR IBN KATHIR**

**Q16:79** Then Allah tells His servants to look at the birds held (flying) in the sky, between heaven and earth, and how He has caused them to fly with their wings in the sky. They are held up only by Him, it is He Who gave them the strength to do that, subjecting the air to carry them and support them.

## हिंदी अनुवाद फ़ारूक़ ख़ान और नदवी

**Q16:79** *"क्या उन्होंने पक्षियों को नभ मंडल में वशीभूत नहीं देखा? उन्हें तो बस अल्लाह ही थामे हुए हैं। निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए कितनी ही निशानियाँ हैं जो ईमान लाएँ।"*

**Q67:19** *"क्या उन्होंने अपने ऊपर पक्षियों को पंक्तबद्ध पंख फैलाए और उन्हें समेटते नहीं देखा? उन्हें रहमान के सिवा कोई और नहीं थामे रहता। निश्चय ही वह हर चीज़ को देखता है।"*

## उर्दू अनुवाद फ़ारूक़ ख़ान और नदवी

**Q16:79** *"क्या उन लोगों ने परिन्दों की तरफ़ गौर नहीं किया जो आसमान के नीचे हवा में घिरे हुए (उड़ते रहते हैं) उनको तो बस खुदाही (गिरने से) रोकता है। बेशक इसमें भी (कुदरत-ए-खुदा की) ईमानदारों के लिए बहुत सी निशानियाँ हैं।"*

**Q67:19** *"क्या उन लोगों ने अपने सरों पर चिड़ियों को उड़ते नहीं देखा जो पंखों को फैलाए रहती हैं और समेट लेती हैं कि खुदा के सिवा उन्हें कोई रोके नहीं रह सकता। बेशक वह हर चीज़ को देख रहा है।"*

## तफ़सीर इब्न कसीर

**Q16:79** इसके बाद अल्लाह अपने बन्दों को पक्षियों की ओर ध्यान दिलाता है, जो आकाश में, आसमान और धरती के बीच उड़ते हुए थमे रहते हैं, और यह कि किस प्रकार अल्लाह ने उन्हें अपने पंखों के द्वारा आकाश में उड़ने की क्षमता प्रदान की है। उन्हें थामे रखने वाला अल्लाह के सिवा कोई नहीं है। वही है जिसने उन्हें यह शक्ति दी है, और उसी ने हवा को उनके अधीन कर दिया है ताकि वह उन्हें उठाए रखे और सहारा दे।

**Q67:19** Allah says, Do they not see the birds above them, spreading out their wings and folding them in? meaning, sometimes they spread their wings out in the wind (gliding) and other times they gather and spread (flapping) the wings in flight. None upholds them, meaning, in the air, except the Most Gracious. meaning, Allah holds them up in the air by subjecting the air to them out of His mercy and His gentleness.

**TAFSIR JALALAYN**

**Q16:79** Have they not observed the birds [how they are] made subservient, disposed to [be able to] fly, in the air of heaven?, that is, in the air between the heaven and the earth. Nothing holds them, when they draw in their wings or open them, lest they fall, except God, by His power. Indeed in that there are signs for a people who believe, [the signs] which are that they have been created in a way that enables them to fly, as well as the creation of the air in such a way that it allows for flight, and the holding of them [up in the air so that they do not fall].

**Q67:19** Or have they not seen the birds above them, in the air, spreading their wings and closing?, their wings after spreading them? (in other words [read wa-yaqbidna] as wa-qābidātin [similar to sāffātin, 'spreading']). Nothing sustains them, from falling, either when they are spreading them or closing them, except the Compassionate One, by His power. Indeed He is Seer of all things.

**Q67:19** अल्लाह फ़रमाता है: क्या वे अपने ऊपर उड़ते हुए पक्षियों को नहीं देखते, जो कभी अपने पंख फैलाते हैं और कभी समेट लेते हैं? अर्थात कभी वे हवा में पंख फैलाकर फिसलते हुए उड़ते हैं (ग्लाइड करते हैं) और कभी उड़ान के दौरान पंखों को समेटते और फैलाते हैं (फड़फड़ाते हैं)। उन्हें हवा में थामे रखने वाला—अर्थात गिरने से बचाने वाला—रहमान (अत्यंत कृपालु अल्लाह) के सिवा कोई नहीं है। अर्थ यह है कि अल्लाह अपनी रहमत और अपनी कोमलता के कारण हवा को उनके अधीन कर देता है, जिससे वह उन्हें आकाश में थामे रखती है।

## तफ़्सीर जलालैन

**Q16:79** क्या उन्होंने पक्षियों को नहीं देखा कि किस प्रकार उन्हें अधीन कर दिया गया है, ताकि वे आकाश की हवा में उड़ सकें—अर्थात आकाश और धरती के बीच की हवा में? जब वे अपने पंख समेटते हैं या फैलाते हैं, तो उन्हें गिरने से अल्लाह के सिवा कोई नहीं थामे रखता—यह सब उसकी शक्ति से होता है। निश्चय ही इसमें ईमान लाने वालों के लिए निशानियाँ हैं—इस बात की कि पक्षियों को इस प्रकार पैदा किया गया है कि वे उड़ने में सक्षम हों, और हवा को भी ऐसा बनाया गया है कि वह उड़ान के योग्य हो, तथा उन्हें हवा में थामे रखा जाता है ताकि वे गिर न जाएँ।

**Q67:19** या क्या उन्होंने अपने ऊपर आकाश में उड़ते हुए पक्षियों को नहीं देखा, जो अपने पंख फैलाते भी हैं और समेटते भी हैं? (अर्थात "वे पंख फैलाए रहते हैं और फिर उन्हें समेट लेते हैं"—यहाँ पाठ के अनुसार "व-यक़बिद्रा" को "व-क़ाबिदातिन" की तरह समझा गया है, जैसे "साफ़्फ़ातिन" यानी "फैलाए हुए")। उन्हें गिरने से—चाहे वे पंख फैलाए हों या समेटे हुए हों—रहमान (अत्यंत कृपालु अल्लाह) के सिवा कोई नहीं थामे रखता, और यह सब उसकी शक्ति से है। निस्संदेह वही हर चीज़ को देखने वाला है।

The meaning is: have they not inferred from the fact that the birds [are able to] remain in the air that We have the power to do with them what has been mentioned above as well as [inflicting upon them] other kinds of chastisement?

**PRESENT DAY SCIENTIFIC KNOWLEDGE**

Birds glide because their wings are shaped to work well in air. Gravity gives them forward motion as they descend, the lift produced by the wings supports their weight, the shape of the wings reduces air resistance (drag), and birds skilfully use air currents to stay aloft with little effort. It is the same force which holds the aeroplanes, missiles, drones and parachutes in air.

इसका आशय यह है: क्या उन्होंने इस तथ्य से—कि पक्षी हवा में टिके रहते हैं—यह निष्कर्ष नहीं निकाला कि हम (अल्लाह) उनके साथ वह सब करने की शक्ति रखते हैं, जिसका ऊपर उल्लेख किया गया है, और उनके लिए अन्य प्रकार की यातनाएँ (अज़ाब) भी निर्धारित कर सकते हैं?

## वर्तमान वैज्ञानिक समझ

पक्षी इसलिए फिसलकर (ग्लाइड) उड़ पाते हैं क्योंकि उनके पंख हवा में काम करने वाले अच्छे एयरफॉइल होते हैं। ऊँचाई से नीचे आते समय गुरुत्वाकर्षण उन्हें आगे की गति देता है। पंखों से बनने वाला लिफ्ट उनका वजन संभाल लेता है। पंखों की बनावट हवा के प्रतिरोध (ड्रैग) को कम कर देती है। और वे हवा की धाराओं का चतुराई से उपयोग करके बिना ज़्यादा पंख फड़फड़ाए उड़ते रहते हैं। यही वह बल है जो हवाई जहाज़ों, मिसाइलों, ड्रोन और पैराशूट को हवा में थामे रखता है।

# THE BEE AND ITS SKILL, MEDICINE HONEY: HEALING FOR HUMANKIND

**BOOK REFERENCE (SCIENTIFIC FACT / MIRACLE)**

The Qur'an and Modern Science: Compatible or Incompatible? Page 38-39, Page 42-43

**QUOTED AAYAA AND EXPLANATION OFFERED**

*"And thy Lord taught the Bee to build its cells in hills, on trees, and in (men's) habitations; then to eat of all the produce (of the earth), and find with skill the spacious paths of its Lord."*

**[Al-Qur'an 16:68]**

Von-Frisch received the Nobel Prize in 1973 for his research on the behaviour and communication of the bees. The bee, after discovering any new garden or flower, goes back and tells its fellow bees the exact direction and map to get there, which is known as 'bee dance'. The meanings of this insect's movements that are intended to transmit information between worker bees have been discovered scientifically using photography and other methods. The Qur'an mentions in the above verses how the bee with its skill, finds the spacious paths of its Lord.

# मधुमक्खी और उसकी दक्षता, औषधीय शहद: मानवता के लिए उपचार

**<u>पुस्तक संदर्भ (वैज्ञानिक तथ्य / चमत्कार)</u>**

क़ुरआन और आधुनिक विज्ञान अनुकूल या असंगत? पृष्ठ 38-39, पृष्ठ 42-43

**<u>उद्धृत आयत और दी गई व्याख्या</u>**

*"और तुम्हारे रब ने मधुमक्खी को प्रेरणा दी कि वह पहाड़ों में, पेड़ों पर और लोगों के बनाए हुए घरों में अपने छत्ते बनाए; फिर हर प्रकार के फलों और रसों से खाए, और अपने रब के आसान (विस्तृत) रास्तों पर चलती रहे।"*

**[अल-क़ुरआन 16:68]**

कार्ल फ़ॉन-फ्रिश को मधुमक्खियों के व्यवहार और उनके आपसी संचार पर किए गए शोध के लिए 1973 में नोबेल पुरस्कार मिला। जब कोई मधुमक्खी किसी नए बाग़ या फूल के स्रोत को खोज लेती है, तो वह वापस जाकर अपनी साथी मधुमक्खियों को वहाँ तक पहुँचने की सटीक दिशा और मानचित्र बताती है। इसे "बी-डांस" कहा जाता है। इसकी टकी वे गतियाँ, जिनका उद्देश्य कामगार मधुमक्खियों के बीच सूचना पहुँचाना होता है, फ़ोटोग्राफ़ी और अन्य वैज्ञानिक तरीकों से समझी गई हैं।

ऊपर दी गई आयतों में क़ुरआन इसी तथ्य की ओर संकेत करता है कि मधुमक्खी अपनी दक्षता के साथ अपने रब के विस्तृत रास्तों को पहचान लेती है।

Only a couple of centuries ago humans came to know that honey comes from the belly of the bee. But this fact was mentioned in the Qur'an 1,400 years ago in the following verse:

*"There issues from within their bodies a drink of varying colours, wherein is healing for men."* **[Al-Qur'an 16:69]**

**ENGLISH TRANSLATION WILLIAM PICKTHALL**

**Q16:68-69** *"And thy Lord inspired the bee, saying: Choose thou habitations in the hills and in the trees and in that which they thatch; Then eat of all fruits, and follow the ways of thy Lord, made smooth (for thee). There cometh forth from their bellies a drink divers of hues, wherein is healing for mankind. Lo! herein is indeed a portent for people who reflect"*

**ENGLISH TRANSLATION SAHIH INTERNATIONAL**

**Q16:68-69** "And your Lord inspired to the bee, "Take for yourself among the mountains, houses, and among the trees and [in] that which they construct.

Then eat from all the fruits and follow the ways of your Lord laid down [for you]." There emerges from their bellies a drink, varying in colors, in which there is healing for people. Indeed in that is a sign for a people who give thought"

केवल कुछ सदियों पहले ही मनुष्यों को यह पता चला कि शहद मधुमक्खी के पेट से निकलता है। लेकिन यह तथ्य क़ुरआन में 1400 वर्ष पहले ही बयान कर दिया गया था, जैसा कि निम्नलिखित आयत में है:

*"उनके पेटों से विभिन्न रंगों का एक पेय निकलता है, जिसमें मानवों के लिए शिफ़ा (उपचार) है।"*

**[अल-क़ुरआन 16:69]**

**<u>हिंदी अनुवाद फ़ारूक़ ख़ान और नदवी</u>**

**Q16:68-69** *"और तुम्हारे रब ने मधुमक्खी के जी में यह बात डाल दी कि 'पहाड़ों में और वृक्षों में और लोगों के बनाए हुए छत्रों में घर बना; फिर हर प्रकार के फल-फूलों से ख़ुराक ले और अपने रब के समत मार्गों पर चले।' उसके पेट से विभिन्न रंग का एक पेय निकलता है, जिसमें लोगों के लिए आरोग्य है। निश्चय ही सोच-विचार करने वाले लोगों के लिए इसमें एक बड़ी निशानी है।"*

**<u>उर्दू अनुवाद फ़ारूक़ ख़ान और नदवी</u>**

**Q16:68-69** *"और (ऐ रसूल) तुम्हारे परवरदिगार ने शहद की मक्खियों के दिल में ये बात डाली कि तू पहाड़ों और दरख्तों और ऊँची-ऊँची ट्टियाँ (और मकानात पाटकर) बनाते हैं; उनमें अपने छत्ते बना, फिर हर तरह के फलों (के पूरसे) (उनका अर्क) चूसकर फिर अपने परवरदिगार की राहों में ताबेदारी के साथ चली। मक्खियों के पेट से पीने की एक चीज़ निकलती है (शहद) जिसके मुख्तलिफ रंग होते हैं। इसमें लोगों (के बीमारियों) की शिफ़ा (भी) है। इसमें शक़नहीं कि इसमें गौर व फ़िक्र करने वालों के वास्ते (क़ुदरत-ए खुदा की बहुत बड़ी निशानी है)।"*

**TAFSIR IBN KATHIR**

And your Lord inspired the bee, saying: "Take you habitations in the mountains and in the trees and in what they (humans) erect. Then, eat of all fruits, What is meant by inspiration here is guidance. The bee is guided to make its home in the mountains, in trees and in structures erected by man.

The bee's home is a solid structure, with its hexagonal shapes and interlocking forms there is no looseness in its combs.

Then Allah decrees that the bee will have permission to eat from all fruits and to follow the ways which Allah has made easy for it, wherever it wants to go in the vast spaces of the wilderness, valleys and high mountains. Then each bee comes back to its hive without swerving to the right or left, it comes straight back to its home where its offspring and honey are.

It makes wax from its wings, and regurgitates honey from its mouth, and lays eggs from its rear, then the next morning it goes out to the fields again.

and follow the routes of your Lord made easy (for you), Qatadah and Abdur-Rahman bin Zayd bin Aslam said: "This means, in an obedient way," understanding it to be a description of the route of migration. colors, wherein is healing for men. meaning, honey, that is white, yellow, red, or of other good colors, depending on the different things that the bees eat.

**तफ़्सीर इब्न कसीर**

और तुम्हारे रब ने मधुमक्खी को प्रेरणा दी कि तुम पहाड़ों में, पेड़ों पर और उन इमारतों में अपने घर बनाओ जो लोग खड़े करते हैं। फिर हर प्रकार के फलों से खाओ और अपने रब के उन रास्तों पर चलो जिन्हें उसने तुम्हारे लिए आसान बना दिया है। यहाँ "प्रेरणा" से अभिप्राय मार्गदर्शन (हिदायत) है। मधुमक्खी को यह मार्गदर्शन दिया गया कि वह पहाड़ों में, पेड़ों में और मनुष्यों द्वारा बनाई गई संरचनाओं में अपना घर बनाए। मधुमक्खी का घर (छत्ता) अत्यंत मज़बूत और सुव्यवस्थित होता है। उसके षट्भुज (हेक्सागोनल) आकार और आपस में जुड़े हुए कोशितनें सुदृढ़ होते हैं कि उनमें कोई ढीलापन नहीं होता।

फिर अल्लाह ने मधुमक्खी को यह अनुमति दी कि वह हर प्रकार के फलों और रसों से खाए और उन रास्तों पर चले जिन्हें अल्लाह ने उसके लिए सरल बनाया है—चाहे खुले मैदान हों, वादियाँ हों या ऊँचे पहाड़। इसके बाद हर मधुमक्खी बिना दाएँ-बाएँ भटके सीधे अपने छत्ते में लौट आती है, जहाँ उसका बच्चा और शहद मौजूद होता है। मधुमक्खी अपने शरीर से: पंखों के द्वारा मोम बनाती है, मुँह से शहद उगलती है, और पीछे के भाग से अंडे देती है। फिर अगली सुबह वह दोबारा खेतों और फूलों की ओर निकल जाती है। "और अपने रब के उन रास्तों पर चलो जो तुम्हारे लिए आसान बनाए गए हैं" — क़तादा और अब्दुर्रहमान बिन ज़ैद बिन अस्लम ने कहा: इसका अर्थ है आज्ञापालन के साथ चलना, और उन्होंने इसे मधुमक्खी के चलने-फिरने के मार्ग का वर्णन समझा। "उनके पेटों से विभिन्न रंग का एक पेय निकलता है, जिसमें मानवों के लिए शिफ़ा है" — अर्थात शहद, जो सफेद, पीला, लाल या अन्य सुंदर रंगों का होता है। इसके रंग इस बात पर निर्भर करते हैं कि मधुमक्खियाँ किस प्रकार के फूलों और फलों से रस लेती हैं।

In which there is a cure for men. meaning there is a cure in honey for diseases that people suffer from.

**TAFSIR JALALAYN**

And your Lord revealed to the bee, a revealing [effected] through inspiration, [saying] (an, 'that', is either explicative or relates to the verbal noun): 'Choose among the hills habitations, to which you can resort, and among the trees, [also] habitations, and among the trellises which they raise, that is, the places which humans build for you — for otherwise it [the bee] would not resort to these [places].

Then eat from every [kind of] fruit, and follow, enter, the ways of your Lord, [follow] His paths in seeking pastures, [ways] made easily accessible' (dhululan is the plural of dhalūl, and is a circumstantial qualifier referring to al-subul, 'the ways', in other words, [those paths] disposed for you, such that they pose no difficulty for you, even if it should be rough [terrain], and [such that] you would not lose your way when returning therefrom, even if it be far away; it [dhululan] is also said to be [a circumstantial qualifier] referring to the person of [the pronominal suffix of] fa'slukī, 'you follow', meaning [in this case] [follow those paths] in compliance with what is required of you).

"जिसमें मानवों के लिए उपचार है" यानी शहद में उन बीमारियों के लिए शिफ़ा है जिनसे लोग पीड़ित होते हैं।

## तफ़्सीर जलालैन

और तुम्हारे रब ने मधुमक्खी को वह्य (प्रेरणा) के माध्यम से मार्गदर्शन दिया (यहाँ "अन" या तो व्याख्यात्मक है या क्रियात्मक संज्ञा से संबंधित) कि "पहाड़ों में अपने लिए ठिकाने चुनो, जहाँ तुम शरण ले सको; और पेड़ों में भी; और उन बेलों/ढाँचों में भी जिन्हें लोग तुम्हारे लिए बनाते हैं। अर्थात वें स्थान जो मनुष्य मधुमक्खियों के लिए तैयार करते हैं—क्योंकि दिया ऐसा न होता तो मधुमक्खी स्वाभाविक रूप से वहाँ ठिकाना न बनाती।

फिर हर प्रकार के फलों से खाओ, और अपने रब के रास्तों पर चलो अर्थात चरागाहों और भोजन की तलाश में उसके मार्गों का अनुसरण करो "जो तुम्हारे लिए आसान बनाए गए हैं।" यहाँ "धुलुलन" शब्द "धलूल" का बहुवचन है और "रास्तों" (सुबुल) की स्थिति का वर्णन करता है।

अर्थ यह है कि यह रास्ते तुम्हारे लिए इस प्रकार सुगम कर दिए गए हैं कि वे कठिन नहीं होते, चाहे इलाक़ा कितना ही ऊबड़-खाबड़ क्यों न हो; और उनसे लौटते समय तुम रास्ता नहीं भटकतीं, चाहे दूरी कितनी ही अधिक क्यों न हो। यह भी कहा गया है कि "धुलुलन" मधुमक्खी की अवस्था को दर्शाता है—अर्थात वह इन मार्गों पर आज्ञाकारिता के साथ चलती है, जैसे उससे अपेक्षित है।

There comes forth from their bellies a drink, namely, honey, of diverse hues, wherein is a cure for mankind, from [all] ailments; it is also said [that it means that it is a cure only] for some [ailments], as indicated by the indefinite [noun] shifā'un, 'a cure'; or [that it is a cure] for all [ailments] when supplemented with some other [remedy]; or without these [other remedies] but with the resolve (niyya) [to get better]. The Prophet (s) used to prescribe it for anyone suffering from stomach pains, as reported by the two Shaykhs [Bukhārī and Muslim]. Surely in that there is a sign for a people who reflect, upon God's handiwork, exalted be He.

**REMARKS**

Humans have been using honey as medicine for at least 4–5 thousand years, across multiple civilizations. Its medicinal properties were known long before the scientific mechanisms were understood.

Aristotle notes that bees gather nectar-like sweet juices from flowers with a tongue-like organ and carry these juices in their bodies back to the hive for honey production….. They produce the best larvae at the time the honey is a-making. The bee carries wax and bees' bread round its legs, but vomits the honey into the cell…… *Aristotle. (1910). History of Animals Historia Animalium (Book V; D. W. Thompson, Trans.). London: William Heinemann.*

उनके पेटों से एक पेय निकला है अर्थात शहद—जो विभिन्न रंगों का होता है, और जिसमें मनुष्यों के लिए शिफ़ा है अर्थात बीमारियों से उपचार। यह भी कहा गया है कि यह शिफ़ा कुछ बीमारियों के लिए है, जैसा कि "शिफ़ा" शब्द के अनिश्चित (नक़िरा) रूप से संकेत मिलता है; या यह कि शहद अन्य उपचारों के साथ मिलकर गंभीर रोगों में लाभकारी हो सकता है; या फिर केवल शहद ही पर्याप्त हो, यदि उपचार की नियत (इरादा) के साथ लिया जाए। पैग़म्बर मुहम्मद (ﷺ) पेट के दर्द से पीड़ित व्यक्ति को शहद लेने की सलाह दिया करते थे, जैसा कि इमाम बुख़ारी और इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है। निस्संदेह इसमें उन लोगों के लिए एक निशानी है जो विचार करते हैं अर्थात अल्लाह की कारीगरी और उसकी रचना पर चिंतन करते हैं। अल्लाह महान और उच्च है।

**टिप्पणी**

मनुष्य कम से कम 4–5 हज़ार वर्षों से शहद को औषधि के रूप में इस्तेमाल कर रहे हैं, और यह कई सभ्यताओं में प्रचलित था। इसके औषधीय गुण वैज्ञानिक कारणों (जैसे एंटीबैक्टीरियल एंजाइम) समझे जाने से बहुत पहले ही जाने जाते थे।

अरिस्टोटल ने नोट किया कि मधुमक्खियाँ फूलों से रस जैसे मीठे पदार्थ अपने जिह्वा-सदृश अंग से इकट्ठा करती हैं और इन्हें अपने शरीर में लेकर छत्ते में शहद बनाने के लिए वापस आती हैं। वे सबसे अच्छा लार्वा (बीज/अंडे) उस समय पैदा करते हैं जब शहद बन रहा होता है। मधुमक्खी अपने पैरों के चारों ओर मोम और बीज़ की रोटी ले जाती है, लेकिन शहद को अपने मुँह से छत्ते में उगल देती है। स्रोत: *अरिस्टोटल (1910) हिस्ट्री ऑफ़ एनिमल्स / हिस्टोरियाएनिमालियम (बुक v; डी. डब्ल्यू. थॉम्पसन, ट्रांस.) लंदन: विलियम हाइनमैन।*

# SPIDER'S WEB, THE FRAGILE HOME

**BOOK REFERENCE (SCIENTIFIC FACT / MIRACLE)**

The Qur'an and Modern Science: Compatible or Incompatible? Page 39-40

**QUOTED AAYAA AND EXPLANATION OFFERED**

*"The parable of those who take protectors other than Allah is that of the Spider, who builds (to itself) a house; but truly the flimsiest of houses is the Spider's house if they but knew."***[Al-Qur'an 29:41]**

Besides giving the physical description of the spider's web as being very flimsy, delicate and weak, the Qur'an also stresses on the flimsiness of the relationship in the spider's house, where the female spider many a times kills its mate, the male spider.

**ENGLISH TRANSLATION WILLIAM PICKTHALL**

**Q29:41***"The likeness of those who choose other patrons than Allah is as the likeness of the spider when she taketh unto herself a house, and lo! the frailest of all houses is the spider's house, if they but knew"*

# मकड़ी का जाल, नाज़ुक घर

**<u>पुस्तक संदर्भ (चमत्कार / वैज्ञानिक तथ्य)</u>**

क़ुरआन और आधुनिक विज्ञान अनुकूल या असंगत? पृष्ठ 39-40

**<u>उद्धृत आयत और दी गई व्याख्या</u>**

"जो लोग अल्लाह के सिवा दूसरों को संरक्षक बनाते हैं, उनका उदाहरण उस मकड़ी के समान है, जो अपने लिए घर बनाती है; लेकिन सच में, अगर वे जानते, तो मकड़ी का घर सबसे कमजोर घर है।" [क़ुरआन 29:41]

क़ुरआन केवल मकड़ी के जाले की भौतिक विशेषताओं—बहुत नाज़ुक, कमजोर और अस्थिर होने का वर्णन नहीं करता, बल्कि यह मकड़ी के घर में रिश्तों की अस्थिरता पर भी ध्यान देता है। उदाहरण के लिए, मकड़ी के घर में कई बार मादा मकड़ी अपने पुरुष साथी को मार देती है, जो इस नाज़ुकता और अस्थिरता का प्रतीक है।

**<u>हिंदी अनुवाद फ़ारूक़ ख़ान और नदवी</u>**

**Q29:41** *"जिन लोगों ने अल्लाह से हटकर अपने दूसरे संरक्षक बना लिए हैं उनकी मिसाल मकड़ी जैसी है, जिसने अपना एक घर बनाया, और यह सच है कि सब घरों से कमज़ोर घर मकड़ी का घर ही होता है। क्या ही अच्छा होता कि वे जानते"*

**ENGLISH TRANSLATION SAHIH INTERNATIONAL**

**Q29:41***"The example of those who take allies other than Allah is like that of the spider who takes a home. And indeed, the weakest of homes is the home of the spider, if they only knew"*

**TAFSIR IBN KATHIR**

The parable of those who seek protectors from other than Allah is that of a spider who builds a house; but indeed, the weakest of houses is the spider's house -- if they but knew.

**TAFSIR JALALAYN**

The likeness of those who choose besides God [other] patrons, namely, idols, from whom they hope to profit, is as the likeness of the spider that makes a home, for itself in which to shelter. And truly the frailest,

the weakest, of homes is the home of the spider, for it neither protects it from heat nor cold — likewise, idols cannot benefit those who worship them — if they only knew, this, they would not worship them.

**PRESENT SCIENTIFIC KNOWLEDGE**

Most spiders do not kill their male partners. In some spider species, the female kills the male after mating, such as the black widow. The black widow female eats the male to gain nutrition for her eggs and to increase reproductive success. This can also be seen as a special design of nature.

**<u>उर्दू अनुवाद फ़ारूक़ ख़ान और नदवी</u>**

**Q29:41** *"जिन लोगों ने ख़ुदा के सिवा दूसरे कारसाज़ बना रखे हैं उनकी मिसल उस मकड़ी की सी है जिसने (अपने ख़्याल नाकिस में) एक घर बनाया और उसमें तो शक ही नहीं कि तमाम घरों से बोध घर मकड़ी का होता है मगर ये लोग (इतना भी) जानते हो"*

**<u>तफ़्सीर इब्न कसीर</u>**

जो लोग अल्लाह के सिवा दूसरों को संरक्षक मानते हैं, उनका उदाहरण उस मकड़ी के समान है, जो अपने लिए घर बनाती है; लेकिन सच में, यदि वे जानते, तो मकड़ी का घर सबसे कमजोर घर है।

**<u>तफ़्सीर जलालैन</u>**

जो लोग अल्लाह के सिवा अन्य संरक्षक चुनते हैं, जैसे मूर्तियाँ, जिनसे वे लाभ की उम्मीद रखते हैं, उनका उदाहरण उस मकड़ी के समान है, जो अपने लिए घर बनाती है ताकि वह उसमें सुरक्षित रहे। और निश्चय ही सबसे नाज़ुक और सबसे कमजोर घर मकड़ी का घर है, क्योंकि यह उसे न गर्मी से बचा सकता है और न ठंड से — उसी प्रकार मूर्तियाँ भी उन लोगों को कोई लाभ नहीं पहुँचा सकतीं जो उनकी पूजाकरते हैं — यदि वे यह जान पाते, तो वे उनकी पूजा न करते।

**<u>वर्तमान वैज्ञानिक समझ</u>**

ज़्यादातर मकड़ियाँ नर साथी को नहीं मारती। कुछ मकड़ी प्रजातियों में मादा नर को संभोग के बाद मार देती है, जैसे कि ब्लैकविडो। ब्लैकविडो मादा नर को खा लेती है ताकि उसे अंडों के लिए पोषण मिले और प्रजनन सफलता बढ़े। इसे हम प्रकृति की विशेष योजना भी मान सकते हैं।

# LIFESTYLE AND COMMUNICATION OF ANTS

**BOOK REFERENCE (SCIENTIFIC FACT / MIRACLE)**

The Qur'an and Modern Science: Compatible or Incompatible? Page 40-41

**QUOTED AAYAA AND EXPLANATION OFFERED**

In the past, some people would have probably mocked at the Qur'an, taking it to be a book of fairy tales in which ants talk to each other and communicate sophisticated messages.

*"And before Solomon were marshalled his hosts of Jinns and men and birds, and they were all kept in order and ranks. "At length, when they came to a (lowly) valley of ants, one of the ants said: 'O ye ants, get into your habitations, lest Solomon and his hosts crush you (under foot) without knowing it.'"* **[Al-Qur'an 27:17-18]**

Research has shown that the animals or insects whose lifestyle is closest in resemblance to the lifestyle of human beings are the ants. They have an advanced method of communication among themselves.

# चींटियों का जीवन और संचार

**<u>पुस्तक संदर्भ (चमत्कार / वैज्ञानिक तथ्य)</u>**

क़ुरआन और आधुनिक विज्ञान अनुकूल या असंगत? पृष्ठ 40-41

**<u>उद्धृत आयत और दी गई व्याख्या</u>**

अतीत में, कुछ लोग शायद क़ुरआन का मज़ाक उड़ाते और इसे एक परी कथाकी किताब मानते, जिसमें चींटियाँ आपस में बात करती हैं और जटिल संदेश देती हैं।

*"और सुलैमान के आगे उनके जिन्नों, इंसानों और पक्षियों की फौजें लगी हुई थीं, और वे सभी क्रम और पंक्तियों में रखे हुए थे। अंततः जब वे एक (नीची) घाटी मेंं पहुँचे, जहाँ चींटियाँ थीं, तो एक चींटी ने कहा :'हे चींटियोंअपनी ! जगहों में चले जाओ, ताकि सुलैमान और उनकी फौजें तुम्हें बिना जाने कुचल न दें।'"*

**[क़ुरआन 27:17-18]**

अनुसंधान से पता चला है कि जिन जानवरों या कीटों का जीवनशैली मानव-जीवन से सबसे अधिकमिलतीजुलती है-, वे चींटियाँ हैं। उनके बीच अत्याधुनिक संचार प्रणाली है।

**ENGLISH TRANSLATION WILLIAM PICKTHALL**

**Q27:17-18***"And there were gathered together unto Solomon his armies of the jinn and humankind, and of the birds, and they were set in battle order; Till, when they reached the Valley of the Ants, an ant exclaimed: O ants! Enter your dwellings lest Solomon and his armies crush you, unperceiving"*

**ENGLISH TRANSLATION SAHIH INTERNATIONAL**

**Q27:17-18***"And gathered for Solomon were his soldiers of the jinn and men and birds, and they were [marching] in rows.Until, when they came upon the valley of the ants, an ant said, "O ants, enter your dwellings that you not be crushed by Solomon and his soldiers while they perceive not."*

**TAFSIR IBN KATHIR**

And there were gathered before Suleiman his hosts of Jinn and men, and birds, and they all were set in battle order. means, all of Suleiman's troops of Jinn, men and birds were gathered together, and he rode with them in a display of might and glory, with people marching behind him, followed by the Jinn, and the birds flying above his head. When it was hot, they would shade him with their wings.

## हिंदी अनुवाद फ़ारूक़ ख़ान और नदवी

**Q27:17-18** *"सुलैमान के लिए जिन्न और मनुष्य और पक्षियों में से उसकी सेनाएँ एकत्र कर गईं फिर उनकी दरजा بندی की जा रही थी। यहाँ तक कि जब वे चींटियों की घाटी में पहुँचे तो एक चींटी ने कहा, 'ऐ चींटियोंअपने ! घरों में प्रवेश कर जाओ। कहीं सुलैमान और उसकी सेनाएँ तुम्हें कुचलन डालें और उन्हें एहसास भी न हो।'"*

## उर्दू अनुवाद फ़ारूक़ ख़ान और नदवी

**Q27:17-18** *"और सुलेमान के सामने उनके लश्कर जिन्नात और आदमी और परिंदे सब जमा किए जाते थे तो वह सब के सब खड़े (मसल मसल) (एक दिन) यहाँ तक कि जब (ग़रज़ इस तरह लश्कर चलता) किए जाते थे चींटियोंके मैदान में आ निकले तो एक चींटी बोली, 'ऐ चीटीयों अपने अपने बिल में घुस जाओ ऐसा न हो कि सुलैमान और उनका लश्कर तुम्हें रौंद - डाले और उन्हें उसकी खबर भी न हो।'"*

## तफ़्सीर इब्न कसीर

और सुलैमान के आगे उनकी जिन्नों (.अलै), इंसानों और पक्षियों की फौजें एकठ्ठा की गईं, और सभी युद्धक्रम में व्यवस्थित थे।-" अर्थात, सुलैमान की पूरी सेना—जिन्न, इंसान और पक्षी—संगठित रूप में उसके साथ थी, और वह शक्ति और वैभव के प्रदर्शन के साथ उनका नेतृत्व करता था। लोग उसके पीछे मार्च कर रहे थे, जिन्न उसके बाद चल रहे थे, और पक्षी उसके सिर के ऊपर उड़ रहे थे। जब गर्मी होती, तो वे अपने पंखों से उसे छाया प्रदान करते।

Till, when they came to the valley of the ants, meaning, when Suleiman, the soldiers and the army with him crossed the valley of the ants, one of the ants said: "O ants! Enter your dwellings, lest Suleiman and his armies should crush you, while they perceive not." Suleiman, peace be upon him, understood what the ant said, So he smiled, amused at her speech and said:

**TAFSIR JALALAYN**

And, on one journey, Solomon's hosts of jinn and humans and birds stood assembled for him as they were being arrayed, brought together [in groups] and marshalled. When they came to the Valley of the Ants — which is [located] either in Tā'if or in Syria, and whose ants are either small or large — an ant, the queen ant, who had seen Solomon's hosts, said, 'O ants, enter your dwellings, lest Solomon and his hosts crush you while they are unaware!' — the ants are likened to rational beings in their use of the latter's speech.

जब वे चींटियों की घाटी में पहुँचे, अर्थात जब सुलैमान और उनकी सेना चींटियों की घाटी से गुजरे, तो एक चींटी ने कहा :"हे चींटियोंअपने निवास ! में चले जाओ, ताकि सुलैमान और उसकी फौजें तुम्हें अनजाने में कुचल न दें।" सुलैमान ने चींटी की बात को समझा और उसकी बुद्धिमानी (.अलै) पर मुस्कुराए और प्रसन्न हुए, और कहा:

**<u>तफ़्सीर जलालैन</u>**

और एक यात्रा के समय, सुलैमान की जिन्नों, इंसानों और पक्षियों की फौजें उनके लिए एकठ्ठा की गईं, समूहों में व्यवस्थित की गईं और क्रमबद्ध रूप से खड़ी की गईं।

जब वे चींटियों की घाटी में पहुँचे — जो यातोताईफ़ में या सिरिया में स्थित है, और जिनकी चींटियाँ छोटी या बड़ी हो सकती हैं — एक चींटी, रानी चींटी, जिसने सुलैमान की फौजें देखीं, बोली :"हे चींटियोंअपने निवास में ! चले जाओ, ताकि सुलैमान और उसकी फौजें तुम्हें अनजाने में कुचल न दें!" यहाँ चींटियों को बुद्धिमान प्राणी के समान दिखाया गया है।"

## OTHER REFERENCES IN ISLAMIC TEXT ON RELATED TOPIC

**Q27:20***"And he took attendance of the birds and said, "Why do I not see the hoopoe - or is he among the absent"*

**Q27:22***"But the hoopoe stayed not long and said, "I have encompassed [in knowledge] that which you have not encompassed, and I have come to you from Sheba with certain news"*

## PRESENT SCIENTIFIC KNOWLEDGE

Ants primarily communicate through chemical substances called pheromones. The collective behavior and organization of most ants depend largely on this pheromone communication. Other methods such as touch, sound, or vibrations also exist. Ants produce sound or vibrations, but these are very subtle and of high frequency, which the average human cannot hear. Research can record and analyze them only with highly sensitive microphones or vibration sensors.

## इस्लामी धर्मग्रंथों में संबंधित विषय पर अन्य संदर्भ

**Q27:20** *"उसने पक्षियों की जाँचपड़ताल की तो कहा-, "क्या बात है कि मैं हुदहुद को नहीं देख रहा हूँ, (वह यहीं कहीं हैया गायब हो गया है ("*

**Q27:22** *"फिर कुछ अधिक देर नहीं ठहरा कि उसने आकर कहा, "मैंने वह जानकारी प्राप्त की है जो आपको मालूम नहीं है। मैं सब से आपके पास एक विश्वसनीय सूचना लेकर आया हूँ"*

## वर्तमान वैज्ञानिक समझ

चींटियाँ मुख्य रूप से रासायनिक पदार्थ के माध्यम से संचार (फेरोमोन) करती हैं। अधिकांश चींटियों का समूह व्यवहार और संगठन इसी फेरोमोन संचार पर निर्भर करताहै। अन्य तरीके जैसे स्पर्श, ध्वनि या कंपन भी होते हैं। चींटियाँ ध्वनि या कंपन पैदा करती हैं, लेकिन यह बहुत सूक्ष्म और उच्चआवृत्ति वाली होती है-, जिसे आम इंसान सुन नहीं सकता। शोध में अत्यधिक संवेदनशील माइक्रोफोन या वाइब्रेशन सेंसर से ही इसे रिकॉर्ड और समझा जा सकता है।

# PHYSIOLOGY BLOOD CIRCULATION AND MILK

**BOOK REFERENCE (SCIENTIFIC FACT / MIRACLE)**

The Qur'an and Modern Science: Compatible or Incompatible? Page 44-45

**QUOTED AAYAA AND EXPLANATION OFFERED**

*"And verily in cattle there is a lesson for you. We give you to drink of what is inside their bodies, coming from a conjunction between the contents of the intestine and the blood, a milk pure and pleasant for those who drink it."***[Al-Qur'an 16:66]**

*"And in cattle (too) ye have an instructive example: from within their bodies We produce (milk) for you to drink; there are, in them, (besides), numerous (other) benefits for you; and of their (meat) ye eat."***[Al-Qur'an 23:21]**

The 1400-year-old Qur'anic description of the production of milk in cattle is strikingly similar to what modern physiology has discovered in recent times.

**ENGLISH TRANSLATION WILLIAM PICKTHALL**

**Q16:66***"And lo! in the cattle there is a lesson for you. We give you to drink of that which is in their bellies, from betwixt the refuse and the blood, pure milk palatable to the drinkers"*

# फिज़ियोलॉजी रक्त संचार और दूध

**<u>पुस्तक संदर्भ (चमत्कार / वैज्ञानिक तथ्य)</u>**

क़ुरआन और आधुनिक विज्ञान अनुकूल या असंगत? पृष्ठ 44-45

**<u>उद्धृत आयत और दी गई व्याख्या</u>**

*"और निस्संदेह मवेशियों में तुम्हारे लिए एक सबक है। हम तुम्हें उनके शरीर के अंदर से पीने के लिए देते हैं, जो आंत और रक्त की सामग्री के मिलन से उत्पन्न होता है, एक शुद्ध और सुखद दूध जो पीने वालों के लिए प्रिय है।"* **[अल क़ुरआन-16:66]**

*"और मवेशियों में भी तुम्हारे लिए एक शिक्षा देने वाला उदाहरण हैउनके : शरीर के भीतर से हम तुम्हारे लिए पैदा करते हैं जिसे तुम पी सकते (दूध) हो; उनमें तुम्हारे लिए कई और लाभ भी हैं (इसके अलावा); और उनका तुम खाते हो। (मांस)"* **[अल क़ुरआन-23:21]**

मवेशियों में दूध उत्पादन का यह 1400 साल पुराना क़ुरआनी विवरण आधुनिक फिज़ियोलॉजी द्वारा हाल ही में खोजे गए तथ्यों के साथ चौंकाने वाली समानता रखता है।

**<u>हिंदी अनुवाद फ़ारूक़ ख़ान और नदवी</u>**

Q16:66 "और तुम्हारे लिए चौपायों में से एक बड़ी शिक्षासामग्री है-, जो कुछ उनके पेटों में है उसमें से गोबर और रक्त से मध्य से हम तुम्हे विशुद्ध दूध पिलाते हैं, जो पीने वालों के लिए अत्यन्त प्रिय है"

**Q23:21***"And lo! in the cattle there is verily a lesson for you. We give you to drink of that which is in their bellies, and many uses have ye in them, and of them do ye eat"*

**ENGLISH TRANSLATION SAHIH INTERNATIONAL**

**Q16:66***"And indeed, for you in grazing livestock is a lesson. We give you drink from what is in their bellies - between excretion and blood - pure milk, palatable to drinkers"*

**Q23:21***"And indeed, for you in livestock is a lesson. We give you drink from that which is in their bellies, and for you in them are numerous benefits, and from them you eat"*

**TAFSIR IBN KATHIR**

**Q16:66** He said, from between excretions and blood, pure milk; meaning it is free of blood, and is pure in its whiteness, taste and sweetness. It is between excrement and blood in the belly of the animal, but each of them goes its own way after the food has been fully digested in its stomach. The blood goes to the veins, the milk goes to the udder, the urine goes to the bladder and the feces goes to the anus. None of them gets mixed with another after separating, and none of them is affected by the other.

**Q23:21** *"और निश्चय ही तुम्हारे लिए चौपायों में भी एक शिक्षा है। उनके पेटों में जो कुछ है उसमें से हम तुम्हें पिलाते हैं। और तुम्हारे लिए उनमें बहुत से फ़ायदे हैं-और उन्हें तुम खाते भी हो"*

## उर्दू अनुवाद फ़ारूक़ ख़ान और नदवी

**Q16:66** *"और इसमें शक़ नहीं कि चौपायों में भी तुम्हारे लिए इबरत की ) है कि उनके पेट में ख़ाक (बात, बला, गोबर और ख़ून (जो कुछ भराहै) उसमें से हमेतुमको ख़ालिस दूध पिलाते हैं जो पीने वालों के लिए खुशगवार है"*

**Q23:21** *"और उसमें भी शक़ नहीं कि तुम्हारे वास्ते चौपायों में भी इबरत की जगह है और जो कुछ उनके पेट में है उससे हम तुम्हे दूध (ख़ाक बला) पिलाते हैं और जानवरों में तो तुम्हारे और भी बहुत से फ़ायदे हैं और उन्हीं में से बाज़ तुम खाते हो"*

## तफ़्सीर इब्न कसीर

**Q16:66** गोबर और रक्त के बीच से शुद्ध दूध (निकलने वाला), अर्थात वह दूध रक्त से मुक्त होता है और अपनी सफेदी, स्वाद और मिठास में बिल्कुल शुद्ध होता है। वह दूध पशु के पेट में गोबर और रक्त के बीच स्थित होता है, किंतु भोजन के पूरी तरह पच जाने के बाद, इन सब का रास्ता अलगअलग- हो जाता है। रक्त नसों की ओर चला जाता है, दूध थनों की ओर (अंबुओं) चला जाता है, मूत्र मूत्राशय की ओर चला जाता है और मलगुदा की ओर। अलगअलग हो जाने के बाद इनमें से कोई भी दूसरी चीज़ के साथ नहीं- - दूसरे से प्रभावित होती है।-मिलती और न ही एक

**Q23:21** And verily, in the cattle there is indeed a lesson for you. We give you to drink of that which is in their bellies. And there are, in them, numerous benefits for you, and of them you eat. And on them and on ships you are carried, Here Allah mentions the benefits He has given to His servants in cattle, for they drink their milk which comes out from between dung and blood, they eat their meat and clothe themselves with their wool and hair, they ride on their backs and carry heavy burdens on them to faraway lands, as Allah says:

**TAFSIR JALALAYN**

**Q16:66** And truly for you there is in the cattle a lesson, an example to learn from. We give you to drink — [this introduces] the explanation of the 'lesson' — of that which is in their bellies, the cattle's [bellies], from (min indicates a new subject and is semantically connected to nusqīkum, 'We give you to drink') between the refuse, the intestinal waste, and the blood, pure milk, contaminated by either the refuse or the blood, neither in its taste, odour or colour, even though it [the milk] is [situated] between the two, palatable to drinkers, easily passing down their throats, not causing any choking.

**Q23:21** निश्चय ही चौपायों में तुम्हारे लिए बड़ी शिक्षा है। हम तुम्हें उनके पेटों में से पेय पि (निकलने वाला)लाते हैं और उनमें तुम्हारे लिए अनेक लाभ हैं — तुम उनका दूध पीते हो, उनका मांस खाते हो, उनकी ऊन और बालों से वस्त्र बनाते हो, उनकी पीठ पर सवारी करते हो और वे तुम्हारा भारी बोझ दूरदराज़ की भूमि तक ढोते हैं। और उन्हीं पर तथाजहाज़ों पर तुम - ढोए जाते हो। यहाँ अल्लाह अपने बंदों पर अपनी नेमतों का उल्लेख करता है — कि वह उन्हें चौपायों से दूध पिलाता है, जो गोबर और रक्त के बीच से निकलता है, वे उनका मांस खाते हैं, उनकी ऊन और बालों से कपड़े बनाते हैं, उनकी पीठ पर सवारी करते हैं और उनसे दूरस्थ स्थानों तक भार ढुलवाते हैं — जैसा कि अल्लाह ने अन्य स्थानों पर भी उल्लेख किया है।

## तफ़्सीर जलालैन

**Q16:66** निश्चय ही तुम्हारे लिए चौपायों में एक शिक्षा है, अर्थात उनसे सीख लेने योग्य एक उदाहरण। हम तुम्हें उनके पेटों में से पिलाते हैं, यहाँ इस "शिक्षा" की व्याख्या की जा रही है अर्थात चौपायों के पेटों में जो कुछ है, उसमें से। गोबर और रक्त के बीच से (आंतों के अपशिष्ट), यहाँ "मिन" (से ( एक नए विषय की ओर संकेत करता है और यह अर्थ की दृष्टि से "नुस्क़ीकुम" (हम तुम्हें पिलाते हैं से जुड़ा हुआ है ("शुद्ध दूध", जो न गोबर से दूषित होता है और न रक्त से, न उसके स्वाद में, न उसकी गंध में और न उसके रंग में कोई अशुद्धता होती है, हालाँकि वह इन दोनों के बीच स्थित होता है। पीने वालों के लिए रुचिकर, जो सहज रूप से गले से उतर जाता है और पीते समय किसी प्रकार की रुकावट या घुटन पैदा नहीं करता।

**Q23:21** And surely in the cattle, that is, [in] camels, cows and sheep, there is for you a lesson, an admonition for you to heed. We give you to drink (read nasqīkum or nusqīkum) of what is in their bellies, [of] milk, and you have many uses in them, such as [the extraction of] wool, fur and hairs and other [uses], and you eat of them.

**REMARKS**

According to Hippocrates (5th century BCE) and later Aristotle (4th century BCE):Food is digested in the stomach, it turns into blood, in females, some of this blood is, used for menstruation or diverted to the breasts and converted into milk. Aristotle explicitly stated: Milk is blood that has been "whitened" and refined in the breasts.

Before modern science, people did not know that: Milk is synthesized in alveoli of mammary glands and blood only supplies raw materials, not milk itself. Instead, they believed: Milk is produced inside the body, it was simply redirected or filtered.

**Q23:21** और निश्चय ही चौपायों में अर्थात ऊँटों, गायों और भेड़ों में — तुम्हारे लिए एक शिक्षा है, एक ऐसी नसीहत जिस पर ध्यान दिया जाना चाहिए। हम तुम्हें उनके पेटों में से पिलाते हैं पाठ में नसक़ीकुम या) (अनुसक़ीकुम दोनों पाठ प्रचलित हैं, अर्थात दूध। और उनमें तुम्हारे लिए अनेक लाभ हैं, जैसे ऊन, फर, बालों आदि का उपयोग और अन्य कई फ़ायदे। और उनमें से तुम खाते भी हो।

## टिप्पणी

हिप्पोक्रेट्स  पूर्व-ईसा)5वीं शताब्दी पूर्व-ईसा) और बाद में अरस्तू (4वीं शताब्दीभोजन पेट में पचता है और रक्त में परिवर्तित हो :के अनुसार ( जाता है। स्त्रियों में इस रक्त का एक भाग मासिक धर्म में खर्च हो जाता है या स्तनों की ओर भेज दिया जाता है, जहाँ वह दूध में बदल जाता है। अरस्तू ने स्पष्ट रूप से कहा थादूध वह रक्त है जिसे स्तनों में सफेद कर : दिया गया और परिष्कृत किया गया।

आधुनिक विज्ञान से पहले लोग यह नहीं जानते थे कि दूध का निर्माण स्तन ग्रंथियों में होता है और रक्त केवल कच्चा पदार्थ प्रदान करता है, स्वयं दूध नहीं। इसके विपरीत, उनका यह विश्वास था कि दूध पहले शरीर में बनता है और उसे केवल किसी अन्य दिशा में मोड़ दिया जाता है या छान दिया जाता है।

# EMBRYOLOGY MUSLIMS SEEK ANSWERS

**BOOK REFERENCE (SCIENTIFIC FACT / MIRACLE)**

The Qur'an and Modern Science: Compatible or Incompatible? Page 46-48

**QUOTED AAYAA AND EXPLANATION OFFERED**

*"Proclaim! (or Read!) In the name of thy Lord and Cherisher, Who created Created man, out of a (mere) clot of congealed blood."* **[Al-Qur'an 96:1-2]**

The Arabic word alaq, besides meaning a congealed clot of blood, also means something that clings, a leech-like substance.

Dr. Keith Moore had no knowledge whether an embryo in the initial stages appears like a leech. To check this out he studied the initial stage of the embryo under a very powerful microscope and compared what he observed with the diagram of a leech. He was astonished at the striking resemblance between the two!

**English translation William Pickthall**

**Q96:1-2***"Read: In the name of thy Lord Who createth, Createth man from a clot"*

# भ्रूण विज्ञान: मुसलमान इसके उत्तर तलाशते है

**<u>पुस्तक संदर्भ (चमत्कार / वैज्ञानिक तथ्य)</u>**

क़ुरआन और आधुनिक विज्ञान अनुकूल या असंगत? पृष्ठ 46-48

**<u>उद्धृत आयत और दी गई व्याख्या</u>**

*"पढ़ो अपने पालनहार के नाम से (या घोषणाकरो), जिसने सृष्टि की। उसने मनुष्य को एक जमे हुए रक्त के थक्के से पैदा किया। (मात्र)"* **[अल-क़ुरआन96:1-2]**

अरबी शब्द 'अलक़' का अर्थ केवल जमा हुआ रक्त का थक्का ही नहीं है, बल्कि इसका अर्थ किसी चीज़ से चिपकने वाला पदार्थ तथा जोंक जैसा पदार्थ भी होता है।

डॉ. कीथ मूर को प्रारंभिक अवस्था में भ्रूण का जोंक के समान दिखना ज्ञात नहीं था। इस बात की जाँच के लिए उन्होंने अत्यंत शक्तिशाली सूक्ष्मदर्शी के अंतर्गत भ्रूण की प्रारंभिक अवस्था का अध्ययन किया और उसकी तुलना जोंक के चित्र से की। वे यह देखकर अत्यंत आश्चर्यचकित रह गए कि दोनों के बीच अद्भुत समानता पाई जाती है।

**<u>हिंदी अनुवाद फ़ारूक़ ख़ान और नदवी</u>**

**Q96:1-2** *"पढ़ो, अपने रब के नाम के साथ जिसने पैदा किया, पैदा किया मनुष्य को जमे हुए ख़ून के एक लोथड़े से"*

**English translation Sahih International**

**Q96:1-2***"Recite in the name of your Lord who created - Created man from a clinging substance"*

**TAFSIR IBN KATHIR**

Read! In the Name of your Lord Who created. He has created man from a clot.

These Ayat inform of the beginning of man's creation from a dangling clot, and that out of Allah's generosity

**TAFSIR JALALAYN**

Recite, bring recitation into existence, beginning with: In the Name of your Lord Who created, all creatures; created man (al-insān: the generic) from a blood-clot (‘alaq is the plural of ‘alaqa, which is a small quantity of congealing blood).

**OTHER REFERENCES IN ISLAMIC TEXT ON RELATED TOPIC**

Nutfah – Alaqah – Muḍghah – Izam –Lahm

The Arabic word “alaqa” is mentioned in many hadiths in various contexts including creation and usually translated as clot.

**Q75:38***"Then he became a clot; then (Allah) shaped and fashioned"*

## उर्दू अनुवाद फ़ारूक़ ख़ान और नदवी

**Q96:1-2** *"(ऐ रसूल अपने परवरदिगार का नाम लेकर पढ़ो जिसने हर ( पैदा किया (चीज़ को); उसने इंसान को जमे हुए ख़ून से पैदा किया पढ़ो"*

## तफ़्सीर इब्न कसीर

"पढ़ो ! अपने पालनहार के नाम से, जिसने सृष्टि की।

उसने मनुष्य को एक जमे हुए रक्त के लटकते हुए थक्के से पैदा किया। ये आयतें मनुष्य की सृष्टि की प्रारंभिक अवस्था की सूचना देती हैं कि उसकी रचना एक लटकते हुए थक्के से की गई (अलक़), और यह कि अल्लाह अपनी महान उदारता और कृपा से मनुष्य को आगे विकसित करता है।

## तफ़्सीर जलालैन

पढ़ो अर्थात् पाठ को अस्तित्व में लाओ—इस आरंभ के साथ किअपने : पालनहार के नाम से, जिसने समस्त सृष्टि को पैदा किया; जिसने मनुष्य को एक रक्त के थक्के (अर्थात्मा मानव जाति को सामान्य रूप से :इंसान-अल) से पैदा किया। यहाँ'अलक़' शब्द 'अलक़ा' का बहुवचन है, और 'अलक़ा' का अर्थ है जमे हुए रक्त की एक छोटी मात्रा।

## इस्लामी धर्मग्रंथों में संबंधित विषय पर अन्य संदर्भ

नुत्फ़ा – अलक़ा – मुद्ग़ा इज़ाम -- लह्म

अरबी शब्द "अलक़ा" का उल्लेख अनेक हदीसों में विभिन्न संदर्भों, विशेषकर सृष्टिनिर्माण के संदर्भ में मिलता है/; ज़्यादातर स्थान पर इसका अनुवाद "(ख़ून काथक्का (" के रूप में ही किया गया है।

**Q75:38** *"फिर लोथड़ा हुआ फिर ख़ुद ने उसे बनाया"*

**Sahih al-Bukhari 318:** The Prophet (ﷺ) said, "At every womb Allah appoints an angel who says, 'O Lord! A drop of semen, O Lord! A clot. O Lord! A little lump of flesh." Then if Allah wishes (to complete) its creation, the angel asks, (O Lord!) Will it be a male or female, a wretched or a blessed, and how much will his provision be? And what will his age be?' So all that is written while the child is still in the mother's womb."

**Sahih al-Bukhari 3208:** Allah's Apostle (ﷺ), the true and truly inspired said, "(The matter of the Creation of) a human being is put together in the womb of the mother in forty days, and then he becomes a clot of thick blood for a similar period, and then a piece of flesh for a similar period. Then Allah sends an angel who is ordered to write four things. He is ordered to write down his (i.e. the new creature's) deeds, his livelihood, his (date of) death, and whether he will be blessed or wretched (in religion). Then the soul is breathed into him. So, a man amongst you may do (good deeds till there is only a cubit between him and Paradise and then what has been written for him decides his behavior and he starts doing (evil) deeds characteristic of the people of the (Hell) Fire. And similarly, a man amongst you may do (evil) deeds till there is only a cubit between him and the (Hell) Fire, and then what has been written for him decides his behavior, and he starts doing deeds characteristic of the people of Paradise."

**सहीह अल-बुख़ारी 318:** पैग़म्बर मुहम्मद (ﷺ) ने फ़रमाया: हर गर्भ में अल्लाह एक फ़रिश्ता नियुक्त करता है। वह कहता है: "ऐ मेरे रब! (यह) वीर्य की एक बूँद (नुत्फ़ा) है। ऐ मेरे रब! (अब यह) रक्त का थक्का (अलक़ा) है। ऐ मेरे रब! (अब यह) मांस का एक छोटा सा टुकड़ा है।" फिर जब अल्लाह उसकी सृष्टि को पूरा कर न चाहता है, तो फ़रिश्ता पूछता है: ऐ रब! यह न र होगा या मादा? बदनसीब होगा या ख़ुशनसीब? उसकी रोज़ी कितनी होगी? और उसकी उम्र कितनी होगी?' यह सब कुछ उस समय लिख दिया जाता है, जब बच्चा अभी माँ के गर्भ में ही होता है।"

**सहीह अल-बुख़ारी 3208:** अल्लाह के रसूल (ﷺ), जो सच्चे हैं और जिन पर सच्ची वह्ी आती है, ने फ़रमाया: "मनुष्य की रचना माँ के गर्भ में चालीस दिनों में एकत्र की जाती है। फिर वह उतने ही समय के लिए जमे हुए गाढ़े रक्त (अलक़ा) की अवस्था में रहता है। फिर उतने ही समय के लिए मांस का एक टुकड़ा बनता है। इसके बाद अल्लाह एक फ़रिश्ता भेजता है और उसे चार बातें लिखने का आदेश देता है: उसके कर्म, उसकी रोज़ी, उसकी मृत्यु की तिथि, और यह कि वह (धर्म के लिहाज़ से) ख़ुशनसीब होगा या बदनसीब। फिर उसमें रूह फूँक दी जाती है। फिर (ऐसा होता है कि) तुम में से कोई व्यक्ति जन्नत वालों जैसे अमल करता रहता है, यहाँ तक कि उसके और जन्नत के बीच केवल एक हाथ का फ़ासला रह जाता है, तभी जो उसके लिए लिखा जा चुका होता है वह प्रभावी हो जाता है, और वह जहन्नम वालों जैसे अमल करने लगताहै। और इसी तरह कोई व्यक्ति जहन्नम वालों जैसे अमल करता रहता है, यहाँ तक कि उसके और जहन्नम के बीच केवल एक हाथ का फ़ासला रह जाता है, फिर जो उसके लिए लिखा गया होता है वह प्रभावी हो जाता है, और वह जन्नत वालों जैसे अमल करने लगताहै।"

**Gestation period:**

**Q2:233***"Mothers may breastfeed their children two complete years for whoever wishes to complete the nursing [period]. ....."*.

**Q31:14***".....His mother carried him, [increasing her] in weakness upon weakness, and his weaning is in two years…"*

**Q46:15***".....and his gestation and weaning [period] is thirty months. ..."*

From the above verse, Islamic scholars conclude that gestation period is generally considered to be six months, for six months of pregnancy combined with twenty-four months of breastfeeding amounts to a total of thirty months.

**PRESENT DAY SCIENTIFIC KNOWLEDGE**

Week 1 — The sperm and egg (ovum) unite to form a zygote.

Week 2 — A blastocyst is formed and implants into the wall of the uterus.

Weeks 4–8 — The heartbeat begins; the initial forms of the eyes, ears, hands, and feet start to develop. By the end of this stage, the embryo is called a fetus.

Weeks 9–12 — The face and bones are formed; the fetus begins to move and respond.

**गर्भावस्था की अवधि:**

**Q2:233** *"और जो कोई पूरी अवधि तक दूध प (बच्चे को)िलवाना चाहे, तो माएँ अपने बच्चों को पूरे दो वर्ष तक दूध पिलाएँ....."*

**Q31:14** *"..... उसकी माँ ने निढाल होकर उसे पेट में रखा और दो वर्ष उसके दूध छूटने में लगे ....."*

**Q46:15** *"..... और उसके गर्भ की अवस्था में रहने और दूध छुड़ाने की अवधि तीसमाह है, ....."*

उपरोक्त आयत से इस्लामी विद्वान यह निष्कर्ष निकालते हैं कि सामान्यतः गर्भकाल छः महीने माना जाता है, क्योंकि छः महीने की गर्भावस्था और चौबीस महीने की स्तनपान अवधि दोनों मिलकर 9 महीने की सामान्य अवधि बनाते हैं।

## वर्तमान वैज्ञानिक समझ

सप्ताह 1 — शुक्राणु और अंडाणु से मिलकर ज़ाइगोट बनता है।

सप्ताह 2 — ब्लास्टोसिस्ट बनता है और गर्भाशय की दीवार में चिपक जाता है ।(आरोपण)

सप्ताह 4–8 — हृदय की धड़कन शुरू होती है; आँखों, कानों, हाथों और पैरों के प्रारंभिक रूप विकसित होने लगते हैं। इस चरण के अंत में भ्रूण को फीटस कहा जाता है।

सप्ताह 9–12 — चेहरे और हड्डियों का निर्माण होता है; भ्रूण हिलनाडुलना - शुरू कर देता है।

# DROP EMITTED FROM BETWEEN THE BACK BONE AND THE RIBS

**BOOK REFERENCE (SCIENTIFIC FACT / MIRACLE)**

The Qur'an and Modern Science: Compatible or Incompatible? Page 49-50

**QUOTED AAYAA AND EXPLANATION OFFERED**

*"Now let man but think from what he is created! He is created from a drop emitted Proceeding from between the back bone and the ribs."***[Al-Qur'an 86:5-7]**

In embryonic stages, the reproductive organs of the male and female, i.e. the testicles and the ovaries, begin their development near the kidney between the spinal column and the eleventh and twelfth ribs. Later they descend.

**ENGLISH TRANSLATION WILLIAM PICKTHALL**

**Q86:5-7** *"So let man consider from what he is created. He is created from a gushing fluid; That issued from between the loins and ribs"*

**ENGLISH TRANSLATION SAHIH INTERNATIONAL**

**Q86:5-7***"So let man observe from what he was created. He was created from a fluid, ejected, Emerging from between the backbone and the ribs"*

# रीढ़ की हड्डी और पसलियों के बीच से निकली बूँद

**<u>पुस्तक संदर्भ (वैज्ञानिक तथ्य / चमत्कार)</u>**

क़ुरआन और आधुनिक विज्ञान अनुकूल या असंगत? पृष्ठ 49-50

**<u>उद्धृत आयत और दी गई व्याख्या:</u>**

*"अब मानव सोचें कि उसे किससे बनाया गया है! वह उस बूँद से बनाया गया है जो रीढ़ की हड्डी और पसलियों के बीच से निकलती है।"* **[अल-क़ुरआन 86:5-7]**

भ्रूण विकास के प्रारंभिक चरणों में, पुरुष और स्त्री के प्रजनन अंग, यानी अंडकोष और अंडाशय, अपनी वृद्धि किडनी के पास, रीढ़ की हड्डी और ग्यारहवीं–बारहवीं पसली के बीच शुरू करते हैं। बाद में ये अंग नीचे की ओर उतरते हैं।

**<u>हिंदी अनुवाद फ़ारूक़ ख़ान और नदवी:</u>**

**Q86:5-7** *"अतः मानव को चाहिए कि देखे कि वह किस चीज़ से पैदा किया गया है—एक उछलते पानी से पैदा किया गया है, जो पीठ और पसलियों के मध्य से निकलता है।"*

**<u>उर्दू अनुवाद फ़ारूक़ ख़ान और नदवी:</u>**

**Q86:5-7** *"तो इंसान को देखना चाहिए कि वह किस चीज़ से पैदा हुआ है; वह उछलते हुए पानी (मनी) से पैदा हुआ है; जो पीठ और सीने की हड्डियों के बीच से निकलता है।"*

**TAFSIR IBN KATHIR**

Then Allah says, He is created from a water gushing forth. meaning, the sexual fluid that comes out bursting forth from the man and the woman. Thus, the child is produced from both of them by the permission of Allah. Due to this Allah says, Proceeding from between the backbone and the ribs. meaning, the backbone (or loins) of the man and the ribs of the woman, which is referring to her chest.

Shabib bin Bishr reported from Ikrimah who narrated from Ibn Abbas that he said, (Proceeding from between the backbone and the ribs). The backbone of the man and the ribs of the woman. It (the fluid) is yellow and fine in texture. The child will not be born except from both of them (i.e., their sexual fluids)."

**TAFSIR JALALAYN**

So let man consider, by way of reflection, from what he was created, from what thing: the response is: He was created from a gushing fluid, gushing forth from the man and the woman into the womb, issuing from between the loins, of the man, and the breast-bones, of the woman.

□□□□□□□ □□□□ □□□□:

फिर अल्लाह कहते हैं, "वह एक पानी से बनाया गया है जो फुटकर निकलता है।" अर्थात्, यह पुरुष और महिला से निकलने वाला प्रजनन द्रव है। इस प्रकार, बच्चा अल्लाह की अनुमति से दोनों से उत्पन्न होता है।

इस कारण अल्लाह कहते हैं: "रीढ़ की हड्डी और पसलियों के बीच से (निकलाया हुआ)"। अर्थात् पुरुष की रीढ़ (कमर) और महिला की पसलियाँ, जो उसके छाती के हिस्से को संदर्भित करती हैं।

शबिब बिन बिश्र ने इक्रमाह से, जिन्होंने इब्न अब्बास से सुनाया, रिपोर्ट किया: उन्होंने कहा: "रीढ़ की हड्डी और पसलियों के बीच से" का अर्थ है: पुरुष की रीढ़ और महिला की पसलियाँ। यह द्रव पीला और महीन होता है। बच्चा केवल दोनों से (अर्थात उनके प्रजनन द्रव से) उत्पन्न होता है।

□□□□□□□ □□□□□□:

तो मानव पर विचार करें कि उसे किस चीज़ से बनाया गया: वह किस वस्तु से उत्पन्न हुआ? उत्तर यह है कि वह एक फुटता हुआ द्रव (पानी) से बनाया गया, जो पुरुष और महिला दोनों से गर्भ में बहता है, पुरुष की कमर से और महिला की छाती की हड्डियों (पसलियों) से।

## OTHER REFERENCES IN ISLAMIC TEXT ON RELATED TOPIC

**Sahih al-Bukhari 3329:** When `Abdullah bin Salam (R.A.) heard the arrival of the Prophet (ﷺ) at Medina, he came to him and said, "I am going to ask you about three things which nobody knows except a prophet: What is the first portent of the Hour? What will be the first meal taken by the people of Paradise? Why does a child resemble its father, and why does it resemble its maternal uncle"

Allah's Messenger (ﷺ) said, "Gabriel has just now told me of their answers." `Abdullah said, "He (i.e. Gabriel), from amongst all the angels, is the enemy of the Jews." Allah's Messenger (ﷺ) said, "The first portent of the Hour will be a fire that will bring together the people from the east to the west; the first meal of the people of Paradise will be Extra-lobe (caudate lobe) of fish-liver. As for the resemblance of the child to its parents: If a man has sexual intercourse with his wife and gets discharge first, the child will resemble the father, and if the woman gets discharge first, the child will resemble her." On that `Abdullah bin Salam said, "I testify that you are the Messenger of Allah."

## इस्लामी धर्मग्रंथों में संबंधित विषय पर अन्य संदर्भ:

**सहीह अल-बुख़ारी 3329:** जब 'अब्दुल्लाह बिन सलाम ने मदीना में पैग़म्बर (ﷺ) के आगमन की खबर सुनी, तो वह उनके पास आया और कहा: "मैं आपसे तीन बातों के बारे में पूछने जा रहा हूँ, जिनके बारे में केवल कोई पैग़म्बर ही जान सकता है: क़यामत का पहला संकेत क्या होगा? जन्नत के लोगों का पहला भोजन क्या होगा? बच्चा अपने पिता से क्यों मिलता-जुलता है, और अपने मां से क्यों?"

अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने कहा: "जिब्राइल ने अभी-अभी मुझे इनके उत्तर बता दिए हैं।" "यहूदियों का दुश्मन है।" अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने कहा: क़यामत का पहला संकेत एक आग होगी जो लोगों को पूरब से पश्चिम तक इकट्ठा कर देगी। जन्नत वालों का पहला भोजन मछली के जिगर का कैडेट लोब (पीछे का एक छोटा हिस्सा) होगा। जहाँ तक बच्चे का माता-पिता से मिलना-जुलना है: यदि पुरुष अपनी पत्नी के साथ संभोग करता है और उसका वीर्य पहले निकलता है, तो बच्चा पिता से मिलता-जुलता होगा; और यदि महिला का स्राव पहले आता है, तो बच्चा उस से मिलता-जुलता होगा। इसके बाद `अब्दुल्लाह बिन सलाम ने कहा: "मैं गवाही देता हूँ कि आप अल्लाह के रसूल हैं।"

**Sunan Abi Dawud 4713:** Aishah (R.A.), mother of the believers, said: The Prophet (ﷺ) was invited to the funeral of a boy who belonged to the ANSAR and I said; Messenger of Allah (ﷺ)! This one is blessed, for he has done no evil, nor has he known it. He replied: It may be otherwise, ‘A’ishah, for Allah created Paradise and created those who will go to it, and He created it for them when they were still in their father’s loins; and he created hell and created those who will go to it, and created it for them when they were still in their father’s loins. (Sahih)

**सुनन अबी दाउद 4713:** आइशा (रज़ि.), मुमिनों की माँ ने फ़रमाया: "पैग़म्बर (ﷺ) को अंसार के एक लड़के के अंतिम संस्कार में बुलाया गया। मैंने कहा: 'अल्लाह के रसूल! यह बच्चा तो खुश नसीब है, उसने कोई बुराई नहीं की, न ही उसे इसका ज्ञान था।'" रसूल (ﷺ) ने उत्तर दिया: "ऐ आइशा! ऐसा भी हो सकता है कि मामला वैसा न हो। अल्लाह ने जन्नत बनाई और उन लोगों को बनाया जो उसमें जाएंगे, और उसने इसे उनके लिए बनाया जब वे अभी अपने पिता की कमर में थे। और उसी तरह उसने जहन्नम बनाई और उन लोगों को बनाया जो उसमें जाएंगे, और उसे उनके लिए बनाया जब वे अभी अपने पिता की कमर में थे।" (सहीह)

# NUTFAH – MINUTE QUANTITY OF LIQUID

**BOOK REFERENCE (SCIENTIFIC FACT / MIRACLE)**

The Qur'an and Modern Science: Compatible or Incompatible? Page 50-51

**QUOTED AAYAA AND EXPLANATION OFFERED**

*"Verily We created man from a drop of mingled sperm."***[Al-Qur'an 76:2]**

The Arabic word 'nutfatinamshaajin' means mingled liquids. According to some commentators of the Qur'an, mingled liquids refers to the male or female agents or liquids. After mixture of male and female gamete, the zygote still remains nutfah. Mingled liquids can also refer to spermatic fluid that is formed of various secretions that come from various glands.

**ENGLISH TRANSLATION WILLIAM PICKTHALL**

**Q76:2***"Lo! We create man from a drop of thickened fluid to test him; so We make him hearing, knowing"*

**ENGLISH TRANSLATION SAHIH INTERNATIONAL**

**Q76:2***"Indeed, We created man from a sperm-drop mixture that We may try him; and We made him hearing and seeing"*

# नुत्फ़ा – द्रव की सूक्ष्म मात्रा

**<u>पुस्तक संदर्भ (वैज्ञानिक तथ्य / चमत्कार)</u>**

क़ुरआन और आधुनिक विज्ञान अनुकूल या असंगत? पृष्ठ 50-51

**<u>उद्धृत आयत और दी गई व्याख्या:</u>**

**"निश्चय ही हमने मनुष्य को एक मिली-जुली शुक्राणु द्रव से बनाया।" [अल-क़ुरआन 76:2]**

अरबी शब्द 'नुत्फतिन अम्शा जिन' का अर्थ है मिली-जुली द्रव।

क़ुरआन के कुछ व्याख्याकारों के अनुसार, मिली-जुली द्रव पुरुष या स्त्री के द्रव को संदर्भित करता है।

पुरुष और महिला के गैमीट (बीजाणु और अंडाणु) के मिलने के बाद भी जाइगोट को नुत्फ़ा ही कहा जाता है। इसके अलावा, मिली-जुली द्रव उस शुक्राणु द्रव को भी संदर्भित कर सकता है, जो विभिन्न ग्रंथियों से आने वाले विभिन्न स्रावों से निर्मित होता है।

**<u>हिंदी अनुवाद फ़ारूक़ ख़ान और नदवी:</u>**

Q76:2 "हमने मनुष्य को एक मिश्रित वीर्य से पैदा किया, उसे उलटते-पलटते रहे, फिर हमने उसे सुनने और देखने वाला बना दिया।"

**<u>उर्दू अनुवाद फ़ारूक़ ख़ान और नदवी:</u>**

Q76:2 "हमने इन्सान को मख़लूत नुत्फे से पैदा किया कि उसे आज़माएँ तो हमने उसे सुनता देखता बनाया।"

**TAFSIR IBN KATHIR**

Verily, We have created man from Nutfah Amshaj, meaning, mixed. The words Mashaj and Mashij mean something that is mixed together. Ibn `Abbas said concerning Allah's statement, (from Nutfah Amshaj,)

"This means the fluid of the man and the fluid of the woman when they meet and mix." Then man changes after this from stage to stage, condition to condition and color to color. Ikrimah, Mujahid, Al-Hasan and Ar-Rabi` bin Anas all made statements similar to this. They said, "Amshaj is the mixing of the man's fluid with the woman's fluid."

**TAFSIR JALALAYN**

Verily We created man, the species, from a drop of mixed fluid, [from] a mixture, that is from the [seminal] fluid of the man and the [ovarian] fluid of the woman that have mixed and blended, so that We may test him, trying him with the moral obligations [of religion] (nabtalīhi is either a new sentence ['We will test him'], or an implied circumstantial qualifier, meaning 'intending to test him when he is ready'). So We made him, for that [very] reason, hearing, seeing.

**तफ़्सीर इब्न कसीर**

"निश्चय ही हमने मनुष्य को नुत्फ़ा अम्शाज से बनाया है, अर्थात मिली-जुली बूँद से।" अरबी शब्द 'अम्शाज' और 'मशज' का अर्थ है कोई वस्तु जो आपस में मिलाई गई हो। इब्न अब्बास ने अल्लाह के कथन के संबंध में कहा:

"इसका अर्थ है पुरुष का द्रव और महिला का द्रव, जब वे मिलते और मिश्रित होते हैं।" इसके बाद मनुष्य एक अवस्था से दूसरी अवस्था में, एक रूप से दूसरे रूप में और एक रंग से दूसरे रंग में परिवर्तित होता है।

इक्रमाह, मुजाहिद, अल-हसन और अर-रबी़ बिन अनास ने भी इसी प्रकार के विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा: "अम्शाज का अर्थ है पुरुष के द्रव का महिला के द्रव के साथ मिल जाना।"

**तफ़्सीर जलालैन**

"निश्चय ही हमने मनुष्य, अर्थात न व जाति को, एक मिली-जुली बूँद (नुत्फ़ा) से बनाया, एक मिश्रण से, अर्थात् पुरुष के द्रव और महिला के [अंडाशय] द्रव से जो आपस में मिलकर मिश्रित हो गया। ताकि हम उसे आज़माएँ, अर्थात् उसे धार्मिक और नैतिक कर्तव्यों के माध्यम से परखें (नब्तली ही – या तो यह एक नया वाक्य है: 'हम उसे आज़माएँगे', या यह एक निहित परिस्थितिजन्य अभिप्राय है: 'जब वह तैयार होगा, तब उसे आज़माने का इरादा')। इसलिए हमने उसे इसी उद्देश्य के लिए बनाया, सुनने और देखने की क्षमता के साथ।"

# SEX DETERMINATION

**BOOK REFERENCE (SCIENTIFIC FACT / MIRACLE)**

The Qur'an and Modern Science: Compatible or Incompatible? Page 52-53

**QUOTED AAYAA AND EXPLANATION OFFERED**

The sex of a foetus is determined by the nature of the sperm and not of the ovum.

*"That He did create in pairs – male and female, from a seed when lodged (in its place)."***[Al-Qur'an 53:45-46]**

*"Was he not a drop of sperm emitted (in lowly form)? Was he not a drop of sperm emitted (in lowly form)? Then did he become a clinging clot; then did (Allah) make and fashion (him) in due proportion. Then did he become a clinging clot; then did (Allah) make and fashion (him) in due proportion. And of him He made two sexes, male and female. And of him He made two sexes, male and female"***[Al-Qur'an 75:37-39]**

Nutfah specifically refers to sperm because it is ejaculated, which comes from the man is responsible for the sex of the foetus.

**ENGLISH TRANSLATION WILLIAM PICKTHALL**

**Q53:45-46***"And that He createth the two spouses, the male and the female, From a drop (of seed) when it is poured forth"*

# लिंग निर्धारण

**<u>पुस्तक संदर्भ (वैज्ञानिक तथ्य / चमत्कार)</u>**

क़ुरआन और आधुनिक विज्ञान अनुकूल या असंगत? पृष्ठ 52-53

**<u>उद्धृत आयत और दी गई व्याख्या:</u>**

भ्रूण का लिंग शुक्राणु की प्रकृति से निर्धारित होता है, न कि अंडाणु से।

*"और उसी ने जोड़े बनाए, नर और मादा, एक बूँद से, जब वह (गर्भाशय में) डाली जाती है।"* **[अल-क़ुरआन 53:45–46]**

*"क्या वह एक तुच्छ बूँद नहीं था जो पकाई गई थी? फिर वह एक चिपकने वाला थक्का बना; फिर (अल्लाह ने) उसे बनाया और संतुलित रूप दिया। फिर उसी से उसने दो लिंग बनाए, नर और मादा।"*

**[अल-क़ुरआन 75:37–39]**

'नुत्फ़ा' शब्द विशेष रूप से शुक्राणु को संदर्भित करता है, क्योंकि वही स्खलित होता है और पुरुष से निकलने वाला यही द्रव भ्रूण के लिंग निर्धारण के लिए उत्तरदायी माना गया है।

**<u>हिंदी अनुवाद फ़ारूक़ ख़ान और नदवी</u>**

**Q53:45-46** *"और यह कि वही है जिसने नर और मादा के जोड़े पैदा किए, एक बूँद से, जब वह टपकाई जाती है।"*

**Q75:37-39***"Was he not a drop of fluid which gushed forth? Then he became a clot; then (Allah) shaped and fashionedAnd made of him a pair, the male and female"*

**ENGLISH TRANSLATION SAHIH INTERNATIONAL**

**Q53:45-46***"And that He creates the two mates - the male and female - From a sperm-drop when it is emitted"*

**Q75:37-39***"Had he not been a sperm from semen emitted? Then he was a clinging clot, and [Allah] created [his form] and proportioned [him] And made of him two mates, the male and the female"*

**TAFSIR IBN KATHIR**

**Q53:45-46** And that He creates the pairs, male and female. From Nutfah when it is emitted. as He said: Does man think that he will be left neglected? Was he not a Nutfah? Then he became an `Alaqah (something that clings); then (Allah) shaped and fashioned (him) in due proportion. And made of him two sexes, male and female. Is not He (Allah) able to give life to the dead?

**Q75:37-39** *"क्या वह केवल टपकाए हुए वीर्य की एक बूँद न था? फिर वह रक्त की एक फुट की हुआ, फिर अल्लाह ने उसे रूप दिया और उसके अंगपुरुष और - ठाक किए और उसकी दो जातियाँ बनाई-प्रत्यंग ठीक-स्त्री"*

## उर्दू अनुवाद फ़ारूक़ ख़ान और नदवी

**Q53:45-46** *"और यह कि वही नर और मादा दो किस्म नुत्फ़े (के हैवान) डाला जाता है पैदाकरता है (रह्म में) से जब"*

**Q75:37-39**

*"क्या वह मनी का एक क़तरा न था जो रह्म में डाली जाती है (इब्तेदन), फिर लोथड़ा हुआ, फिर खुदाने उसे बनाया, फिर उसे दुरूस्त किया फिर उसकी दो किस्में बनाईं औरत (एक) मर्द और (एक)"*

## तफ़्सीर इब्न कसीर

**Q53:45–46** और निश्चय ही वही नर और नारी :जोड़े बनाता है (अल्लाह), नुत्फ़ा से, जब वह उत्सर्जित किया जाता है। जैसा कि अल्लाह ने कहा है : क्या मनुष्य यह समझता है कि उसे यूँ ही छोड़ दिया जाएगा? क्या वह नुत्फ़ा न था? फिर वह अलक़ा जो चिपकने वाल)ी वस्तु हैबना (; फिर अल्लाह ) उसे उचित रूप दिया और संतुलित बनाया। और उसी से दो लिंग बनाए (ने — नर और नारी। तो क्या वह मृतकों को जीवन देने में सक्षम (अल्लाह) नहीं है?

**Q75:37-39** Was he not a Nutfah of semen emitted? meaning, was not man a weak drop of sperm from a despised fluid known as semen, that is emitted from the loins into the wombs Then he became an `Alaqah; then shaped and fashioned in due proportion.meaning, he became a clot, then a lump of flesh, then he was formed and the soul was blown into him. Then he became a perfect creation with healthy limbs, as either a male or a female by the permission and decree of Allah. Thus, Allah says, And made of him two sexes, male and female. Then Allah says, Is it not so then, that He would be able to give life to the dead? meaning, is not He Who made this perfect creation from this weak drop of sperm able to repeat that as He did originally?

**TAFSIR JALALAYN**

**Q53:45-46** and that He [Himself] creates the two spouses, the two kinds, the male and the female, from a drop [of semen] once it is emitted, [once] it is poured forth into the womb

**Q75:37–39** क्या वह नुत्फ़ा न था, जो वीर्य के रूप में उत्सर्जित किया गया? अर्थात, क्या मनुष्य एक कमजोर और तुच्छ तरल बूँद न था, जिसे वीर्य कहा जाता है, जो पुरुष की कमर से निकल कर स्त्री के गर्भ में पहुँचता है? फिर वह अलक़ा बना; फिर उसे उचित रूप दिया गया और संतुलित बनाया। अर्थात, पहले वह एक थक्का जैसा बना, फिर मांस का टुकड़ा हुआ, फिर उसका गठन किया गया और उसमें आत्मा फूँकी गई। इसके बाद वह एक पूर्ण रचना बना, स्वस्थ अंगों के साथ — अल्लाह की अनुमति और फ़ैसले से, या तो पुरुष या स्त्री। इसी कारण अल्लाह कहता हैऔर : उसी से उसने दो लिंग बनाए— नर और नारी। फिर अल्लाह फ़रमाता है : तो क्या वह, जिसने इस कमजोर नुत्फ़ा से यह पूर्ण रचना बनाई, मृतकों को पुनः जीवन देने में सक्षम नहीं है?

## तफ़्सीर जलालैन

**Q53:45–46** और निश्चय ही वही दो जोड़े पैदा करता है (अल्लाह)— दो प्रकार, नर और नारी, एक बूँद से (वीर्य), जब वह उत्सर्जित की जाती है, अर्थात जब वह गर्भ में उंडेली जाती है।

**Q75:37-39** Was he not that is, [indeed] he was — a drop of emitted semen? (read yumnā or tumnā) deposited into the womb. Then it, the drop of semen, became a clot; then He, God, created, from it man, and proportioned [him], making the parts of his body upright, and made of it, of the drop of semen that became a blood-clot, then an embryo, a [small] mass of flesh, the two sexes, the two kinds, the male and the female, at times coming together and at times each being on their own.

## PRESENT SCIENTIFIC KNOWLEDGE

Modern science establishes that sex of the foetus is determined at the time of fertilization.

**Q75:37–39** क्या वह (मनुष्य) एक उत्सर्जित वीर्य की बूँद न था? (पाठ: युम्नायातुम्ना), जो गर्भ में रखी जाती है? फिर वह बूँद अलक़ा (जमाव / चिपकने वाली वस्तु) बन गई; फिर अल्लाह ने उससे मनुष्य को पैदा किया और उसे संतुलित रूप दिया, उसके शरीर के अंगों को सीधा और अनुपात में बनाया। और उसी से अर्थात उस वीर्य की बूँद से, जो पहले रक्त-थक्के में बदली, फिर भ्रूण बनी, फिर मांस के छोटे टुकड़े (मुद्ग़ा) में परिवर्तित हुई — दो लिंग बनाए, दो प्रकार — नर और नारी, कभी एक साथ (जुड़वाँ रूप में) और कभी अलग-अलग।

इइइइइइइ इइइइइइइइइ इइइ

आधुनिक विज्ञान यह स्थापित करता है कि भ्रूण का लिंग निर्धारण निषेचन के समय हो जाता है।

194

# FOETUS PROTECTED BY THREE VEILS OF DARKNESS AND EMBRYOLOGICAL STAGES

**BOOK REFERENCE (SCIENTIFIC FACT / MIRACLE)**

The Qur'an and Modern Science: Compatible or Incompatible? Page 54-58

**QUOTED AAYAA AND EXPLANATION OFFERED**

*"He makes you, in the wombs of your mothers, in stages, one after another, in three veils of darkness."* **[Al-Qur'an 39:6]**

These three veils of darkness in the Qur'an refer to: (i) anterior abdominal wall of the mother (ii) the uterine wall (iii) the amnio-chorionic membrane.

EMBRYOLOGICAL STAGES

*"Man We did create from a quintessence (of clay); then We placed him as (a drop of) sperm in a place of rest, firmly fixed; then We made the sperm into a clot of congealed blood; then of that clot We made a (foetus) lump; then We made out of that lump bones and clothed the bones with flesh; then We developed out of it another creature. so blessed be Allah, the Best to create!"* **[Al-Qur' an 23:12-14]**

# तीन अंधकारों में संरक्षित भ्रूण और भ्रूण-विकास के चरण

**<u>पुस्तक संदर्भ (वैज्ञानिक तथ्य / चमत्कार)</u>**

क़ुरआन और आधुनिक विज्ञान अनुकूल या असंगत? पृष्ठ 54-58

**<u>उद्धृत आयत और दी गई व्याख्या</u>**

"वह तुम्हें तुम्हारी माताओं के गर्भों में एक के बाद एक चरणों में रचता है — तीन अंधेरों के आवरणों में।" [अल-क़ुरआन 39:6]

क़ुरआन में वर्णित तीन अंधेरों के आवरण से अभिप्राय सामान्यतः यह समझा गया है:

(i) माँ की अग्र उदर-दीवार,

(ii) गर्भाशय की दीवार

(iii) एम्नियो-कोरियोनिक झिल्ली

भ्रूण-विकास के चरण

*"और निश्चय ही हमने मनुष्य को मिट्टी के सार से पैदा किया। फिर हमने उसे एक सुरक्षित ठिकाने में नुत्फ़ा (वीर्य की एक बूँद) के रूप में रखा। फिर उस नुत्फ़ा को हमने अलक़ा बनाया, फिर अलक़ा को मुद्‌ग़ा बनाया, फिर मुद्‌ग़ा से हड्डियाँ (इज़ाम) बनाईं, फिर हड्डियों पर मांस (लह्म) चढ़ाया, फिर उससे एक दूसरी ही सृष्टि विकसित की। तो बड़ा ही बरकतवाला है अल्लाह — सबसे उत्तम रचने वाला।"* **[अल-क़ुरआन 23:12–14]**

Nuftah, Small quantity of liquid (well established or lodged); Alaqah, meaning something which clings (leech shape); Mudghah which means 'something that is chewed; Izam means Bones; Lahm means muscles.

**ENGLISH TRANSLATION WILLIAM PICKTHALL**

**Q39:6** *"He created you from one being, then from that (being) He made its mate; and He hath provided for you of cattle eight kinds. He created you in the wombs of your mothers, creation after creation, in a threefold gloom. Such is Allah, your Lord. His is the Sovereignty. There is no Allah save Him. How then are ye turned away"*

**Q23:12-14***"Verily We created man from a product of wet earth; Then placed him as a drop (of seed) in a safe lodging; Then fashioned We the drop a clot, then fashioned We the clot a little lump, then fashioned We the little lump bones, then clothed the bones with flesh, and then produced it as another creation. So blessed be Allah, the Best of creators"*

**ENGLISH TRANSLATION SAHIH INTERNATIONAL**

**Q39:6***"He created you from one soul. Then He made from it its mate, and He produced for you from the grazing livestock eight mates. He creates you in the wombs of your mothers, creation after creation, within three darknesses. That is Allah, your Lord; to Him belongs dominion. There is no deity except Him, so how are you averted"*

नुत्फ़ा, बहुत छोटी बूँद, तरल की अल्प मात्रा; अलक़ा, चिपकी हुई चीज़ / लटकने वाली वस्तु; मुद्‌घ़ा, चबाया हुआ टुकड़ा; इज़ाम, हड्डियाँ; लह्‌म, मांस

**<u>हिंदी अनुवाद फ़ारूक़ ख़ान और नदवी</u>**

**Q39:6** *"उसने तुम्हें अकेली जान पैदा किया; फिर उसी से उसका जोड़ा बनाया और तुम्हारे लिए चौपायों में से आठ नर-मादा उतारे। वह तुम्हारी माँओं के पेटों में तीन अँधेरों के भीतर तुम्हें एक सृजन रूप के पश्चात अन्य एक सृजन रूप देता चला जाता है। वही अल्लाह तुम्हारा रब है। बादशाही उसी की है, उसके अतिरिक्त कोई पूज्य-प्रभु नहीं। फिर तुम कहाँ फिरे जाते हो"*

**Q23:12-14** *"हमने मनुष्य को मिट्टी के सत से बनाया, फिर हमने उसे एक सुरक्षित ठहरने की जगह टपकी हुई बूँद बनाकर रखा, फिर हमने उस बूँद को लोथड़े का रूप दिया; फिर हमने उस लोथड़े को बोटी का रूप दिया; फिर हमने उन हड्डियों पर मांस चढ़ाया; फिर हमने उसे एक दूसरा ही सर्जन रूप देकर खड़ा किया। अतः बहुत ही बरकतवाला है अल्लाह, सबसे उत्तम स्रष्टा"*

**<u>उर्दू अनुवाद फ़ारूक़ ख़ान और नदवी</u>**

**Q39:6** *"उसी ने तुम सब को एक ही शख़्स से पैदा किया फिर उस (की बाक़ी मिट्टी) से उसकी बीबी (हौव्वा) को पैदा किया और उसी ने तुम्हारे लिए आठ क़िस्म के चार पाए पैदा किए वही तुमको तुम्हारी माँओं के पेट में एक क़िस्म की पैदाइश के बाद दूसरी क़िस्म (नुत्फ़े जमाहुआ ख़ून लोथड़ा) की पैदाइश से तेहरे तेहरे अंधेरों (पेट) रहम और झिल्ली में पैदा करता है वही अल्लाह तुम्हारा परवरदिगार है उसी की बादशाही है उसके सिवा माबूद नहीं तो तुम लोग कहाँ फिरे जाते हो"*

**Q23:12-14***"And certainly did We create man from an extract of clay. Then We placed him as a sperm-drop in a firm lodging. Then We made the sperm-drop into a clinging clot, and We made the clot into a lump [of flesh], and We made [from] the lump, bones, and We covered the bones with flesh; then We developed him into another creation. So blessed is Allah, the best of creators"*

**TAFSIR IBN KATHIR**

**Q39:6** He created you (all) from a single person; means, He created you, with all your varied races, types, languages and colors, from a single soul, who was Adam, peace be upon him. then made from him his wife. who was Hawwa', peace be upon her.

This is like the Ayah: O mankind! Have Taqwa of your Lord, Who created you from a single person, and from him He created his wife, and from them both He created many men and women. (4:1) And He has sent down for you of cattle eight pairs.

means, He has created for you from among the cattle, eight pairs. These are the ones that are mentioned in Surah Al-An`am, eight kinds -- a pair of sheep, a pair of goats, a pair of camels and a pair of oxen.

**Q23:12-14** *"और हमने आदमी को गीली मिट्टी के जौहर से पैदा किया फिर हमने उसको एक महफ़ूज़ जगह (औरत के रहम में) नुत्फ़ा बनाकर रखा फिर हमने नुतफ़े को जमाहुआ ख़ून बनाया फिर हमने मुनजमिद ख़ून को गोश्त का लोथड़ा बनाया हमने ही ने लोथड़े की हड्डियाँ बनायीं फिर हमने ही ने हड्डियों पर गोश्त चढ़ाया फिर हमने ही ने उसको (रुह डालकर) एक दूसरी सूरत में पैदा किया तो (सुबहान अल्लाह) ख़ुदा बाबरकत है जो सब बनाने वालों से बेहतर है"*

**रहम** = गर्भाशय

## तफ़्सीर इब्न कसीर

**Q39:6** उसने तुम्हें एक व्यक्ति से पैदा किया; अर्थात उसने तुम्हें, तुम्हारी सभी जातियों, प्रकारों, भाषाओं और रंगों के साथ, एक ही आत्मा से पैदा किया, जो आदम थे, उन पर सलामती रहे। फिर उसी से उसकी पत्नी बनाई, जो हव्वा थीं, उन पर सलामती रहे।

यह आयत इस तरह है: हे मानव! अपने परवरदिगार का तक़वा करो, जिसने तुम्हें एक व्यक्ति से पैदा किया, और उसी से उसकी पत्नी बनाई, और दोनों से उसने अनेक पुरुष और महिलाएँ पैदा कीं। (4:1)

और उसने तुम्हारे लिए मवेशियों में आठ जोड़े उतारे। अर्थात उसने तुम्हारे लिए मवेशियों में आठ जोड़े बनाए। ये वही हैं जो सूरह अल-अन'आम में उल्लिखित हैं, आठ प्रकार — एक जोड़ा भेड़, एक जोड़ा बकरियाँ, एक जोड़ा ऊँट और एक जोड़ा बैल।

He creates you in the wombs of your mothers, means, He forms you in your mothers' wombs.creation after creation. Everyone of you is originally a Nutfah, then he becomes an `Alaqah, then he becomes a Mudghah, then he is created and becomes flesh and bones and nerves and veins, and the Ruh (soul) is breathed into him, and he becomes another type of creation.

So Blessed is Allah, the Best of creators. (23:14) in three veils of darkness, means, in the darkness of the womb, the darkness of the placenta which blankets and protects the child, and the darkness of the belly. This was the view of Ibn Abbas (R.A.), Mujahid, Ikrimah, Abu Malik, Ad-Dahhak, Qatadah, As-Suddi and Ibn Zayd.

**Q23:12-14** Allah tells: And indeed We created man out of an extract of Tin (clay). Allah tells us how He initially created man from an extract of Tin. This was Adam, peace be upon him, whom Allah created from sounding clay of altered black smooth mud. Ibn Jarir said, “Adam was called Tin because he was created from it." Qatadah said, “Adam was created from Tin." This is the more apparent meaning and is closer to the context, for Adam, upon him be peace, was created from a sticky Tin, which is a sounding clay of altered black smooth mud, and that is created from dust, as Allah says: And among His signs is this that He created you (Adam) from dust, and then -- behold you are human beings scattered! (30:20)

वह तुम्हें तुम्हारी माताओं के गर्भों में पैदा करता है, अर्थात वह तुम्हें माताओं के गर्भों में आकार देता है। एक के बाद एक सृष्टि। तुम में से हर कोई मूल रूप से एक नुत्फ़ा होता है, फिर वह अलक़ा बन जाता है, फिर मुद्घ़ा बन जाता है, फिर वह बनाया जाता है और मांस, हड्डियाँ, नसें और रक्तवाहिकाएँ बनती हैं, और उसमें रूह फूँकी जाती है, और वह एक दूसरी सृष्टि बन जाता है।
तो अल्लाह बेजोड़ है, सबसे उत्तम रचने वाला। (23:14) तीन अंधकारों में, अर्थात गर्भ के अंधकार में, बच्चे को ढकने वाली नाल / प्लेसेंटा के अंधकार में, और पेट के अंधकार में। यह इब्न अब्बास, मुजाहिद, इक्रिमा, अबू मलिक, अद-दहक, कतादा, अस-सद्दी और इब्न ज़ैद की राय थी।

**Q23:12-14** और निश्चय ही हमने मनुष्य को टिन (मिट्टी) के अर्क से बनाया। अल्लाह हमें बताता है कि उसने मनुष्य को पहले टिन के अर्क से कैसे बनाया। यह आदम थे, उन पर सलामती रहे, जिन्हें अल्लाह ने काली चिकनी मिट्टी से बनाया। इब्न जरीर ने कहा, "आदम को टिन कहा गया क्योंकि वह उससे बनाए गए।" कतादा ने कहा, "आदम टिन से बनाए गए।" यह अधिक स्पष्ट अर्थ है और संदर्भ के निकट है, क्योंकि आदम, उन पर सलामती रहे, चिपचिपे टिन से बनाए गए थे, जो काली चिकनी मिट्टी का अर्क है, और यह धूल से बनाया गया है, जैसा कि अल्लाह कहते हैं:
"और उसके संकेतों में से है कि उसने तुम्हें धूल से बनाया, और फिर देखो तुम मानव बिखरे हुए हो!" (30:20)

Imam Ahmad recorded from Abu Musa that the Prophet (ﷺ) said: Allah created Adam from a handful which He picked up from throughout the earth, so the sons of Adam came forth accordingly, red and white and black and in between, evil and good and in between.

Abu Dawud and At-Tirmidhi recorded something similar. At-Tirmidhi said, "It is Sahih Hasan."

Thereafter We made him a Nutfah. Here the pronoun refers back to humankind, as in another Ayah (…) and He began the creation of man from clay. Then He made his offspring from semen of despised water. (32:7-8) meaning, weak, as He says: Did We not create you from a despised water, Then We placed it in a place of safety. (77:20-21) meaning the womb, which is prepared and readily equipped for that,

... in a safe lodging. For a known period. So We did measure; and We are the Best to measure. (77:22-23) meaning, for a known period of time, until it is established and moves from one stage to the next.

Allah says here, Then We made the Nutfah into a clot, meaning, `then We made the Nutfah, which is the water gushing forth that comes from the loins of man, i.e., his back, and the ribs of woman, i.e., the bones of her chest, between the clavicle and the breast. Then it becomes a red clot, like an elongated clot.'

इमाम अहमद ने अबू मूसा से रिकॉर्ड किया कि पैग़म्बर (ﷺ) ने कहा: अल्लाह ने आदम को उस एक मुट्ठी से बनाया जो उसने पृथ्वी भर से उठाई थी, और आदम के पुत्र उसी के अनुसार उत्पन्न हुए — लाल, सफ़ेद, काले और बीच में, अच्छे और बुरे और बीच में।

अबू दाऊद और अत-तिरमिज़ी ने समान कथन रिकॉर्ड किया। अत-तिरमिज़ी ने कहा, "यह सहीह हसन है।"

फिर हमने उसे नुत्फ़ा बनाया। यहाँ सर्वनाम मानवता को संदर्भित करता है, जैसा कि अन्य आयत में है। (...) और उसने मनुष्य की सृष्टि मिट्टी से आरंभ की। फिर उसने उसके वंशज को तुच्छ पानी के वीर्य से बनाया। (32:7-8) अर्थात कमज़ोर, जैसा कि वह कहते हैं: "क्या हमने तुम्हें तुच्छ पानी से नहीं बनाया?"

फिर हमने उसे सुरक्षित स्थान में रखा। (77:20-21) अर्थात गर्भ में, जो इसके लिए तैयार और सुरक्षित आवास है। निश्चित अवधि के लिए। और हमने मापा; और हम सबसे उत्तम मापने वाले हैं। (77:22-23) अर्थात एक ज्ञात अवधि के लिए, जब तक यह स्थापित न हो और एक चरण से दूसरे चरण में न चला जाए।

अल्लाह कहते हैं: फिर हमने नुत्फ़ा को अलक़ा बनाया, अर्थात वह नुत्फ़ा, जो पुरुष के कमर/पीठ से निकलने वाला पानी है और स्त्री की पसलियों/छाती की हड्डियों के बीच है। फिर यह लाल थक्का बन जाता है, जैसे लंबा थक्का।

Ikrimah said, "This is blood." then We made the clot into a little lump of flesh, which is like a piece of flesh with no shape or features. then We made out of that little lump of flesh bones, meaning, `We gave it shape, with a head, two arms and two legs, with its bones, nerves and veins. then We clothed the bones with flesh, meaning, `We gave it something to cover it and strengthen it.'

And then We brought it forth as another creation. means, then We breathed the soul into it, and it moved and became a new creature, one that could hear, see, understand and move. (and then We brought it forth as another creation).

Al-`Awfi reported that Ibn Abbas said, “We change it from one stage to another until it emerges as an infant, then it grows up through the stages of being a child, adolescent, youth, mature man, old man and senile man."

इक्रिमा ने कहा, "यह रक्त है।" फिर हमने थक्के को छोटे मांस के टुकड़े में बनाया, जो बिना आकार या विशेषताओं के मांस का एक टुकड़ा है।

फिर हमने उस छोटे मांस के टुकड़े से हड्डियाँ बनाई, अर्थात हमने इसे आकार दिया — सिर, दो हाथ और दो पैर सहित, इसकी हड्डियाँ, नसें और रक्त वाहिकाएँ।

फिर हमने हड्डियों पर मांस चढ़ाया, अर्थात हमने इसे ढकने और मजबूत बनाने के लिए मांस दिया।

और फिर हमने इसे एक दूसरी सृष्टि के रूप में प्रकट किया, अर्थात फिर हमने उसमें रूह फूँकी, और वह चलने-फिरने, सुनने, देखने और समझने में सक्षम जीव बन गया।

अल-अऊफ़ी ने रिपोर्ट किया कि इब्न अब्बास ने कहा, "हम इसे एक चरण से दूसरे चरण में बदलते हैं जब तक यह शिशु के रूप में जन्म न ले ले, फिर यह बढ़कर बच्चा, किशोर, युवक, वयस्क, वृद्ध और वृद्धावस्था में परिवर्तित होता है।"

**TAFSIR JALALAYN**

**Q39:6** He created you from a single soul, namely, Adam, then made from it its mate, Eve; and He sent down for you of the cattle, [of] camels, cows, small cattle, sheep and goats, eight kinds, of each kind a male and a female — as He makes clear in sūrat al-Anʻām [Q6:143f.].

He creates you in your mothers' wombs, creation after creation, that is to say, as a sperm-drop, then a blood clot, then a foetus, in a threefold darkness, that is, the darkness of the belly, that of the womb and that of the placenta.

That is God, your Lord. To Him belongs [all] sovereignty. There is no god except Him. Why then are you being turned away?, from worshipping Him to worshipping [things] other than Him?

## तफ़्सीर जलालैन

**Q39:6** उसने तुम्हें एक ही आत्मा से पैदा किया, अर्थात आदम से, फिर उसी से उसकी साथी, हव्वा बनाई; और उसने तुम्हारे लिए मवेशियों में से, ऊँट, गाय, छोटे मवेशी, भेड़ और बकरियों में से आठ प्रकार उतारे, प्रत्येक प्रकार का एक नर और एक मादा — जैसा कि सूरह अल-अन'आम [q6:143f] में स्पष्ट किया गया है।

वह तुम्हें तुम्हारी माताओं के गर्भों में पैदा करता है, एक के बाद एक सृष्टि के रूप में, अर्थात पहले वीर्य की बूंद, फिर थक्का (रक्त का जमाव), फिर भ्रूण, तीन प्रकार के अंधकार में, अर्थात पेट का अंधकार, गर्भाशय का अंधकार और नाल/प्लेसेंटा का अंधकार।

वही तुम्हारा परवरदिगार है। उसी का राज्य है। उसके सिवा कोई ईश्वर नहीं। फिर तुम क्यों मोड़ दिए जाते हो, उसे छोड़कर दूसरों की पूजा करने के लिए?

**Q23:12-14** And, by God, We certainly created man, Adam, from an extraction (min sulālatin, derives from [the verbal expression] salaltu'l-shay'amina'l-shay', 'I drew one thing out of another', meaning, 'I extracted it therefrom') his [Adam's] substance being, of clay (min tīnin is semantically connected to sulālatin, 'anextraction').Then We made him, namely, man, the progeny of Adam, a drop, a sperm-drop, in a secure lodging, which is the womb. Then We transformed the drop [of semen] into a clot, congealed blood. Then We transformed the clot into a [little] lump of flesh (mudgha), a piece of flesh, about the size of what one would be able to chew (māyumdagh). Then We transformed the lump of flesh into bones. Then We clothed the bones with flesh (a variant reading in both instances [instead of the plurals 'izāman and al-'izāma, 'the bones'] is [singular] 'azman [and 'al-'azma], 'the bone'; and in all three instances above khalaqnā, means 'We made it become' [as opposed to 'We created']). Then We produced him as [yet] another creature, by breathing into him [Our] Spirit. So blessed be God, the best of creators! that is, [the best of] determiners (the specificier noun for ahsana, 'the best', has been omitted# because it is obvious: khalqan, 'in terms of creation').

**Q23:12-14** अल्लाह की कसम, हमने निश्चय ही मनुष्य, आदम, को एक अर्क से बनाया (मिनसुालातिन, जिसकी व्युत्पत्ति [क्रियात्मक अभिव्यक्ति] सालालतु'ल-शाय' मिना'ल-शाय', 'मैंने एक चीज़ से दूसरी चीज़ निकाली', अर्थात 'हमने उससे अर्क निकाला')। उस का पदार्थ मिट्टी से था (मिन-टी-निन, अर्थ में सुालातिन से जुड़ा हुआ, 'अर्क')।

फिर हमने उसे, अर्थात आदम के वंशज को, एक बूंद, नुत्फ़ा, सुरक्षित आवास में रखा, जो गर्भ है। फिर हमने उस बूंद (वीर्य की बूंद) को थक्के में बदल दिया। फिर हमने थक्के को छोटे मांस के टुकड़े (मुद्ग़ा) में बदल दिया, मांस का एक टुकड़ा, लगभग उतना बड़ा जितना कोई चबा सके (मायूमुद्ग़)। फिर हमने उस मांस के टुकड़े को हड्डियों में बदल दिया।

फिर हमने हड्डियों पर मांस चढ़ाया (दोनों मामलों में एक वैकल्पिक रीडिंग, 'इज़ामान' और 'अल-'इज़ामा', 'हड्डियों' के बहुवचन के बजाय, एकवचन 'अज़्मान' और 'अल-'अज़्मा', 'हड्डी'; और ऊपर तीनों मामलों में खलक़्न का अर्थ है 'हमने उसे बना दिया', ['हमने इसे बना दिया' के बजाय])। फिर हमने उसे एक और सृष्टि के रूप में उत्पन्न किया, उसमें अपनी रूह फूँक कर। तो अल्लाह बेजोड़ है, सबसे उत्तम रचयिता! अर्थात, [सबसे उत्तम] निर्धारित करता है (अहसना के लिए विशेष संज्ञा, 'सबसे उत्तम', छोड़ गया# क्यों कि यह स्पष्ट है: खलक़्न, 'सृष्टि के संदर्भ में')।

## PRESENT SCIENTIFIC KNOWLEDGE

Humans have defined distinct stages, embryonic development in nature is a continuous process. Similarly, bones and muscles both originate from the mesoderm and develop in parallel.

In human anatomy, the anterior abdominal wall is commonly described as having about 7–9 layers (including skin, superficial fascia, muscle/aponeurotic layers, transversalis fascia, extraperitoneal tissue, and parietal peritoneum); the uterine wall has three layers, endometrium, myometrium, and perimetrium; and the placenta consists four layers in early pregnancy (syncytiotrophoblast, cytotrophoblast, connective tissue, and fetal capillary endothelium).

## वर्तमान वैज्ञानिक समझ

चरणों के नाम मानव द्वारा वर्गीकरण हैं; प्रकृति में भ्रूण विकास लगातार प्रवाह में चलता है। इसी प्रकार, हड्डियाँ और मांसपेशियाँ दोनों मेसोदर्म से उत्पन्न होती हैं और उनका विकास समानांतर रूप से होता है।

मानव शरीर रचना में: पेट की अग्र-दीवार में सामान्यतः लगभग सात से नौ परतें होती हैं (जिसमें त्वचा, उपास्थि झिल्ली, मांसपेशियाँ/एपोन्यूरोटिक परतें, ट्रांसवर्सलिस झिल्ली, पेट के बाहर काऊतक और पेरीटोनियम शामिल हैं)। गर्भाशय की दीवार में तीन परतें होती हैं — एंडोमेट्रियम, मयोमेट्रियम और पेरीमेट्रियम। नाल में गर्भावस्था के प्रारंभिक चरण में चार परतें होती हैं (सिंक्यियोट्रोफोब्लास्ट, साइटोट्रोफोब्लास्ट, संयोजी ऊतक और भ्रूणीय रक्तवाहिकाओं की अंतःकला)।

# EMBRYO PARTLY FORMED AND PARTLY UNFORMED

**BOOK REFERENCE (SCIENTIFIC FACT / MIRACLE)**

The Qur'an and Modern Science: Compatible or Incompatible? Page 59

**QUOTED AAYAA AND EXPLANATION OFFERED**

At the mudghah stage, if an incision is made in the embryo and the internal organ is dissected, it will be seen that most of them are formed while the remaining are not yet completely formed.

*"We created you out of dust, then out of sperm, then out of a leech-like clot, then out of a morsel of flesh, partly formed and partly unformed that We may manifest (Our Power) to you."* **[Al-Qur'an 22:5]**

Scientifically we know that at this early stage of development there are some cells which are differentiated and there are some cells that are undifferentiated – some organs are formed and yet others unformed.

# भ्रूण कुछ भाग बन चुका और कुछ पूरी तरह से नहीं बना

**<u>पुस्तक संदर्भ (वैज्ञानिक तथ्य / चमत्कार)</u>**

क़ुरआन और आधुनिक विज्ञान अनुकूल या असंगत? पृष्ठ 59

**<u>उद्धृत आयत और दी गई व्याख्या</u>**

मुद्ग़ा चरण में, यदि भ्रूण में चीरा लगाया जाए और आंतरिक अंगों की जांच की जाए, तो देखा जाएगा कि अधिकांश अंग बन चुके हैं जबकि बाकी अभी पूरी तरह से विकसित नहीं हुए हैं।

*"हमने तुम्हें मिट्टी से बनाया, फिर वीर्य से, फिर चिपकने वाले थक्के से, फिर मांस के एक टुकड़े से, आंशिक रूप से बने और आंशिक रूप से न बने, ताकि हम तुम्हारे लिए (अपनी शक्ति) प्रकट कर सकें।"*
**[अल-क़ुरआन 22:5]**

वैज्ञानिक रूप से हम जानते हैं कि विकास के इस प्रारंभिक चरण में कुछ कोशिकाएँ विशेषीकृत हो चुकी हैं और कुछ कोशिकाएँ अप्रविशिष्ट हैं — कुछ अंग बन चुके हैं और कुछ अभी बन रहे हैं।

**ENGLISH TRANSLATION WILLIAM PICKTHALL**

**Q22:5***"O mankind! if ye are in doubt concerning the Resurrection, then lo! We have created you from dust, then from a drop of seed, then from a clot, then from a little lump of flesh shapely and shapeless, that We may make (it) clear for you. And We cause what We will to remain in the wombs for an appointed time, and afterward We bring you forth as infants, then (give you growth) that ye attain your full strength. And among you there is he who dieth (young), and among you there is he who is brought back to the most abject time of life, so that, after knowledge, he knoweth naught. And thou (Muhammad) seest the earth barren, but when We send down water thereon, it doth thrill and swell and put forth every lovely kind (of growth)"*

**<u>हिंदी अनुवाद फ़ारूक़ ख़ान और नदवी</u>**

**Q22:5** *"ऐ लोगो! यदि तुम्हें दोबारा जी उठने के विषय में कोई सन्देह हो तो देखो, हमने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर वीर्य से, फिर लोथड़े से, फिर माँस की बोटी से जो बनावट में पूर्ण दशा में भी होती है और अपूर्ण दशा में भी, ताकि हम तुम पर स्पष्ट कर दें और हम जिसे चाहते हैं एक नियत समय तक गर्भाशयों में ठहराए रखते हैं। फिर तुम्हें एक बच्चे के रूप में निकाल लाते हैं। फिर (तुम्हारा पालन-पोषण होता है) ताकि तुम अपनी युवावस्था को प्राप्त हो और तुम में से कोई तो पहले मर जाता है और कोई बुढ़ापे की जीर्ण अवस्था की ओर फेर दिया जाता है जिसके परिणामस्वरूप, जानने के पश्चात वह कुछ भी नहीं जानता। और तुम भूमि को देखते हो कि सूखी पड़ी है। फिर जहाँ हमने उस पर पानी बरसाया कि वह फबक उठी और वह उभर आई और उसने हर प्रकार की शोभायमान चीज़ें उगाईं"*

**ENGLISH TRANSLATION SAHIH INTERNATIONAL**

**Q22:5***"O People, if you should be in doubt about the Resurrection, then [consider that] indeed, We created you from dust, then from a sperm-drop, then from a clinging clot, and then from a lump of flesh, formed and unformed - that We may show you. And We settle in the wombs whom We will for a specified term, then We bring you out as a child, and then [We develop you] that you may reach your [time of] maturity. And among you is he who is taken in [early] death, and among you is he who is returned to the most decrepit [old] age so that he knows, after [once having] knowledge, nothing. And you see the earth barren, but when We send down upon it rain, it quivers and swells and grows [something] of every beautiful kind"*

**TAFSIR IBN KATHIR**

Then verily, We have created you from dust, meaning, "you were originally created from dust," which is what Adam, peace be upon him, was created from. Then from a Nutfah, meaning, then He made his offspring from semen of despised water. (32:8)

## उर्दू अनुवाद फ़ारूक़ ख़ान और नदवी

**Q22:5**

*"लोगों अगर तुमको (मरने के बाद) दोबारा जी उठने में किसी तरह का शक है तो इसमें शक नहीं कि हमने तुम्हें शुरू-शुरू मिट्टी से उसके बाद नुत्फे से उसके बाद जमे हुए ख़ून से फिर उस लोथड़े से जो पूरा (सूडौल हो) या अधूरा हो पैदा किया ताकि तुम पर (अपनी क़ुदरत) ज़ाहिर करें (फिर तुम्हारा दोबारा ज़िन्दा) करना क्या मुश्किल है और हम औरतों के पेट में जिस (नुत्फे) को चाहते हैं एक मुद्दत मुअय्यन तक ठहरा रखते हैं फिर तुमको बच्चा बनाकर निकालते हैं फिर (तुम्हें पालते हैं) ताकि तुम अपनी जवानी को पहुँचो और तुम में से कुछ लोग तो ऐसे हैं जो (क़ब्ल बुढ़ापे के) मर जाते हैं और तुम में से कुछ लोग ऐसे हैं जो नाकारा ज़िन्दगी बुढ़ापे तक फेर लाए जाते हैं ताकि समझने के बाद सठिया के कुछ भी (ख़ाक) न समझ सके और तो ज़मीन को मुर्दा (बेकार उफ़तादा) देख रहा है फिर जब हम उस पर पानी बरसा देते हैं तो लहलहाने और उभरने लगती है और हर तरह की ख़ुशनुमा चीज़ें उगती हैं तो ये क़ुदरत के तमाशे इसलिए दिखाते हैं ताकि तुम जानो"*

## तफ़्सीर इब्न कसीर

फिर निश्चय ही, हमने तुम्हें मिट्टी से बनाया, अर्थात "तुम मूलतः मिट्टी से बनाए गए थे," जैसा कि आदम, उन पर सलाम तरहे, से बनाया गया था। फिर नुत़्फ़ा से, अर्थात फिर उसने अपने वंशज को तुच्छ पानी के वीर्य से बनाया। (32:8)

The Development of the Nutfah and Embryo in the Womb: Allah says: then from a clot then from a little lump of flesh. If the Nutfah establishes itself in the woman's womb, it stays like that for forty days, then more material is added to it and it changes into a red clot, by the leave of Allah, and it remains like that for forty days. Then it changes and becomes a lump of flesh, like a piece of meat with no form or shape. Then it starts to take on a form and shape, developing a head, arms, chest, stomach, thighs, legs, feet, and all its members.

Sometimes a woman miscarries before the fetus is formed, and sometimes she miscarries after it has formed. As Allah says: then from a little lump of flesh, some formed and some unformed, meaning, as you see. That We may make (it) clear to you. And We cause whom We will to remain in the wombs for an appointed term, meaning that sometimes the fetus remains in the womb and is not miscarried.

Mujahid said about the ayah, "(some formed and some unformed), This means the miscarried fetus, formed or unformed. When forty days have passed of it being a lump of flesh, then Allah sends an angel to it who breathes the soul into it and forms it as Allah wills, handsome or ugly, male or female.

He then writes its provision, its allotted length of life, and whether it is to be one of the blessed or the wretched."

गर्भ में नुत्फ़ा और भ्रूण का विकास: अल्लाह कहते हैं: फिर थक्का, फिर छोटे मांस के टुकड़े से। यदि नुत्फ़ा स्त्री के गर्भ में स्थापित हो जाता है, तो यह चालीस दिनों तक इसी रूप में रहता है, फिर इसमें और पदार्थ जुड़ता है और यह लाल थक्के में बदल जाता है, अल्लाह की अनुमति से, और यह चालीस दिनों तक इसी रूप में रहता है। फिर यह बदलता है और मांस के टुकड़े में बदल जाता है, जैसे बिना आकार और रूप का मांस का टुकड़ा। फिर यह आकार लेने लगता है, सिर, हाथ, छाती, पेट, जांघें, पैर, पाँव और उसके सभी अंग विकसित होने लगते हैं।

कभी-कभी स्त्री गर्भपात कर देती है जब भ्रूण अभी पूरी तरह से विकसित नहीं हुआ होता, और कभी-कभी जब यह बन चुका होता है। जैसा कि अल्लाह कहते हैं: फिर छोटे मांस के टुकड़े से — कुछ बने हुए और कुछ न बने हुए, अर्थात जैसा तुम देखते हो। ताकि हम तुम्हारे लिए स्पष्ट कर सकें। और हम जिसे चाहें, उसे गर्भ में एक निश्चित अवधि तक रख देते हैं, अर्थात कभी-कभी भ्रूण गर्भ में रहता है और गर्भपात नहीं होता।

मुजाहिद ने इस आयत के बारे में कहा, "(कुछ बने हुए और कुछ न बने हुए) का अर्थ है गर्भपात किया गया भ्रूण, चाहे वह बना हुआ हो या न बना हुआ।" जब यह मांस के टुकड़े के रूप में चालीस दिन पूरे कर लेता है, तो अल्लाह उसके पास एक फरिश्ता भेजते हैं, जो उसमें रूह फूँकता है और जैसा अल्लाह चाहें, उसे आकार देता है, सुंदर या बदसूरत, पुरुष या महिला।

फिर वह उसकी रोज़ी, उसका जीवनकाल और यह तय करता है कि वह खुशहाल होगा या दुखी।

**TAFSIR JALALAYN**

O mankind, in other words, [O] people of Mecca, if you are in doubt about the Resurrection, then lo! [consider that] We have created you, that is, [We have created] your origin — Adam — from dust then, We created his progeny, from a drop, a sperm-drop, then from a clot, congealed blood, then from a [little] lump of flesh (mudgha), a piece of flesh, the size of what one would [be able to] chew (māyumdagh), partly formed, shaped, complete in form, and partly unformed, that is, uncomplete in form, that We may make clear to you, the perfect nature of Our power, that you might [then] infer from this initial act of creation, the [reality of its future] restoration. And We establish (nuqirru, marks a new grammatically independent] sentence) in the wombs whatever We will for a specified time, that is, until the time for it to come out, then We bring you forth, from the bellies of your mothers, as infants, and then, We extend your life, that you may come of age (ashuddakum), that is to say, [your] prime and strength, which is [that age] between thirty and forty years.

## तफ़्सीर जलालैन

हे मानव जाति, अर्थात मक्का के लोग, यदि तुम पुनरुत्थान के बारे में संदेह में हो, तो देखो! [सोचो कि] हमने तुम्हें बनाया, अर्थात, हमने तुम्हारी उत्पत्ति — आदम को मिट्टी से बनाया। फिर हमने उसके वंशज को बनाया, एक बूँद से, वीर्य की बूँद से, फिर थक्का (जमाव वाला रक्त) से, फिर मांस के छोटे टुकड़े (मुद्ग़ा) से, मांस का एक टुकड़ा, जितना कोई चबास के (मायूमुद्ग़ा), आंशिक रूप से निर्मित, आकारयुक्त, पूर्ण रूप में, और आंशिक रूप से अविकसित, अर्थात रूप में अधूरा, ताकि हम तुम्हारे लिए अपनी शक्ति की पूर्ण प्रकृति स्पष्ट कर सकें, ताकि तुम इस प्रारंभिक सृष्टि के कार्य से [भविष्य के] पुनरुत्थान की वास्तविकता का अनुमान लगा सको। और हम गर्भ में जिसे चाहें स्थापित करते हैं (नुक़िर्रु, एक नई व्याकरणिक स्वतंत्र वाक्य को चिन्हित करता है) एक निर्दिष्ट समय तक, अर्थात जब तक उसका निकलने का समय न आ जाए। फिर हम तुम्हें तुम्हारी माताओं के पेट से बाहर लाते हैं, शिशु के रूप में। और फिर हम तुम्हारा जीवन बढ़ाते हैं, ताकि तुम परिपक्व हो सको (अशुद्धकुम), अर्थात तुम्हारी जवानी और शक्ति तक पहुँचो, जो उम्र तीस से चालीस वर्ष के बीच होती है।

And there are some of you who are taken away, by death, before coming of age, and there are some of you who are relegated to the most abject time of life, its most despicable [state] of decrepitude and senility, so that after [having had] some knowledge, he no longer knows anything — ‘Ikrima said, ‘Whoever recites the Qur’ān, such a state will not befall him’.

And you see the earth torpid, barren, yet when We send down water upon it, it stirs, it moves, and swells, it rises and grows, and grows [plants of] (anbatat min, min is extra) every delightful, fair, kind, species.

और तुम में से कुछ को मृत्यु द्वारा परिपक्व होने से पहले ही ले लिया जाता है, और तुम में से कुछ को जीवन के सबसे नीच और तुच्छ समय तक पहुँचाया जाता है, उसकी सबसे घृणित अवस्था, बुढ़ापे और दुर्बलता तक, ताकि कुछ ज्ञान होने के बाद वह और कुछ न जान सके। 'इक्रिमा ने कहा, "जो कोई कुरआन पढ़ता है, ऐसी अवस्था उस पर नहीं आएगी।"

और तुम देखो कि पृथ्वी सुस्त, बंजर है, फिर जब हम उस पर पानी उतारते हैं, तो वह हलचल करती है, फूलती है, उठती है और बढ़ती है, और हर प्रकार के आनंददायक, सुंदर, प्रकार के पौधे (अन्बतत मिन, मिन अतिरिक्त है) उगते और बढ़ते हैं।

# EMBRYOLOGY: SENSE OF HEARING AND SIGHT

**BOOK REFERENCE (SCIENTIFIC FACT / MIRACLE)**

The Qur'an and Modern Science: Compatible or Incompatible? Page 60

**QUOTED AAYAA AND EXPLANATION OFFERED**

The first sense to develop in a developing human embryo is hearing. The foetus can hear sounds after the 24th week. Subsequently, the sense of sight is developed and by the 28$^{th}$week, the retina becomes sensitive to light. The Qur'an explains it thus:

*"And He gave you (the faculties of) hearing and sight and feeling (and understanding)."* **[Al-Qur'an 32:9]**

*"Verily We created man from a drop of mingled sperm, in order to try him: so We gave him (the gifts), of Hearing and Sight."* **[Al-Qur'an 76:2]**

*"It is He Who has created for you (the faculties of) hearing, sight, feeling and understanding: little thanks it is ye give!"* **[Al-Qur'an 23:78]**

In all these verses the sense of hearing is mentioned before that of sight. Thus, the Qur'anic description matches perfectly with the discoveries in modern embryology.

# भ्रूणविज्ञान: सुनने और देखने की क्षमता

**<u>पुस्तक संदर्भ (वैज्ञानिक तथ्य / चमत्कार</u>**)

कुरआन और आधुनिक विज्ञान अनुकूल या असंगत? पृष्ठ 60

**<u>उद्धृत आयत और दी गई व्याख्या</u>**

विकसित हो रहे मानव भ्रूण में सबसे पहले सुनने की क्षमता विकसित होती है। भ्रूण 24वें सप्ताह के बाद ध्वनियों को सुन सकता है। उसके बाद दृष्टि का विकास होता है और 28वें सप्ताह तक रेटिना (आंख की परत) प्रकाश के प्रति संवेदनशील हो जाती है। कुरआन इसे इस प्रकार समझाता है:

*"और उसने तुम्हें सुनने और देखने और महसूस करने (और समझने) की क्षमता दी।"* [**अल-कुरआन 32:9]**

*"निश्चित ही हमने मनुष्य को मिलाए हुए शुक्राणु की बूंद से पैदा किया, ताकि उसे आज़माएँ; और हमने उसे सुनने और देखने की क्षमता दी।"* **[अल-कुरआन 76:2]**

*"वही है जिसने तुम्हारे लिए सुनने, देखने, महसूस करने और समझने की क्षमता बनाई; फिर भी तुम बहुत कम शुक्रिया अदा करते हो।"* **[अल-कुरआन 23:78]**

इन सभी आयतों में सुनने की क्षमता को देखने की क्षमता से पहले बताया गया है। इस प्रकार, कुरआनी वर्णन आधुनिक भ्रूणविज्ञान की खोजों के बिल्कुल अनुरूप है।

**ENGLISH TRANSLATION WILLIAM PICKTHALL**

**Q32:9** *"Then He fashioned him and breathed into him of His Spirit; and appointed for you hearing and sight and hearts. Small thanks give ye"*

**Q76:2** *"Lo! We create man from a drop of thickened fluid to test him; so We make him hearing, knowing"*

**Q23:78** *"He it is Who hath created for you ears and eyes and hearts. Small thanks give ye!"*

**ENGLISH TRANSLATION SAHIH INTERNATIONAL**

**Q32:9** *"Then He proportioned him and breathed into him from His [created] soul and made for you hearing and vision and hearts; little are you grateful"*

**Q76:2** *"Indeed, We created man from a sperm-drop mixture that We may try him; and We made him hearing and seeing"*

**Q23:78** *"And it is He who produced for you hearing and vision and hearts; little are you grateful"*

**TAFSIR IBN KATHIR**

**Q32:9** Then He fashioned him in due proportion, means, when He created Adam from clay, He created him and gave him shape and made him upright. and breathed into him the soul; and He gave you hearing, sight and the sense of deduction.

## हिंदी अनुवाद फ़ारूक़ ख़ान और नदवी

**Q32:9** *"फिर उसे ठीक-ठीक किया और उसमें अपनी रूह (आत्मा) फूँकी। और तुम्हें कान और आँखें और दिल दिए। तुम आभारी थोड़े ही होते हो"*

**Q76:2** *"हमने मनुष्य को एक मिश्रित वीर्य से पैदा किया, उसे उलटते-पलटते रहे, फिर हमने उसे सुनने और देखने वाला बना दिया"*

**Q23:78** *"और वही है जिसने तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल बनाए। तुम कृतज्ञता थोड़े ही दिखाते हो!"*

## उर्दू अनुवाद फ़ारूक़ ख़ान और नदवी

**Q32:9** *"फिर उस (के पुतले) को दुरुस्त किया और उसमें अपनी तरफ से रुह फूँकी और तुम लोगों के (सुनने के) लिए कान और (देखने के लिए) आँखें और (समझने के लिए) दिल बनाए (इस पर भी) तुम लोग बहुत कम शुक्र करते हो"*

**Q76:2** *"हमने इन्सान को मख़लूत नुत्फे से पैदा किया कि उसे आज़माएँ तो हमने उसे सुनता देखता बनाया"*

**Q23:78** *"हालाँकि वही वह (मेहरबान खुदा) है जिसने तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल पैदा किए (मगर) तुम लोग हो ही बहुत कम शुक्र करने वाले"*

## तफ़्सीर इब्न कसीर

**Q32:9** फिर उसने उसे उचित रूप दिया अर्थात जब अल्लाह ने आदम को मिट्टी से पैदा किया, तो उसे गढ़ा, उसे आकार दिया और सीधा खड़ा होने योग्य बनाया। और उसमें अपनी रूह फूंकी — और उसने तुम्हें सुनने, देखने और समझने (विवेक) की क्षमता दी।

**Q76:2** Verily, We have created man from Nutfah Amshaj, meaning, mixed. The words Mashaj and Mashij mean something that is mixed together. Ibn `Abbas said concerning Allah's statement, (from Nutfah Amshaj,) “This means the fluid of the man and the fluid of the woman when they meet and mix." Then man changes after this from stage to stage, condition to condition and color to color. Ikrimah, Mujahid, Al-Hasan and Ar-Rabi` bin Anas all made statements similar to this. They said, “Amshaj is the mixing of the man's fluid with the woman's fluid." Then Allah says, so, We made him hearer and seer. meaning, `We gave him the faculties of hearing and sight so that he would be able to use them for obedience and disobedience.

**Q23:78** It is He Who has created for you hearing, eyes, and hearts. Allah mentions His blessings to His servants, in that He has given them hearing, sight and understanding through which they come to know things and draw lessons from them, the signs which attest to the Oneness of Allah and indicate that He is the One Who does what He wills and chooses what He wants.

**Q76:2** निश्चय ही हमने मनुष्य को 'नुत्फ़ा अमशाज' से पैदा किया अर्थात मिले-जुले द्रव से। मशज और मशीज ऐसे शब्द हैं जिनका अर्थ होता है—आपस में मिला हुआ। इब्न अब्बास (रज़ि.) ने अल्लाह के इस कथन "नुत्फ़ा अमशाज" के बारे में कहा: इससे तात्पर्य पुरुष के द्रव और स्त्री के द्रव से है, जब वे आपस में मिलते हैं। इसके बाद मनुष्य एक अवस्था से दूसरी अवस्था में, एक स्थिति से दूसरी स्थिति में और एक रंग से दूसरे रंग में परिवर्तित होता रहता है। इक्रिमा, मुजाहिद, अल-हसन और अर-रबी' बिन अनस ने भी इसी प्रकार कहा। उन्होंने कहा: अमशाज का अर्थ है—पुरुष के द्रव का स्त्री के द्रव के साथ मिश्रण। फिर अल्लाह फ़रमाता है: "तो हमने उसे सुनने और देखने वाला बनाया", अर्थात हमने उसे श्रवण और दृष्टि की शक्तियाँ दीं, ताकि वह इनके माध्यम से आज्ञाकारिता और अवज्ञा—दोनों को समझ सके।

**Q23:78** और वही है जिसने तुम्हारे लिए सुनने, देखने और दिल (समझ) पैदा किए। यहाँ अल्लाह अपने बंदों पर अपनी नेमतों का उल्लेख करता है कि उसने उन्हें सुनने, देखने और समझने की क्षमता दी, जिनके माध्यम से वे चीज़ों को पहचानते हैं, उनसे सबक़ लेते हैं, और वे निशानियाँ देखते हैं जो अल्लाह की एकता की गवाही देती हैं और यह दर्शाती हैं कि वही है जो जो चाहता है करता है और जिसे चाहता है चुनता है।

**TAFSIR JALALAYN**

**Q32:9** then He proportioned him, that is to say, He created Adam, and breathed into him of His spirit, in other words, He made him a living sensory being after having been an inanimate thing. And He made for you, in other words, for [you] his descendants, hearing, meaning, ears, and sight and hearts. Little thanks do you give (mā here is extra, emphasising the 'littleness' [of the thanks]).

**Q76:2** Verily We created man, the species, from a drop of mixed fluid, [from] a mixture, that is from the [seminal] fluid of the man and the [ovarian] fluid of the woman that have mixed and blended, so that We may test him, trying him with the moral obligations [of religion] (nabtalīhi is either a new sentence ['We will test him'], or an implied circumstantial qualifier, meaning 'intending to test him when he is ready'). So, We made him, for that [very] reason, hearing, seeing.

**Q23:78** And He it is Who made, created, for you hearing, meaning, ears, and eyes and hearts. Little thanks do you show (qalīlanmā: mā emphasises the paucity [of the thanks]).

**Q32:9** फिर उसने उसे संतुलित रूप दिया, अर्थात उसने आदम को पैदा किया और उसमें अपनी रूह फूंकी। दूसरे शब्दों में, जो पहले निर्जीव था, उसे जीवित और संवेदनशील प्राणी बना दिया। और उसने तुम्हारे लिए, अर्थात आदम की संतानों के लिए, सुनने की शक्ति (अर्थात कान), देखने की शक्ति और दिल (अर्थात समझ और विवेक) बनाए। तुम बहुत ही कम शुक्रिया अदा करते हो। यहाँ "मा" शब्द अतिरिक्त है, जो शुक्रिया की कमी को विशेष रूप से दर्शाता है।

**Q76:2** निश्चय ही हमने मनुष्य जाति को मिले-जुले नुत्फ़े से पैदा किया, अर्थात मिश्रित द्रव से — यानी पुरुष के वीर्य और स्त्री के द्रव के आपस में मिल जाने से। ताकि हम उसकी परीक्षा लें, अर्थात उसे धार्मिक और नैतिक दायित्वों के माध्यम से परखें। "नब्तलीहि" या तो एक नया वाक्य है ("हम उसकी परीक्षा लेंगे"), या यह एक निहित उद्देश्य को दर्शाता है अर्थात जब वह इसके योग्य हो जाएगा, तब उसकी परीक्षा ली जाएगी। तो इसी उद्देश्य से हमने उसे सुनने और देखने की शक्ति दी।

**Q23:78** और वही है जिसने तुम्हारे लिए सुनने की शक्ति, अर्थात कान और आँखें तथा दिल (समझ और बुद्धि) पैदा किए। तुम बहुत ही कम कृतज्ञता दिखाते हो। यहाँ "क़लीलन मा" में "मा" शब्द शुक्रिया की अत्यंत कमी को विशेष रूप से उभारने के लिए आया है।

## PRESENT SCIENTIFIC KNOWLEDGE

The heart begins to beat as early as the third week of development, and the sense of hearing develops before the retina becomes sensitive to light. But all these organs continue to mature over time. At birth a child's vision remains blurred. The capacity for understanding develops only after birth and continues to mature over many years.

**Cardio-centrism:** In ancient times, heart was thought to be site of contemplation and thoughts. In poetry heart is still used as an emotional brain.

इइइइइइइ इइइइइइइइइ इइइ

विकास के तीसरे ही सप्ताह से हृदय धड़कना शुरू कर देता है, और सुनने की क्षमता, रेटिना के प्रकाश के प्रति संवेदनशील होने से पहले विकसित हो जाती है। किंतु ये सभी अंग समय के साथ धीरे-धीरे परिपक्व होते रहते हैं। जन्म के समय बच्चे की दृष्टि धुंधली होती है। समझने की क्षमता जन्म के बाद ही विकसित होती है और कई वर्षों तक परिपक्व होती रहती है।

## हृदय-केंद्रवाद:

प्राचीन काल में हृदय को विचार, चिंतन और समझ का केंद्र माना जाता था। काव्य में आज भी हृदय को भावनाओं के मस्तिष्क के रूप में व्यक्त किया जाता है।

234

# GENERAL SCIENCE: FINGERPRINTS

**BOOK REFERENCE (SCIENTIFIC FACT / MIRACLE)**

The Qur'an and Modern Science: Compatible or Incompatible? Page 62

**QUOTED AAYAA AND EXPLANATION OFFERED**

In 1880, fingerprinting became the scientific method of identification, after research done by Sir Francis Golt.

*"Does man think that We cannot assemble his bones? Nay, We are able to put together in perfect order the very tips of his fingers."***[Al-Qur'an 75:3-4]**

The Qur'an, while speaking about determination of the identity of the individual, speak specifically about fingertips.

**ENGLISH TRANSLATION WILLIAM PICKTHALL**

**Q75:3-4***"Thinketh man that We shall not assemble his bones? Yea, verily. We are Able to restore his very fingers"*

**ENGLISH TRANSLATION SAHIH INTERNATIONAL**

**Q75:3-4***"Does man think that We will not assemble his bones? Yes. [We are] Able [even] to proportion his fingertips"*

# फिंगरप्रिंट्स: सामान्य विज्ञान

**<u>पुस्तक संदर्भ (वैज्ञानिक तथ्य / चमत्कार)</u>**

**क़ुरआन और आधुनिक विज्ञान अनुकूल या असंगत?** पृष्ठ 62

**<u>उद्धृत आयत और दी गई व्याख्या</u>**

1880 में, फिंगरप्रिंटिंग वैज्ञानिक पहचान की विधि बन गई, यह शोध सर फ़्रांसिस गॉल्ट द्वारा की गई थी।

*"क्या मनुष्य सोचता है कि हम उसकी हड्डियों को इकट्ठा नहीं कर सकते? नहीं, हम उसके अंगुलियों की नोक तक को भी पूरी तरह व्यवस्थित रूप से जोड़ सकते हैं।"* **[अल-क़ुरआन 75:3-4]**

क़ुरआन, जब किसी व्यक्ति की पहचान की बात करता है, तो विशेष रूप से अंगुलियों की नोक का उल्लेख करता है।

**<u>हिंदी अनुवाद फ़ारूक़ ख़ान और नदवी</u>**

**Q75:3-4** *"क्या मनुष्य यह समझता है कि हम कदापि उसकी हड्डियों को एकत्र न करेंगे? क्यों नहीं, हम उसकी पोरों को ठीक-ठाक करने की सामर्थ्य रखते हैं"*

**<u>उर्दू अनुवाद फ़ारूक़ ख़ान और नदवी</u>**

**Q75:3-4** *"क्या इन्सान ये ख़्याल करता है (कि हम उसकी हड्डियों को बोसीदा होने के बाद) जमा न करेंगे? हाँ (ज़रूर करेंगे) हम इस पर क़ादिर हैं कि हम उसकी पोर-पोर दुरूस्त करें"*

**TAFSIR IBN KATHIR**

Does man think that We shall not assemble his bones? meaning, `on the Day of Judgement does he think that We are not able to return his bones and gather them from their various places. Yes, We are able to put together in perfect order the tips of his fingers. meaning, `does man think that We will not gather his bones Surely, We will gather them and We are quite able to put together his fingertips.

This means Our power is suitable to gather (and recreate) them, and if We wished We could surely resurrect him with more than what he originally had. We could make his Banan, which are the tips of his fingers, all equal (in length).'

**TAFSIR JALALAYN**

Does man, that is, [does] the disbeliever, suppose that We shall not assemble his bones?, for the raising [from the graves] and [for] the bringing back to life. Yes, indeed!, We shall assemble them. We are able, in addition to assembling them, to reshape [even] his fingers, that is to say, to restore their bones just as they had been, despite their smallness: so how much more so [are We able to restore] the larger ones!

## तफ़्सीर इब्न कसीर

क्या मनुष्य यह सोचता है कि हम उसकी हड्डियों को इकट्ठा नहीं करेंगे?" अर्थात, क़यामत के दिन क्या वह सोचता है कि हम उसकी हड्डियों को उनके अलग-अलग स्थानों से इकट्ठा नहीं कर पाएंगे? हाँ, हम पूरी क्षमता रखते हैं कि उसकी उंगलियों की नोकों तक को पूरी तरह से व्यवस्थित कर दें।

इसका अर्थ यह है कि हमारी शक्ति इतनी पूर्ण है कि हम उन्हें इकट्ठा कर (और पुनः सृजित कर) सकते हैं, और यदि हम चाहें तो उसे उसकी मूल सृष्टि से भी अधिक रूप में पुनर्जीवित कर सकते हैं। हम उसकी उंगलियों की नोकें तक को भी सभी बराबर लंबाई में बना सकते हैं।

## तफ़्सीर जलालैन

क्या मनुष्य, अर्थात काफ़िर, यह सोचता है कि हम उसकी हड्डियों को इकट्ठा नहीं करेंगे?" यह पुनरुत्थान (कब्र से उठाने) और पुनर्जीवन के लिए है। हाँ, निश्चित ही! हम उन्हें इकट्ठा करेंगे। हमें केवल उन्हें इकट्ठा करना ही नहीं आता, बल्कि हम उसकी उंगलियों को भी पुनः रूप दे सकते हैं, अर्थात उनकी हड्डियों को वैसा ही पुनर्स्थापित कर सकते हैं जैसे वे पहले थीं, भले ही वे बहुत छोटी हों। तो बड़ी हड्डियों को पुनर्स्थापित करना तो और भी आसान है!

# PAIN RECEPTORS IN THE SKIN

**BOOK REFERENCE (SCIENTIFIC FACT / MIRACLE)**

The Qur'an and Modern Science: Compatible or Incompatible? Page 63-64

**QUOTED AAYAA AND EXPLANATION OFFERED**

It was thought that the sense of feeling and pain was dependent only on the brain. Recent discoveries however prove that there are pain receptors present in the skin, without which a person would not be able to feel pain. The Qur'an gives a clear indication of the existence of pain receptors in the following verse:

*"Those who reject our signs, We shall soon cast into the Fire; as often as their skins are roasted through, We shall change them for fresh skins, that they may taste the Penalty for Allah is Exalted in Power, Wise."* **[Al-Qur'an 4:56]**

**ENGLISH TRANSLATION WILLIAM PICKTHALL**

**Q4:56***"Lo! Those who disbelieve Our revelations, We shall expose them to the Fire. As often as their skins are consumed We shall exchange them for fresh skins that they may taste the torment. Lo! Allah is ever Mighty, Wise"*

# दर्द के संवेदक

**<u>पुस्तक संदर्भ (वैज्ञानिक तथ्य / चमत्कार)</u>**

क़ुरआन और आधुनिक विज्ञान अनुकूल या असंगत? पृष्ठ 63–64

**<u>उद्धृत आयत और दी गई व्याख्या</u>**

पहले यह माना जाता था कि संवेदना और दर्द का अनुभव केवल मस्तिष्क पर निर्भर करता है। किंतु हाल की वैज्ञानिक खोजों से यह सिद्ध हुआ है कि त्वचा में दर्द के संवेदक मौजूद होते हैं, जिनके बिना कोई व्यक्ति दर्द महसूस नहीं कर सकता। क़ुरआन निम्नलिखित आयत में दर्द के इन संवेदकों के अस्तित्व की ओर स्पष्ट संकेत देता है:

*"जो लोग हमारी आयतों का इंकार करते हैं, हम उन्हें शीघ्र ही आग में डालेंगे। जब-जब उनकी खालें जलकर भस्म हो जाएँगी, हम उनके स्थान पर नई खालें बदल देंगे, ताकि वे यातना का स्वाद चखें। निश्चय ही अल्लाह अत्यंत प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।"* [**अल-क़ुरआन 4:56]**

**<u>हिंदी अनुवाद फ़ारूक़ ख़ान और नदवी</u>**

**Q4:56** *"जिन लोगों ने हमारी आयतों का इनकार किया, उन्हें हम जल्द ही आग में झोंकेंगे। जब भी उनकी खालें पक जाएँगी, तो हम उन्हें दूसरी खालों में बदल दिया करेंगे, ताकि वे यातना का मज़ा चखते ही रहें। निस्संदेह अल्लाह प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।"*

**Q4:56***"Indeed, those who disbelieve in Our verses - We will drive them into a Fire. Every time their skins are roasted through We will replace them with other skins so they may taste the punishment. Indeed, Allah is ever Exalted in Might and Wise"*

**TAFSIR IBN KATHIR**

As often as their skins are roasted through, We shall change them for other skins that they may taste the punishment.Al-Amash said that Ibn Umar said, "When their skin are burned, they will be given another skin in replacement, and this skin will be as white as paper."

**TAFSIR JALALAYN**

Surely those who disbelieve in Our signs, We shall expose them, We shall admit them, to a Fire, wherein they shall burn; as often as their skins are consumed, burnt, We shall replace them with other skins, restoring them to their initial unburnt state, that they may taste the chastisement, that they may suffer its severity. Surely God is ever Mighty, nothing being beyond His power, Wise, in His creation.

## उर्दू अनुवाद फ़ारूक़ ख़ान और नदवी

**Q4:56** *"(याद रहे) कि जिन लोगों ने हमारी आयतों से इन्कार किया उन्हें ज़रूर अनक़रीब जहन्नुम की आग में झोंक देंगे (और जब उनकी खालें जलकर) जल जाएँगी तो हम उनके लिए दूसरी खालें बदलकर पैदा कर देंगे ताकि वह अच्छी तरह अज़ाब का मज़ा चखें बेशक ख़ुदा हर चीज़ पर ग़ालिब और हिकमत वाला है।"*

## तफ़्सीर इब्न कसीर

"जब-जब उनकी खालें पूरी तरह जल जाएँगी, हम उनके स्थान पर दूसरी खालें बदल देंगे, ताकि वे यातना का स्वाद चखें।"

अल-अमश ने बयान किया कि इब्न उमर (रज़ि०) ने कहा: "जब उनकी खालें जल जाएँगी, तो उनके बदले उन्हें नई खाल दी जाएगी, और वह खाल काग़ज़ की तरह सफ़ेद होगी।"

## तफ़्सीर जलालैन

निश्चय ही जो लोग हमारी निशानियों का इंकार करते हैं, हम उन्हें आग में दाख़िल करेंगे, जिसमें वे जलते रहेंगे। जब-जब उनकी खालें पूरी तरह जलकर नष्ट हो जाएँगी, हम उनके स्थान पर दूसरी खालें बदल देंगे, उन्हें उनकी प्रारंभिक, अजली हुई अवस्था में लौटा देंगे, ताकि वे यातना का स्वाद चखें और उसकी तीव्रता को महसूस करें। निस्संदेह अल्लाह सर्वशक्तिमान है, उसकी शक्ति से कोई भी चीज़ बाहर नहीं, और वह अपनी सृष्टि में अत्यंत तत्वदर्शी है।

**OTHER REFERENCES IN ISLAMIC TEXT ON RELATED TOPIC**

**Jami al-Bayan, Volume 8, under the tafsir of Qur'an 4:56:** meaning of "We shall replace their skins with other skins" is that whenever the skins are completely burned and no longer feel pain, Allah will replace them with new skins so that the punishment and its sensation continue.

## इस्लामी धर्मग्रंथों में संबंधित विषय पर अन्य संदर्भ

**जामिअ अल-बयान (खंड 8) में, क़ुरआन 4:56** की तफ़सीर के अंतर्गत, इमाम तबरी बताते हैं कि "हम उनकी खालों को दूसरी खालों से बदल देंगे" का अर्थ यह है कि जब उनकी खालें पूरी तरह जल जाती हैं और दर्द महसूस करने में सक्षम नहीं रहतीं, तो अल्लाह उनके स्थान पर नई खालें बदल देता है, ताकि यातना और उसका एहसास लगातार बना रहे।

# EPILOGUE

The Arabic Qur'anic text has remained unchanged over the centuries. The older commentaries and explanations often reflect the worldview of their time, including elements of medieval cosmology and limited scientific understanding. Modern translations, by contrast, tend to employ clearer language and are shaped by contemporary knowledge, appearing more compatible with present-day science. This also raises an important question: should greater weight be given to modern reinterpretations, or to the understandings of early scholars who were closer to the original linguistic and historical context?

# उपसंहार

कुरआन का अरबी पाठ सदियों से अपरिवर्तित चला आ रहा है। प्राचीन टीकाएँ और व्याख्याएँ प्रायः अपने-अपने काल की विश्व-दृष्टि को प्रतिबिंबित करती थीं, जिनमें मध्ययुगीन ब्रह्मांडीय धारणाएँ और सीमित वैज्ञानिक समझ भी सम्मिलित थी। इसके विपरीत, आधुनिक अनुवाद सामान्यतः अधिक स्पष्ट भाषा का प्रयोग करते हैं और समकालीन ज्ञान से प्रभावित होते हैं, जिससे वे वर्तमान विज्ञान के साथ अधिक संगत प्रतीत होते हैं। यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न भी उठाता है कि अधिक महत्व किसे दिया जाना चाहिए: आधुनिक पुनर्व्याख्याओं को या उन प्रारंभिक विद्वानों की समझ को, जो मूल भाषिक और ऐतिहासिक संदर्भ के अधिक निकट थे।